1 शमूएल

एल्काना और उसका परिवार शीलो में आराधना करता है

1 एल्काना नामक एक व्यक्ति था। वह एप्रैम के पहाड़ी
प्रदेश के रामातैमसोपीम का निवासी था। एल्काना
सूप परिवार का था। एल्काना यरोहाम का पुत्र था।
यरोहाम एलीहू का पुत्र था। एलीहू तोहू का पुत्र था और
तोहू सूप का पुत्र था, जो एप्रैम के परिवार समूह से था।
2एल्काना की दो पत्नियाँ थीं। एक का नाम हन्ना था
और दूसरी का नाम पनिन्ना था। पनिन्ना के बच्चे थे,
किन्तु हन्ना के कोई बच्चा नहीं था।
3एल्काना हर वर्ष अपने नगर रामातैमसोपीम को
छोड़ देता था और शीलो नगर जाता था। एल्काना
सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना शीलो में करता था
और वहाँ यहोवा को बलि भेंट करता था। शीलो वह
स्थान था, जहाँ होप्नी और पीनहास यहोवा के याजक
के रूप में सेवा करते थे। होप्नी और पीनहास एली के
पुत्र थे। 4जब कभी एल्काना अपनी बलि भेंट करता
था, वह भेंट का एक अंश अपनी पत्नी पनिन्ना को
देता था। एल्काना भेंट का अंश पनिन्ना के बच्चों को
भी देता था। 5एल्काना भेंट का एक बराबर का अंश
हन्ना को भी सदा दिया करता था। एल्काना यह तब भी
करता रहा जब यहोवा ने हन्ना को कोई सन्तान नहीं
दी थी। एल्काना यह इसलिये करता था कि हन्ना
उसकी वह पत्नी थी जिससे वह सच्चा प्रेम करता था।

पनिन्ना हन्ना को परेशान करती है

6पनिन्ना हन्ना को सदा खिन्नता और परेशानी का
अनुभव कराती थी। पनिन्ना यह इसलिये करती थी
क्योंकि हन्ना कोई बच्चा पैदा नहीं कर सकती थी। 7हर
वर्ष जब उनका परिवार शीलो में यहोवा के आराधनालय
में जाता, पनिन्ना, हन्ना को परेशानी में डाल देती थी।
एक दिन जब एल्काना बलि भेंट अर्पित कर रहा था।
हन्ना परेशानी का अनुभव करने लगी और रोने लगी।
हन्ना ने कुछ भी खाने से इन्कार कर दिया। 8उसके
पति एल्काना ने उससे कहा, "हन्ना, तुम रो क्यों रही
हो? तुम खाना क्यों नहीं खाती? तुम दुःखी क्यों हो? मैं,
तुम्हारा पति, तुम्हारा हूँ। तुम्हें सोचना चाहिए कि मैं
तुम्हारे लिए तुम्हारे दस पुत्रों से अच्छा हूँ।"

हन्ना की प्रार्थना

9खाने और पीने के बाद हन्ना चुपचाप उठी और
यहोवा से प्रार्थना करने गई। यहोवा के पवित्र आराधनालय
के द्वार के निकट कुर्सी पर याजक एली बैठा था।
10हन्ना बहुत दुःखी थी। वह बहुत रोई जब उसने यहोवा
से प्रार्थना की।
11उसने परमेश्वर से विशेष प्रतिज्ञा की। उसने कहा,
"सर्वशक्तिमान यहोवा, देखो मैं कितनी अधिक दुःखी
हूँ। मुझे याद रखो! मुझे भूलो नहीं। यदि तुम मुझे
एक पुत्र दोगे तो मैं पूरे जीवन के लिये उसे तुमको
अर्पित कर दूँगी। यह नाजीर पुत्र होगा: वह दाखमधु या
तेज मदिरा नहीं पीएगा और कोई उसके बाल नहीं
काटेगा।"*
12हन्ना ने बहुत देर तक प्रार्थना की। जिस समय
हन्ना प्रार्थना कर रही थी, एली ने उसका मुख देखा।
13हन्नाअपने हृदय में प्रार्थना कर रही थी। उसके होंठ
हिल रहे थे, किन्तु कोई आवाज नहीं निकल रही थी।
14एली ने समझा कि हन्ना दाखमधु से मत्त है। एली ने
हन्ना से कहा, "तुम्हारे पास पीने को अत्याधिक था!
अब समय है कि दाखमधु को दूर करो।"

15हन्ना ने उत्तर दिया, "मैंने दाखमधु या दाखरस
नहीं पिया है। मैं बहुत अधिक परेशान हूँ। मैं यहोवा से
प्रार्थना करके अपनी समस्याओं का निवेदन कर रही
थी। 16मत सोचो कि मैं बुरी स्त्री हूँ। मैं इतनी देर तक
इसलिए प्रार्थना कर रही थी कि मुझे अनेक परेशानियाँ
हैं और मैं बहुत दुःखी हूँ।"
17एली ने उत्तर दिया, "शान्तिपूर्वक जाओ। इस्राएल
का परमेश्वर तुम्हें वह दे, जो तुमने मांगा है।"
18हन्ना ने कहा, "मुझे आशा है कि आप मुझसे
प्रसन्न हैं।" तब हन्ना गई और उसने कुछ खाया। वह
अब दुःखी नहीं थी।
19दूसरे दिन सवेरे एल्काना का परिवार उठा। उन्होंने
परमेश्वर की उपासना की और वे अपने घर रामा को
लौट गए।

और कोई ... काटेगा वे लोग जो अपने बाल न काटने और दाखमधु न पीने की प्रतिज्ञा कर 5ते थे, नाजीर कहे जाते थे। देखें गिनती 6:5 ये लोग अपना जीवन परमेश्वर को सौंपते थे।

शमूएल का जन्म

एल्काना ने अपनी पत्नी हन्ना के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया, यहोवा ने हन्ना की प्रार्थना को याद रखा। 20हन्ना गर्भवती हुई और उसे एक पुत्र हुआ। हन्ना ने उसका नाम शमूएल रखा। उसने कहा, "इसका नाम शमूएल है क्योंकि मैंने इसे यहोवा से माँगा है।"

21उस वर्ष एल्काना बलि–भेंट देने और परमेश्वर के सामने की गई प्रतिज्ञा को पूरा करने शीलो गया। वह अपने परिवार को अपने साथ ले गया। 22किन्तु हन्ना नहीं गई। उसने एल्काना से कहा, "जब लड़का ठोस भोजन करने योग्य हो जायेगा, तब मैं इसे शीलो ले जाऊँगी। तब मैं उसे यहोवा को दूँगी। वह एक नाज़ीर बनेगा और वह शीलो में रहेगा।"

23हन्ना के पति एल्काना ने उससे कहा, "वही करो जिसे तुम उत्तम समझती हो। तुम तब तक घर में रह सकती हो जब तक लड़का ठोस भोजन करने योग्य बड़ा नहीं हो जाता। यहोवा वही करे जो तुमने कहा है।" इसलिये हन्ना अपने बच्चे का पालन पोषण तब तक करने के लिये घर पर ही रह गई जब तक वह ठोस भोजन करने योग्य बड़ा नहीं हो जाता।

हन्ना शमूएल को शीलो में एली के पास ले जाती है

24जब लड़का ठोस भोजन करने योग्य बड़ा हो गया, तब हन्ना उसे शीलो में यहोवा के आराधनालय पर ले गई। हन्ना अपने साथ तीन वर्ष का एक बैल, बीस पौंड़ आटा और एक मशक दाखमधु भी ले गई।

25वे यहोवा के सामने गए। एल्काना ने यहोवा के लिए बलि के रूप में बैल को मारा जैसा वह प्राय: करता था तब हन्ना लड़के को एली के पास ले आई। 26हन्ना ने एली से कहा, "महोदय, क्षमा करें। मैं वही स्त्री हूँ जो यहोवा से प्रार्थना करते हुए आप के पास खड़ी थी। मैं वचन देती हूँ कि मैं सत्य कह रही हूँ। 27मैंने इस बच्चे के लिये प्रार्थना की थी। यहोवा ने मुझे यह बच्चा दिया 28और अब मैं इस बच्चे को यहोवा को दे रही हूँ। यह पूरे जीवन यहोवा का रहेगा।"

तब हन्ना ने बच्चे को वहीं छोड़ा और यहोवा की उपासना की।

हन्ना धन्यवाद देती है

2 हन्ना ने कहा: "यहोवा में, मेरा हृदय प्रसन्न है! मैं अपने परमेश्वर में शक्तिमती* अनुभव करती हूँ! मैं अपनी विजय से पूर्ण प्रसन्न हूँ! और अपने शत्रुओं की हँसी उड़ाई हूँ।

2यहोवा के सदृश कोई पवित्र परमेश्वर नहीं। तेरे अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं! परमेश्वर के अतिरिक्त कोई आश्रय शिला* नहीं।

3बन्द करो डीगों का हाँकना! घमण्ड भरी बातें न करो! क्यों? क्योंकि यहोवा परमेश्वर सब कुछ जानता है, परमेश्वर लोगों को राह दिखाता है और उनका न्याय करता है।

4शक्तिशाली योद्धाओं के धनुष टूटते हैं! और दुर्बल शक्तिशाली बनते हैं!

5जो लोग बीते समय में बहुत भोजन वाले थे, उन्हें अब भोजन पाने के लिये काम करना होगा। किन्तु जो बीते समय में भूखे थे, वे अब भोजन पाकर मोटे हो रहे हैं! जो स्त्री बच्चा उत्पन्न नहीं कर सकती थी अब सात बच्चों वाली है! किन्तु जो बहुत बच्चों वाली थी, दु:खी है क्योंकि उसके बच्चे चले गये।

6यहोवा लोगों को मृत्यु देता है, और वह उन्हें जीवित रहने देता है। यहोवा लोगों को मृत्युस्थल व अधोलोक को पहुँचाता है, और पुन: वह उन्हें जीवन देकर उठाता है।

7यहोवा लोगों को दीन बनाता है, और यहोवा ही लोगों को धनी बनाता है। यहोवा लोगों को नीचा करता है, और वह लोगों को ऊँचा उठाता है।

8यहोवा कंगालों को धूलि से उठाता है। यहोवा उनके दु:ख को दूर करता है। यहोवा कंगालों को राजाओं के साथ बिठाता है। यहोवा कंगालों को प्रतिष्ठित सिंहासन पर बिठाता है। पूरा जगत अपनी नींव तक यहोवा का है! यहोवा जगत को उन खम्भों पर टिकाया है!

9यहोवा अपने पवित्र लोगों की रक्षा करता है। वह उन्हें ठोकर खाकर गिरने से बचाता है। किन्तु पापी लोग नष्ट किये जाएंगे। वे घोर अंधेरे में गिरेंगे। उनकी शक्ति उन्हें विजय प्राप्त करने में सहायक नहीं होगी।

10यहोवा अपने शत्रुओं को नष्ट करता है। सर्वोच्च परमेश्वर लोगों के विरुद्ध गगन में गरजेगा। यहोवा सारी पृथ्वी का न्याय करेगा। यहोवा अपने राजा को शक्ति देगा। वह अपने अभीषिक्त राजा को शक्तिशाली बनायेगा।"

11एल्काना और उसका परिवार अपने घर रामा को गया। लड़का शीलो में रह गया और याजक एली के अधीन यहोवा की सेवा करता रहा।

एली के बुरे पुत्र

12एली के पुत्र बुरे व्यक्ति थे। वे यहोवा की परवाह नहीं करते थे। 13वे इसकी परवाह नहीं करते थे कि याजकों से लोगों के प्रति कैसे व्यवहार की आशा की

शक्तिमती "यहोवा की उपासना में मेरा सिंगा ऊँचा उठा है।" सिंगा शक्ति का प्रतीक है।

आश्रय शिला परमेश्वर के लिये एक नाम। यह बताता है कि वह किले या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

जाती है। याजकों को लोगों के लिये यह करना चाहिए:
जब कभी कोई व्यक्ति बलि-भेंट लाये, तो याजक को
एक बर्तन में माँस को उबालना चाहिये। याजक के
सेवक को अपने हाथ में विशेष काँटा जिसके तीन
नोंक हैं, लेकर आना चाहिए। 14याजक के सेवक को
काँटे को बर्तन या पतीले में डालना चाहिए। काँटे से जो
कुछ बर्तन के बाहर लाये वह माँस याजक का होगा।
यह याजकों द्वारा उन इस्राएलियों के लिये किया जाना
चाहिये जो शीलो में बलि-भेंट करने आयें।

15किन्तु एली के पुत्रों ने यह नहीं किया। चर्बी को वेदी
पर जलाये जाने के पहले ही उनके सेवक लोगों के पास
बलि-भेंट करते जाते थे। याजक के सेवक कहा करते
थे, "याजक को कुछ माँस भूनने के लिये दो। याजक
तुमसे उबला हुआ माँस नहीं लेंगे।"

16बलि-भेंट करने वाला व्यक्ति यह कह सकता था,
"पहले चर्बी जलाओ,* तब तुम जो चाहो ले सकते हो।"
यदि ऐसा होता तो याजक का सेवक उत्तर देता: "नहीं,
मुझे अभी माँस दो, यदि तुम मुझे यह नहीं देते हो तो मैं
इसे तुमसे ले ही लूँगा।"

17इस प्रकार, होप्नी और पीनहास यह दिखाते थे कि
वे यहोवा को भेंट की गई बलि के प्रति श्रद्धा नहीं रखते
थे। यह यहोवा के विरुद्ध बहुत बुरा पाप था! 18किन्तु
शमूएल यहोवा की सेवा करता था। शमूएल सन का
बना एक विशेष एपोद पहनता था। 19हर वर्ष शमूएल
की माँ एक छोटा चोंगा शमूएल के लिये बनाती थी।
वह हर वर्ष जब अपने पति के साथ बलि-भेंट करने
शीलो जाती थी तो वह छोटा चोंगा शमूएल के लिए ले
जाती थी।

20एली, एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद
देता था। एली ने कहा, "यहोवा तुम्हें हन्ना द्वारा सन्तान
देकर बदला दे। ये बच्चे उस लड़के का स्थान लेंगे
जिसके लिये हन्ना ने प्रार्थना की थी और यहोवा को
दिया था।" तब एल्काना और हन्ना घर लौटे, और
21यहोवा ने हन्ना पर दया की। उसके तीन पुत्र और दो
पुत्रियाँ हुई और लड़का शमूएल यहोवा के पास बड़ा
हुआ।

एली अपने पापी पुत्रों पर नियन्त्रण करने में असफल

22एली बहुत बूढ़ा था। वह बार-बार उन बुरे कामों के
बारे में सुनता था जो उसके पुत्र शीलो में सभी इस्राएलियों
के साथ कर रहे थे। एली ने यह भी सुना कि जो स्त्रियाँ
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करती थी, उनके
साथ वे सोते थे।

23एली ने अपने पुत्रों से कहा, "तुमने जो कुछ बुरा
किया है उसके बारे में लोगों ने यहाँ मुझे बताया है। तुम
लोग ये बुरे काम क्यों करते हो? 24पुत्रों, इन बुरे कामों
को मत करो। यहोवा के लोग तुम्हारे विषय में बुरी बाते
कह रहे हैं। 25यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के
विरुद्ध पाप करता है, तो परमेश्वर उसकी मध्यस्थता
कर सकता है। किन्तु यदि कोई व्यक्ति यहोवा के ही
विरुद्ध पाप करता है तो उस व्यक्ति की मध्यस्थता कौन
कर सकता है?"

किन्तु एली के पुत्रों ने एली की बात सुनने से इन्कार
कर दिया। इसलिए यहोवा ने एली के पुत्रों को मार
डालने का निश्चय किया।

26बालक शमूएल बढ़ता रहा। उसने परमेश्वर और
लोगों को प्रसन्न किया।

एली के परिवार के विषय में भंयकर भविष्यवाणी

27परमेश्वर का एक व्यक्ति एली के पास आया। उसने
कहा, "यहोवा यह बात कहता है, 'तुम्हारे पूर्वज फ़िरौन
के परिवार के गुलाम थे। किन्तु मैं तुम्हारे पूर्वजों के
सामने उस समय प्रकट हुआ। 28मैंने तुम्हारे परिवार
समूह को इस्राएल के सभी परिवार समूहों में से चुना।
मैंने तुम्हारे परिवार समूह को अपना याजक बनने के
लिये चुना। मैंने उन्हें अपनी वेदी पर बलि-भेंट करने
के लिये चुना। मैंने उन्हें सुगन्ध जलाने और एपोद
पहनने के लिये चुना। मैंने तुम्हारे परिवार समूह को
बलि-भेंट से वह माँस भी लेने दिया जो इस्राएल के लोग
मुझको चढ़ाते हैं। 29इसलिए तुम उन बलि-भेंटों और
अन्नबलियों का सम्मान क्यों नहीं करते। तुम अपने
पुत्रों को मुझसे अधिक सम्मान देते हो। तुम माँस के
उस सर्वोत्तम भाग से मोटे हुए हो जिसे इस्राएल के लोग
मेरे लिये लाते हैं।'

30"इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह वचन दिया था
कि तुम्हारे पिता का परिवार ही सदा उसकी सेवा
करेगा। किन्तु अब यहोवा यह कहता है, 'वैसा कभी
नहीं होगा! मैं उन लोगों का सम्मान करूँगा जो मेरा
सम्मान करेंगे। किन्तु उनका बुरा होगा जो मेरा सम्मान
करने से इन्कार करते हैं। 31वह समय आ रहा है जब
मैं तुम्हारे सारे वंशजों को नष्ट कर दूँगा। तुम्हारे
परिवार में कोई बूढ़ा होने के लिये नहीं बचेगा। 32इस्राएल
के लिये अच्छी चीजें होंगी, किन्तु तुम घर में बुरी
घटनाऐं होती देखोगे। तुम्हारे परिवार में कोई भी बूढ़ा
होने के लिये नहीं बचेगा। 33केवल एक व्यक्ति को मैं
अपनी वेदी पर याजक के रूप में सेवा के लिये बचाऊँगा।
वह बहुत अधिक बुढ़ापे तक रहेगा। वह तब तक
जीवित रहेगा जब तक उसकी आँखे और उसकी शक्ति
बची रहेगी। तुम्हारे शेष वंशज तलवार के घाट उतारे
जाएंगे। 34मैं तुम्हें एक संकेत दूँगा जिससे यह ज्ञात होगा

पहले चर्बी जलाओ चर्बी जानवर का वह भाग थी जो परमेश्वर का था। याजकों से आशा की जाती थी कि वे परमेश्वर की भेंट के रूप में उसे वेदी में जलायें।

कि ये बातें सच होंगी। तुम्हारे दोनों पुत्र होप्नी और
पीनहास एक ही दिन मरेंगे।35मैं अपने लिये एक
विश्वसनीय याजक ठहराऊँगा। वह याजक मेरी बात
मानेगा और जो मैं चाहता हूँ, करेगा। मैं इस याजक के
परिवार को शक्तिशाली बनाऊँगा। वह सदा मेरे अभिषिक्त
राजा के सामने सेवा करेगा। 36तब सभी लोग जो तुम्हारे
परिवार में बचे रहेंगे, आएंगे और इस याजक के आगे
झुकेंगे। ये लोग थोड़े धन या रोटी के टुकड़े के लिए
भीख मागेंगे। वे कहेंगे, "कृपया याजक का सेवा कार्य
हमें दे दो जिससे हम भोजन पा सकें।" ""

शमूएल को परमेश्वर का बुलावा

3 बालक शमूएल एली के अधीन यहोवा की सेवा
करता रहा। उन दिनों, यहोवा प्राय: लोगों से सीधे
बातें नहीं करता था। बहुत कम ही दर्शन हुआ करता
था।

2एली की दृष्टि इतनी कमजोर थी कि वह लगभग
अन्धा था। एक रात वह बिस्तर पर सोया हुआ था।
3शमूएल यहोवा के पवित्र आराधनालय में बिस्तर पर
सो रहा था। उस पवित्र आराधनालय में परमेश्वर का
पवित्र सन्दूक था। यहोवा का दीपक अब भी जल रहा
था। 4यहोवा ने शमूएल को बुलाया। शमूएल ने उत्तर
दिया, "मैं यहाँ उपस्थित हूँ।" 5शमूएल को लगा कि उसे
एली बुला रहा है। इसलिए शमूएल दौड़कर एली के
पास गया। शमूएल ने एली से कहा, "मैं यहाँ हूँ। आपने
मुझे बुलाया।"

किन्तु एली ने कहा, "मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। अपने
बिस्तर में जाओ।"

शमूएल अपने बिस्तर पर लौट गया। 6यहोवा ने फिर
बुलाया, "शमूएल!" शमूएल फिर दौड़कर एली के पास
गया। शमूएल ने कहा, "मैं यहाँ हूँ। आपने मुझे
बुलाया।"

एली ने कहा, "मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, अपने बिस्तर में
जाओ।"

7शमूएल अभी तक यहोवा को नहीं जानता था। यहोवा
ने अभी तक उससे सीधे बात नहीं की थी।

8यहोवा ने शमूएल को तीसरी बार बुलाया। शमूएल
फिर उठा और एली के पास गया। शमूएल ने कहा, "मैं
आ गया। आपने मुझे बुलाया।" तब एली ने समझा कि
यहोवा लड़के को बुला रहा है। 9एली ने शमूएल से
कहा, "बिस्तर में जाओ। यदि वह तुम्हें फिर बुलाता है
तो कहो, 'यहोवा बोल! मैं तेरा सेवक हूँ और सुन रहा
हूँ।'"

सो शमूएल बिस्तर में चला गया। 10यहोवा आया और
वहाँ खड़ा हो गया। उसने पहले की तरह बुलाया। उसने
कहा, "शमूएल, शमूएल!" शमूएल ने कहा, "बोल! मैं
तेरा सेवक हूँ और सुन रहा हूँ।"

11यहोवा ने शमूएल से कहा, " मैं शीघ्र ही इस्राएल में
कुछ करूँगा। जो लोग इसे सुनेंगे उनके कान झन्ना
उठेंगे। 12मैं वह सब कुछ करूँगा जो मैंने एली और
उसके परिवार के विरुद्ध करने को कहा है। मैं आरम्भ
से अन्त तक सब कुछ करूँगा। 13मैंने एली से कहा है
कि मैं उसके परिवार को सदा के लिये दण्ड दूँगा। मैं
यह इसलिए करूँगा कि एली जानता है कि उसके पुत्रों
ने परमेश्वर के विरुद्ध बुरा कहा है, और किया है,
और एली उन पर नियन्त्रण करने में असफल रहा है।
14यही कारण है कि मैंने एली के परिवार को शाप दिया
है कि बलि-भेंट और अन्नबलि उनके पापों को दूर
नहीं कर सकती।"

15शमूएल सवेरा होने तक बिस्तर में पड़ा रहा। वह
तड़के उठाऔर उसने यहोवा के मन्दिर के द्वार को
खोला। शमूएल अपने दर्शन की बात एली से कहने में
डरता था। 16किन्तु एली ने शमूएल से कहा, "मेरे पुत्र,
शमूएल!"

शमूएल ने उत्तर दिया, "हाँ, महोदय।"

17एली ने पूछा, "यहोवा ने तुमसे क्या कहा? उसे
मुझसे मत छिपाओ। परमेश्वर तुम्हें दण्ड देगा, यदि
परमेश्वर ने जो सन्देश तुमको दिया है उसमें से कुछ भी
छिपाओगे।" 18इसलिए शमूएल ने एली को वह हर एक
बात बताई। शमूएल ने एली से कुछ भी नहीं छिपाया।

एली ने कहा, "वह यहोवा है। उसे वैसा ही करने दो
जैसा उसे अच्छा लगता है।"

19शमूएल बड़ा होता रहा और यहोवा उसके साथ
रहा। यहोवा ने शमूएल के किसी सन्देश को असत्य
नहीं होने दिया। 20तब सारा इस्राएल, दान से लेकर
बेर्शबा तक, समझ गया कि शमूएल यहोवा का सच्चा
नबी है। 21शीलो में यहोवा शमूएल के सामने प्रकट
होता रहा। यहोवा ने शमूएल के आगे अपने आपको
वचन* के द्वारा प्रकट किया।

4 शमूएल के विषय में समाचार पूरे इस्राएल में फैल
गया। एली बहुत बूढ़ा हो गया था। उसके पुत्र
यहोवा के सामने बुरा काम करते रहे।

पलिश्तियों ने इस्राएलियों को हराया

उस समय, पलिश्ती इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने के
लिये तैयार हुए। इस्राएली पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने
गए। इस्राएलियों ने अपना डेरा एबेनेज़ेर में डाला। पलिश्तियों
ने अपना डेरा अपेक में डाला। 2पलिश्तियों ने इस्राएल
पर आक्रमण करने की तैयारी की। युद्ध आरम्भ हो

वचन कभी-कभी यहोवा के वचन का अर्थ परमेश्वर का संदेश भी होता है। किन्तु कभी-कभी उसका अर्थ यह भी होता है कि यह परमेश्वर का एक विशेष प्रकार या रूप होता है जिसे वह उस समय काम में लाता है जब वह अपने नबियों के साथ बात करता है।

गया। पलिश्तियों ने इस्राएलियों को हरा दिया। पलिश्तियों
ने इस्राएल की सेना के लगभग चार हजार सैनिकों को
मार डाला। 3इस्राएलियों के बाकी सैनिक अपने डेरे में
लौट गए। इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) ने पूछा, "यहोवा
ने पलिश्तियों को हमें क्यों पराजित करने दिया? हम
लोग शीलो से वाचा के सन्दूक को ले आयें। इस प्रकार,
परमेश्वर हम लोगों के साथ युद्ध में जायेगा। वह हमें
हमारे शत्रुओं से बचा देगा। "

4इसलिये लोगों ने व्यक्तियों को शीलो में भेजा। वे लोग
सर्वशक्तिमान यहोवा के वाचा के सन्दूक को ले आए।
सन्दूक के ऊपर करूब (स्वर्गदूत) हैं और वे उस
आसन की तरह है जिस पर यहोवा बैठता है। एली के
दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास सन्दूक के साथ आए।

5जब यहोवा के वाचा का सन्दूक डेरे के भीतर
आया, तो इस्राएलियों ने प्रचण्ड उद्घोष किया। उस
उद्घोष से धरती काँप उठी। 6पलिश्तियों ने इस्राएलियों
के उद्घोष को सुना। उन्होंने पूछा, "हिब्रू लोगों के डेरे
में ऐसा उद्घोष क्यों हैं?"

तब पलिश्तियों को ज्ञात हुआ कि इस्राएल के डेरे में
वाचा का सन्दूक आया है। 7पलिश्ती डर गए। पलिश्तियों
ने कहा, "परमेश्वर उनके डेरे में आ गया है! हम लोग
मुसीबत में हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। 8हमें चिन्ता
है! इन शक्तिशाली परमेश्वर से हमें कौन बचा सकता
है? ये वही परमेश्वर है जिसने मिस्रियों को वे बीमारियाँ
और महामारियाँ दी थी। 9पलिश्तियों साहस करो! वीर
पुरुषों की तरह लड़ो! बीते समय में हिब्रू लोग हमारे दास
थे। इसलिए वीरों की तरह लड़ो नहीं तो तुम उनके
दास हो जाओगे।"

10पलिश्ती वीरता से लड़े और उन्होंने इस्राएलियों को
हरा दिया। हर एक इस्राएली योद्धा अपने डेरे में भाग
गया। इस्राएल के लिये यह भयानक पराजय थी। तीस
हजार इस्राएली सैनिक मारे गए। 11पलिश्तियों ने उनसे
परमेश्वर का पवित्र सन्दूक छीन लिया और उन्होंने
एली के दोनों पुत्रों, होप्नी और पीनहास को मार डाला।

12उस दिन बिन्यामीन परिवार का एक व्यक्ति युद्ध से
भागा। उसने अपने शोक को प्रकट करने के लिये
अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और अपने सिर पर धूलि
डाल ली। 13जब यह व्यक्ति शीलो पहुँचा तो एली अपनी
कुर्सी पर नगर द्वार के पास बैठा था। उसे परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक के लिये चिंता थी, इसीलिए वह प्रतीक्षा में
बैठा हुआ था। तभी बिन्यामीन परिवार समूह का वह
व्यक्ति शीलो में आया और उसने दुःखभरी सूचना दी।
नगर के सभी लोग जोर से रो पड़े। 14-15एली अट्ठानवे
वर्ष का बूढ़ा और अन्धा था, एली ने रोने की आवाज
सुनी तो एली ने पूछा, "यह जोर का शोर क्या है?"

वह बिन्यामीन व्यक्ति एली के पास दौड़ कर गया
और जो कुछ हुआ था उसे बताया। 16बिन्यामीनी व्यक्ति
ने कहा कि "मैं आज युद्ध से भाग आया हूँ!" एली ने
पूछा, "पुत्र, क्या हुआ?"

17बिन्यामीनी व्यक्ति ने उत्तर दिया, "इस्राएली पलिश्तियों
के मुकाबले भाग खड़े हुए हैं। इस्राएली सेना ने अनेक
योद्धाओं को खो दिया है। तुम्हारे दोनों पुत्र मारे गए हैं
और पलिश्ती परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को छीन ले
गये हैं। 18जब बिन्यामीनी व्यक्ति ने परमेश्वर के पवित्र
सन्दूक की बात कही, तो एली द्वार के निकट अपनी
कुर्सी से पीछे गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई। एली
बूढ़ा और मोटा था, इसलिये वह वहीं मर गया। एली
बीस वर्ष तक इस्राएल का अगुवा रहा।

गौरव समाप्त हो गया

19एली की पुत्रवधू, पीनहास की पत्नी, उन दिनों
गर्भवती थी। यह लगभग उसके बच्चे के उत्पन्न होने
का समय था। उसने यह समाचार सुना कि परमेश्वर
का पवित्र सन्दूक छीन लिया गया है। उसने यह भी
सुना कि उसके ससुर एली की मृत्यु हो गई है और
उसका पति पीनहास मारा गया है। ज्यों ही उसने यह
समाचार सुना, उसको प्रसव-पीड़ा आरम्भ हो गई और
उसने अपने बच्चे को जन्म देना आरम्भ किया। 20उसके
मरने से पहले जो स्त्रियाँ उसकी सहायता कर रही थीं
उन्होंने कहा, "दुःखी मत हो! तुम्हें एक पुत्र उत्पन्न
हुआ है।"

किन्तु एली की पुत्रवधू ने न तो उत्तर ही दिया, न ही
उस पर ध्यान दिया। 21एली की पुत्रवधू ने कहा, "इस्राएल
का गौरव अस्त हो गया!" इसलिये उसने बच्चे का नाम
ईकाबोद रखा और बस वह तभी मर गई। उसने अपने
बच्चे का नाम ईकाबोद रखा क्योंकि परमेश्वर का
पवित्र सन्दूक चला गया था और उसके ससुर एवं पति
मर गए थे। 22उसने कहा, "इस्राएल का गौरव अस्त
हुआ।" उसने यह कहा, क्योंकि पलिश्ती परमेश्वर का
सन्दूक ले गये।

पवित्र सन्दूक पलिश्तियों को परेशान करता है

5 पलिश्तियों ने परमेश्वर का पवित्र सन्दूक एबनेज़ेर
से उसे अशदोद ले गए। 2पलिश्ती परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक को दागोन के मन्दिर में ले गए। उन्होंने
परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दागोन की मूर्ति के
बगल में रखा। 3अशदोदी के लोग अगली सुबह उठे।
उन्होंने देखा कि दागोन मुँह के बल पड़ा है। दागोन
यहोवा की सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था। अशदोद के
लोगों ने दागोन की मूर्ति को उसके पूर्व-स्थान पर
रखा। 4किन्तु अगली सुबह जब अशदोद के लोग उठे
तो उन्होंने दागोन को फिर जमीन पर पाया। दागोन
फिर यहोवा के पवित्र सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था।
दागोन के हाथ और पैर टूट गए थे और डेवढ़ी पर पड़े

थे। केवल दागोन का शरीर एक खण्ड के रूप में था। 5यही कारण है, कि आज भी दागोन के याजक या अशदोद में दागोन के मन्दिर में घुसने वाले अन्य व्यक्ति डेवढ़ी पर चलने से इन्कार करते हैं।

6यहोवा ने अशदोद के लोगों तथा उनके पड़ोसियों के जीवन को कष्टपूर्ण कर दिया। यहोवा ने उनको कठिनाईयों में डाला। उसने उनमें फोड़े उठाए। यहोवा ने उनके पास चूहे भेजे। चूहे उनके सभी जहाजों और भूमि पर दौड़ते थे। नगर में सभी लोग बहुत डर गए थे। 7अशदोद के लोगों ने देखा कि क्या हो रहा है। उन्होंने कहा, "इस्राएल के परमेश्वर का सन्दूक यहाँ नहीं रह सकता! परमेश्वर हमें और हमारे देवता, दागोन को भी दण्ड दे रहा है।"

8अशदोद के लोगों ने पाँच पलिश्ती शासकों को एक साथ बुलाया। अशदोद के लोगों ने शासकों से पूछा, "हम लोग इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक का क्या करें?" शासकों ने उत्तर दिया, "इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को गत नगर ले जाओ।" अत: पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को हटा दिया। 9किन्तु जब पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को गत को भेज दिया था, तब यहोवा ने उस नगर को दण्ड दिया। लोग बहुत भयभीत हो गए। परमेश्वर ने सभी बच्चों व बूढ़ों के लिये अनेक कष्ट उत्पन्न किये। परमेश्वर ने गत के लोगों के शरीर में फोड़े उत्पन्न किये। 10इसलिए पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को एक्रोन भेज दिया। किन्तु जब परमेश्वर का पवित्र सन्दूक एक्रोन आया, एक्रोन के लोगों ने शिकायत की। उन्होंने कहा, "तुम लोग इस्राएल के परमेश्वर का सन्दूक हमारे नगर एक्रोन में क्यों ला रहे हो? क्या तुम लोग हमें और हमारे लोगों को मारना चाहते हो?" 11एक्रोन के लोगों ने सभी पलिश्ती सेनापतियों को एक साथ बुलाया। एक्रोन के लोगों ने सेनापतियों से कहा, "इस्राएल के परमेश्वर के सन्दूक को, उसके पहले कि वह हमें और हमारे लोगों को मार डाले। इसके पहले के स्थान पर भेज दो!" एक्रोन के लोग बहुत भयभीत थे। परमेश्वर ने उस स्थान पर उनके जीवन को बहुत कष्टमय बना दिया। 12बहुत से लोग मर गए और जो लोग नहीं मरे उनको फोड़े निकले। एक्रोन के लोगों ने जोर से रोकर स्वर्ग को पुकारा।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक अपने घर लौटाया गया

6 पलिश्तियों ने पवित्र सन्दूक को अपने देश में सात महीने रखा। 2पलिश्तियों ने अपने याजक और जादूगरों को बुलाया। पलिश्तियों ने कहा, "हम यहोवा के सन्दूक का क्या करें? बताओ कि हम कैसे सन्दूक को वापस इसके घर भेजें? 3याजकों और जादूगरों ने उत्तर दिया, "यदि तुम इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को भेजते हो तो, इसे बिना किसी भेंट के न भेजो। तुम्हें इस्राएल के परमेश्वर को भेंटें चढ़ानी चाहिये। जिससे इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पापों को दूर करेगा। तब तुम स्वस्थ हो जाओगे। तुम पवित्र हो जाओगे। तुम्हें यह इसलिये करना चाहिए जिससे कि परमेश्वर तुम लोगों को दण्ड देना बन्द करे।"

4पलिश्तियों ने पूछा, "हम लोगों को कौन सी भेंट, अपने को क्षमा कराने के लिये इस्राएल के परमेश्वर को भेजनी चाहिये?"

याजकों और जादूगरों ने कहा, "यहाँ पाँच पलिश्ती प्रमुख हैं। हर एक नगर के लिये एक प्रमुख है। तुम सभी लोगों और तुम्हारे प्रमुखों की एक ही समस्या है। इसलिए तुम्हे पाँच सोने के ऐसे नमूने जो पाँच फोड़ों के रूप में दिखने वाले बनाने चाहिये और पाँच नमूने पाँच चूहों के रूप में दिखने वाले बनाने चाहिए। 5इस प्रकार फोड़ों के नमूने बनाओ और चूहों के नमूने बनाओ जो देश को बरबाद कर रहे हैं। इस्राएल के परमेश्वर को इन सोने के नमूनों को भुगतान के रूप में दो। तब यह संभव है कि इस्राएल के परमेश्वर तुमको, तुम्हारे देवताओं को, और तुम्हारे देश को दण्ड देना रोक दे। 6फ़िरौन और मिस्रियों की तरह हठी न बनो। परमेश्वर ने मिस्रियों को दण्ड दिया। यही कारण था कि मिस्रियों ने इस्राएलियों को मिस्र छोड़ने दिया।

7"तुम्हें एक नई बन्द गाड़ी बनानी चाहिए और दो गायें जिन्होंने अभी बछड़े दिये हो लानी चाहिए। ये गायें ऐसी होनी चाहियें जिन्होंने खेतों में काम न किया हो। गायों को बन्द गाड़ी में जोड़ो और बछड़ों को घर लौटा ले जाओ। बछड़ों को गौशाला में रखो। उन्हें अपनी माताओं के पीछे न जाने दो। * 8यहोवा के पवित्र सन्दूक को बन्द गाड़ी में रखो। तुम्हें सोने के नमूनों को थैले में सन्दूक के बगल में रखना चाहिये। तुम्हारे पापों को क्षमा करने के लिये सोने के नमूने परमेश्वर के लिये तुम्हारी भेंट हैं। बन्द गाड़ी को सीधे इसके रास्ते पर भेजो। 9बन्द गाड़ी को देखते रहो। यदि बन्द गाड़ी बेतशेमेश की ओर इस्राएल की भूमि में जाती है, तो यह संकेत है कि यहोवा ने हमें यह बड़ा रोग दिया है। किन्तु यदि गायें बेतशेमेश को नहीं जातीं, तो हम समझेंगे कि इस्राएल के परमेश्वर ने हमें दण्ड नहीं दिया है। हम समझ जायेंगे कि हमारी बीमारी स्वत: ही हो गई।"

10पलिश्तियों ने वही किया जो याजकों और जादूगरों ने कहा। पलिश्तियों ने वैसी दो गायें लीं जिन्होंने शीघ्र ही बछड़े दिये थे। पलिश्तियों ने गायों को बन्द गाड़ी से जोड़ दिया। पलिश्तियों ने बछड़ों को घर पर गौशाला में रखा

उन्हें ... जाने दो पलिश्तियों ने सोचा कि यदि गायों ने अपने बछड़ों को खोजने की कोशिश नहीं की और बेतशेमेश को सीधे चली गई तो यह सिद्ध हो जायेगा कि परमेश्वर उन्हें ले जा रहा है। यह प्रकट करेगा कि परमेश्वर ने भेंट स्वीकार कर ली।

11तब पलिश्तियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को बन्द गाड़ी में रखा। 12गायें सीधे बेतशेमेश को गईं। गायें लगातार रंभाती हुई सड़क पर टिकीं रहीं। गायें दायें या बायें नहीं मुड़ीं। पलिश्ती शासक गायों के पीछे बेतशेमेश की नगर सीमा तक गए।

13बेतशेमेश के लोग घाटी में अपनी गेहूँ की फसल काट रहे थे। उन्होंने निगाह उठाई और पवित्र सन्दूक को देखा। वे सन्दूक को फिर देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वे उसे लेने के लिये दौड़े। 14-15 बन्द गाड़ी उस खेत में आई जो बेतशेमेश के यहोशू का था। इस खेत में बन्द गाड़ी एक विशाल चट्टान के सामने रूकी। बेतशेमेश के लोगों ने बन्द गाड़ी को काट दिया। तब उन्होंने गायों को मार डाला। उन्होंने गायों की बलि यहोवा को दी। लेवीवंशियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को उतारा। उन्होंने उस थैले को भी उतारा जिसमें सोने के नमूने रखे थे। लेवीवंशियों ने यहोवा के सन्दूक और थैले को विशाल चट्टान पर रखा। उस दिन बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा को होमबलि चढ़ाई।

16पाँचों पलिश्ती शासकों ने बेतशेमेश के लोगों को यह सब करते देखा। तब वे पाँचों पलिश्ती शासक उसी दिन एक्रोन लौट गए।

17इस प्रकार, पलिश्तियों ने यहोवा को अपने पापों के लिये, अपने फोड़ों के सोने के नमूने भेंट के रूप में भेजे। उन्होंने हर एक पलिश्ती नगर के लिये फोड़े का एक सोने का नमूना भेजा। ये पलिश्ती नगर अशदोद , अज्जा, अश्कलोन, गत और एक्रोन थे। 18पलिश्तियों ने चूहों के सोने के नमूने भी भेजे। सोने के चूहे की संख्या उतनी ही थी जितनी संख्या पाँचों पलिश्ती शासकों के नगरों की थी। इन नगरों के चारों ओर चहारदीवारी थी और हर नगर के चारों ओर गाँव थे।

बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को एक चट्टान पर रखा। वह चट्टान अब भी बेतशेमेश के यहोशू के खेत में है। 19किन्तु जिस समय बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को देखा उस समय वहाँ कोई याजक न था। इसलिये परमेश्वर ने बेतशेमेश के सत्तर व्यक्तियों को मार डाला। बेतशेमेश के लोग विलाप करने लगे क्योंकि यहोवा ने उन्हें इतना कठोर दण्ड दिया। 20इसलिये बेतशेमेश के लोगों ने कहा, "याजक कहाँ है जो इस पवित्र सन्दूक की देखभाल कर सके? यहाँ से सन्दूक कहाँ जाएगा?"

21किर्यत्यारीम में एक याजक था। बेतशेमेश के लोगों ने किर्यत्यारीम के लोगों के पास दूत भेजे। दूतों ने कहा, "पलिश्तियों ने यहोवा का पवित्र सन्दूक लौटा दिया है। आओ और इसे अपने नगर में ले जाओ।"

7 किर्यत्यारीम के लोग आए और यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले गए। वे यहोवा के सन्दूक को पहाड़ी पर अबीनादाब के घर ले गए। उन्होंने अबीनादाब के पुत्र एलीआज़ार को यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिये तैयार करने हेतु एक विशेष उपासना की। 2सन्दूक किर्यत्यारीम में बुहत समय तक रखा रहा। यह वहाँ बीस वर्ष तक रहा।

यहोवा इस्राएलियों की रक्षा करता है:

इस्राएल के लोग फिर यहोवा का अनुसरण करने लगे। 3शमूएल ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यदि तुम सचमुच यहोवा के पास सच्चे हृदय से लौट रहे हो तो तुम्हें विदेशी देवताओं को फेंक देना चाहिये। तुम्हें अश्तोरेत की मूर्तियों को फेंक देना चाहिए और तुम्हें पूरी तरह यहोवा को अपना समर्पण करना चाहिये! तुम्हें केवल यहोवा की ही सेवा करनी चाहिये। तब यहोवा तुम्हें पलिश्तियों से बचायेगा।"

4इसलिये इस्राएलियों ने अपने बाल और अश्तोरेत की मूर्तियों को फेंक दिया। इस्राएली केवल यहोवा की सेवा करने लगे।

5शमूएल ने कहा, "सभी इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे हों। मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूँगा।"

6इस्राएली मिस्पा में एक साथ इकट्ठे हुए। वे जल लाये और यहोवा के सामने वह जल चढ़ाया। इस प्रकार उन्होंने उपवास का समय आरम्भ किया। उन्होंने उस दिन भोजन नहीं किया और उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, "हम लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।" इस प्रकार शमूएल ने मिस्पा में इस्राएल के न्यायाधीश के रूप में काम किया।

7 पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएली मिस्पा में इकट्ठा हो रहे हैं। पलिश्ती शासक इस्राएलियों के विरुद्ध आक्रमण करने गये। इस्राएलियों ने सुना कि पलिश्ती आ रहे हैं, और वे डर गए। 8इस्राएलियों ने शमूएल से कहा, "हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना हमारे लिये करना बन्द मत करो। यहोवा से माँगों कि वह पलिश्तियों से हमारी रक्षा करे!"

9शमूएल ने एक मेमना लिया। उसने यहोवा की होमबलि के रूप में मेमने को जलाया। शमूएल ने यहोवा से इस्राएल के लिये प्रार्थना की। यहोवा ने शमूएल की प्रार्थना का उत्तर दिया। 10जिस समय शमूएल बलि जला रहा था, पलिश्ती इस्राएल से लड़ने आये। किन्तु यहोवा ने पलिश्तियों के समीप प्रचण्ड गर्जना उत्पन्न की। इसने पलिश्तियों को अस्त-व्यस्त कर दिया। गर्जना ने पलिश्तियों को भयभीत कर दिया और वे अस्त-व्यस्त हो गये। उनके प्रमुख उन पर नियन्त्रण न रख सके। इस प्रकार पलिश्तियों को इस्राएलियों ने युद्ध में पराजित कर दिया। 11इस्राएल के लोग मिस्पा से बाहर दौड़े और पलिश्तियों का पीछा किया। उन्होंने लगातार बेत कर तक उनका पीछा किया। उन्होंने पूरे रास्ते पलिश्ती सैनिकों को मारा।

इस्राएल में शान्ति स्थापित हुई

12इसके बाद, शमूएल ने एक विशेष पत्थर स्थापित
किया। उसने यह इसलिये किया कि लोग याद रखें कि
परमेश्वर ने क्या किया। शमूएल ने पत्थर को मिस्पा
और शेन के बीच रखा। शमूएल ने पत्थर का नाम
"सहायता का पत्थर" * रखा। शमूएल ने कहा, "यहोवा
ने लगातार पूरे रास्ते इस स्थान तक हमारी सहायता
की।"

13पलिश्ती पराजित हुए। वे इस्राएल देश में फिर नहीं
घुसे। शमूएल के शेष जीवन में, यहोवा पलिश्तियों के
विरुद्ध रहा। 14पलिश्तियों ने इस्राएल के नगर ले लिये
थे। पलिश्तियों ने एक्रोन से गत तक के क्षेत्र के नगरों
को ले लिया था। किन्तु इस्राएलियों ने इन्हें जीतकर
वापस ले लिया और इस्राएल ने इन नगरों के चारों ओर
की भूमि को भी वापस ले लिया।

15शमूएल ने अपने पूरे जीवन भर इस्राएल का मार्ग
दर्शन किया। 16शमूएल एक स्थान से दूसरे स्थान तक
इस्राएल के लोगों का न्याय करता हुआ गया। हर वर्ष
उसने देश के चारों ओर यात्रा की। वह गिलगाल, बेतेल
और मिस्पा को गया। अत: उसने इन सभी स्थानों पर
इस्राएली लोगों का न्याय और उन पर शासन किया।
17किन्तु शमूएल का घर रामा में था। इसलिए शमूएल
सदा रामा को लौट जाता था। शमूएल ने उसी नगर से
इस्राएल का न्याय और शासन किया और शमूएल ने
रामा में यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।

इस्राएल एक राजा की माँग करता है

8 जब शमूएल बूढ़ा हो गया तो उसने अपने पुत्रों को
इस्राएल के न्यायाधीश बनाया। 2शमूएल के प्रथम
पुत्र का नाम योएल रखा गया। उसके दूसरे पुत्र का नाम
अबिय्याह रखा गया था। योएल और अबिय्याह बेर्शेबा
में न्यायाधीश थे। 3किन्तु शमूएल के पुत्र वैसे नहीं रहते
थे जैसे वह रहता था। योएल और अबिय्याह घूस लेते
थे। वे गुप्त रूप से धन लेते थे और न्यायालय में अपना
निर्णय बदल देते थे। वे न्यायालय में लोगों को ठगते थे।
4इसलिये इस्राएल के सभी अग्रज (प्रमुख) एक साथ
इकट्ठे हुए। वे शमूएल से मिलने रामा गये। 5अग्रजों
(प्रमुखों) ने शमूएल से कहा, "तुम बूढ़े हो गए और
तुम्हारे पुत्र ठीक से नहीं रहते। वे तुम्हारी तरह नहीं हैं।
अब, तुम अन्य राष्ट्रों की तरह हम पर शासन करने
के लिये एक राजा दो।"

6इस प्रकार, अग्रजों (प्रमुखों) ने अपने मार्ग दर्शन के
लिये एक राजा माँगा। शमूएल ने सोचा कि यह विचार
बुरा है। इसलिए शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। 7यहोवा
ने शमूएल से कहा, "वही करो जो लोग तुमसे करने
को कहते हैं। उन्होंने तुमको अस्वीकार नहीं किया है।
उन्होंने मुझे अस्वीकार किया है! वे मुझको अपना
राजा बनाना नहीं चाहते! 8वे वही कर रहे हैं जो सदा
करते रहे। मैंने उनको मिस्र से बाहर निकाला। किन्तु
उन्होंने मुझको छोड़ा, तथा अन्य देवताओं की पूजा की।
वे तुम्हारे साथ भी वैसा ही कर रहे हैं। 9इसलिए लोगों
की सुनों और जो वे कहें, करो। किन्तु उन्हें चेतावनी
दो। उन्हें बता दो कि राजा उनके साथ क्या करेगा।
उनको बता दो कि एक राजा लोगों पर कैसे शासन
करता है।"

10उन लोगों ने एक राजा के लिये माँग की। इसलिये
शमूएल ने लोगों से वे सारी बातें कहीं जो यहोवा ने कही
थी। 11शमूएल ने कहा, "यदि तुम अपने ऊपर शासन
करने वाला राजा रखते हो तो वह यह करेगा: वह
तुम्हारे पुत्रों को ले लेगा। वह तुम्हारे पुत्रों को अपनी
सेवा के लिये विवश करेगा। वह उन्हें सैनिक बनने के
लिये विवश करेगा, उन्हें उसके रथों पर से लड़ना
पड़ेगा और वे उसकी सेना के घुड़सवार होंगें। तुम्हारे
पुत्र राजा के रथ के आगे दौड़ने वाले रक्षक बनेंगे।
12राजा तुम्हारे पुत्रों को सैनिक बनने के लिये विवश
करेगा। उनमें से कुछ हजार व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी
होंगे और अन्य पचास व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी
होंगे। राजा तुम्हारे पुत्रों में से कुछ को अपने खेत को
जोतने और फसल काटने को विवश करेगा। वह तुम्हारे
पुत्रों में से कुछ को अस्त्र-शस्त्र बनाने को विवश
करेगा। वह उन्हें अपने रथ के लिये चीजें बनाने के
लिये विवश करेगा। 13राजा तुम्हारी पुत्रियों को लेगा।
वह तुम्हारी पुत्रियों में से कुछ को अपने लिये सुगन्धद्रव्य
चीजें बनाने को विवश करेगा और वह तुम्हारी पुत्रियों
में से कुछ को रसोई बनाने और रोटी पकाने को
विवश करेगा।

14"राजा तुम्हारे सर्वोत्तम खेत, अगूंर के बाग और
जैतून के बागों को ले लेगा। वह उन चीजों को तुमसे ले
लेगा और अपने अधिकारियों को देगा। 15वह तुम्हारे
अन्न और अगूंर का दसवाँ भाग ले लेगा। वह इन चीज़ों
को अपने सेवकों और अधिकारियों को देगा। 16वह
राजा तुम्हारे दास-दासियों को ले लेगा। वह तुम्हारे
सर्वोत्तम पशु और गधों को लेगा। वह उनका उपयोग
अपने कामों के लिये करेगा 17और वह तुम्हारी रेवड़ों
का दसवाँ भाग लेगा।

"और तुम स्वयं इस राजा के दास हो जाओगे। 18जब
वह समय आयेगा तब तुम राजा को चुनने के कारण
रोओगे। किन्तु उस समय यहोवा तुमको उत्तर नहीं
देगा।"

19किन्तु लोगों ने शमूएल की एक न सुनी। उन्होंने
कहा, "नहीं! हम लोग अपने ऊपर शासन करने के
लिये एक राजा चाहते हैं। 20तब हम वैसे ही हो जायेंगे

सहायता का पत्थर या "एबेनेजेर।"

जैसे अन्य राष्ट्र। हमारा राजा हम लोगों का मार्ग दर्शन
करेगा। वह हम लोगों के साथ जायेगा और हमारे युद्धों
कोलड़ेगा।"
21शमूएल ने जब लोगों का सारा कहा हुआ सुना तब
उसने यहोवा के सामने उनके कथनों को दुहराया।
22यहोवा ने उत्तर दिया, "उनकी बात सुनों! उनको एक
राजा दो।" तब शमूएल ने इस्राएल के लोगों से कहा,
"ठीक है! तुम्हारा एक नया राजा होगा। अब, आप सभी
लोग घर को जायें।"

शाऊल अपने पिता के गधों की तलाश करता है

9 कीश बिन्यामीन परिवार समूह का एक महत्वपूर्ण
व्यक्ति था। कीश अबीएल का पुत्र था। अबीएल
सरोर का पुत्र था। सरोर बकोरत का पुत्र था। बकोरत
बिन्यामीन के एक व्यक्ति अपीह का पुत्र था। 2कीश
का एक पुत्र शाऊल नाम का था। शाऊल एक सुन्दर
युवक था। वहाँ शाऊल से अधिक सुन्दर कोई न था।
खड़ा होने पर शाऊल का सिर इस्राएल के किसी भी
व्यक्ति से ऊँचा रहता था।
3एक दिन, कीश के गधे खो गए। इसलिए कीश ने
अपने पुत्र शाऊल से कहा, "सेवकों में से एक को साथ
लो और गधों की खोज में जाओ।"
4शाऊल ने गधों की खोज आरम्भ की। शाऊल
एप्रैम की पहाड़ियों में होकर घूमा। तब शाऊल शलीशा
के चारों ओर के क्षेत्र में घूमा। किन्तु शाऊल और
उसका सेवक, कीश के गधों को नहीं पा सके। इसलिए
शाऊल और सेवक शालीम के चारों ओर के क्षेत्र में
गये। किन्तु गधे वहाँ नहीं मिले। इसलिये शाऊल ने
बिन्यामीन के प्रदेश में होकर यात्रा की। किन्तु वह और
उसका सेवक गधों को तब भी न पा सके।
5अन्त में, शाऊल और उसका सेवक सूफ
नामक नगर में आए। शाऊल ने अपने सेवक से कहा,
"चलो, हम लौटें। मेरे पिता गधों के बारे में सोचना
बन्द कर देंगे और हम लोगों के बारे में चिन्तित
होने लगेंगे।"
6किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, "इस नगर में परमेश्वर
का एक व्यक्ति है। लोग उसका सम्मान करते हैं। वह
जो कहता है सत्य होता है। इसलिये हम इस नगर में
चले। संभव है कि परमेश्वर का यह व्यक्ति हमें बताये
कि इसके बाद हम लोग कहाँ जायें।"
7शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "हम नगर में चल
सकते हैं। किन्तु हम लोग उस व्यक्ति को क्या दे सकते
हैं? हम लोगों के थैले का भोजन समाप्त हो चुका है।
हम लोगों के पास कोई भी भेंट परमेश्वर के व्यक्ति
को देने के लिये नहीं है। हमारे पास उसे देने को क्या
है?"
8सेवक ने शाऊल को फिर उत्तर दिया, "देखों, मेरे
पास थोड़ा सा धन* है। हम परमेश्वर के व्यक्ति को
यही दें। तब वह बतायेगा कि हम लोग कहाँ जायें।"
9-11शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "अच्छा सुझाव
है! हम चलें!" वे नगर में वहाँ गए जहाँ परमेश्वर का
व्यक्ति था। शाऊल और उसका सेवक पहाड़ी पर चढ़ते
हुए नगर को जा रहे थे। रास्ते में वे कुछ युवतियों से
मिले। युवतियाँ बाहर से पानी लेने जा रही थी। शाऊल
और उसके सेवक ने युवतियों से पूछा, "क्या भविष्यवक्ता
यहाँ है?" (प्राचीन काल में इस्राएल के निवासी नबियों
को "भविष्यवक्ता" कहते थे। इसलिये यदि वे परमेश्वर
से कुछ माँगना चाहते थे तो वे कहते थे, "हम लोग
भविष्यवक्ता के पास चलें।")
12युवतियों ने उत्तर दिया, "हाँ, भविष्यवक्ता यहीं है।
वह ठीक इसी सड़क पर आगे है। वह आज ही नगर में
आया है। कुछ लोग वहाँ एक साथ इसलिये इकट्ठे हो
रहे हैं कि आराधनालय पर मेलबलि में भाग ले सकें।
13आप लोग नगर में जाएँ, और आप उनसे मिल लेंगे।
यदि आप लोग शीघ्रता करेंगे तो आप उनसे आराधनालय
पर भोजन के लिये जाने के पहले मिल लेंगे। भविष्यवक्ता
बलि-भेंट को आशीर्वाद देते हैं। इसलिये लोग तब वे
तक भोजन करना आरम्भ नहीं करेंगे जब तक वे वहाँ
न पहुँचे। इसलिये यदि आप लोग शीघ्रता करें, तो आप
भविष्यवक्ता को पा सकते हैं।"
14शाऊल और सेवक ने ऊपर पहाड़ी पर नगर की
ओर बढ़ना आरम्भ किया। जैसे ही वे नगर में घुसे
उन्होंने शमूएल को अपनी ओर आते देखा। शमूएल
नगर के बाहर उपासना के स्थान पर जाने के लिये
अभी आ ही रहा था।
15एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल से कहा था,
16"कल मैं इसी समय तुम्हारे पास एक व्यक्ति को
भेजूँगा। वह बिन्यामीन के परिवार समूह का होगा। तुम्हें
उसका अभिषेक कर देना चाहिये। तब वह हमारे लोग
इस्राएलियों का नया प्रमुख होगा। यह व्यक्ति हमारे
लोगों को पलिश्तियों से बचाएगा। मैंने अपने लोगों के
कष्टों को देखा है। मैंने अपने लोगों का रोना सुना है।"
17शमूएल ने शाऊल को देखा और यहोवा ने उससे
कहा, "यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में मैंने तुमसे
कहा था। यह मेरे लोगों पर शासन करेगा।"
18शाऊल द्वार के पास शमूएल के निकट आया।
शाऊल ने शमूएल से पूछा, "कृपया बतायें भविष्यवक्ता
का घर कहाँ है।"
19शमूएल ने उत्तर दिया, "मैं ही भविष्यवक्ता हूँ। मेरे
आगे उपासना के स्थान पर पहुँचो। तुम और तुम्हारा

थोड़ा सा धन शाब्दिक 1/4 शकेल चाँदी। यह लगभग 1/10 औंस चाँदी थी।

सेवक आज हमारे साथ भोजन करोगे। मैं कल सवेरे
तुम्हें घर जाने दूँगा मैं तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर
दूँगा। 20उन गधों की चिन्ता न करो जिन्हें तुमने तीन
दिन पहले खो दिया। वे मिल गये हैं। अब, तुम्हें सारा
इस्राएल चाहता है। वे तुम्हें और तुम्हारे पिता के परिवार
के सभी लोगों को चाहते हैं।"

21शाऊल ने उत्तर दिया, "किन्तु मैं बिन्यामीन परिवार
समूह का एक सदस्य हूँ। यह इस्राएल में सबसे छोटा
परिवार समूह है और मेरा परिवार बिन्यामीन परिवार
समूह में सबसे छोटा है। आप क्यों कहते हैं कि इस्राएल
मुझको चाहता है?"

22तब शमूएल, शाऊल और उसके सेवक को भोजन
के क्षेत्र में ले गया। लगभग तीस व्यक्ति एक साथ भोजन
के लिये और बलि-भेंट में भाग लेने के लिये आमन्त्रित
थे। शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को मेज पर
सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया। 23शमूएल ने रसोइये से
कहा, "वह माँस लाओ जो मैंने तुम्हें दिया था। यह वह
भाग है जिसे मैंने तुमसे सुरक्षित रखने के लिये कहा
था।"

24रसोइये ने जांघ ली और शाऊल के सामने मेज पर
रखी। शमूएल ने कहा, "यही वह माँस है जिसे मैंने
तुम्हारे लिये सुरक्षित रखा था। यह खाओ क्योंकि यह
इस विशेष समय के लिये तुम्हारे लिये सुरक्षित था।" इस
प्रकार उस दिन शाऊल ने शमूएल के साथ भोजन
किया। 25जब उन्होंने भोजन समाप्त कर लिया, वे
आराधनालय से उतरे और नगर को लौटे। शमूएल ने
छत पर शाऊल के लिये बिस्तर लगाया और शाऊल सो
गया।

26अगली सुबह सवेरे, शमूएल ने शाऊल को छत
पर जोर से पुकारा। शमूएल ने कहा, "उठो। मैं तुम्हें
तुम्हारे रास्ते पर भेजूँगा।" शाऊल उठा, और शमूएल
के साथ घर से बाहर चल पड़ा।

27शाऊल, उसका सेवक और शमूएल एक साथ
नगर के सिरे पर चल रहे थे। शमूएल ने शाऊल से
कहा, "अपने सेवक से हम लोगों से कुछ आगे चलने
को कहो। मेरे पास तुम्हारे लिये परमेश्वर का एक
सन्देश है।" इसलिये दास उनसे कुछ आगे चलने लगा।

शमूएल शाऊल का अभिषेक करता है

10 शमूएल ने विशेष तेल की एक कुप्पी ली।
शमूएल ने तेल को शाऊल के सिर पर डाला।
शमूएल ने शाऊल को चुम्बन किया और कहा, "यहोवा
ने तुम्हारा अभिषेक अपने लोगों का प्रमुख बनाने के
लिये किया है। तुम यहोवा के लोगों पर नियन्त्रण करोगे।
तुम उन्हें उन शत्रुओं से बचाओगे जो उनको चारों
ओर से घेरे हैं। यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक (चुनाव)
अपने लोगों का शासक होने के लिये किया है। एक
चिन्ह प्रकट होगा जो प्रमाणित करेगा कि यह सत्य है।
2जब तुम मुझसे अलग होगे, तो तुम राहेल के कब्र के
पास दो व्यक्तियों से, बिन्यामीन की धरती के सिवाने
पर, सेलसह में मिलोगे। वे दोनों व्यक्ति तुमसे कहेंगे,
'जिन गधों की खोज तुम कर रहे थे उन्हें किसी
व्यक्ति ने प्राप्त कर लिया है। तुम्हारे पिता ने गधों के
सम्बन्ध में चिन्ता करना छोड़ दिया है। अब उसे तुम्हारी
चिन्ता है। वह कह रहा है: मैं अपने पुत्र के विषय में
क्या करुँ?'"

3शमूएल ने कहा, "अब तुम तब तक चलते रहोगे
जब तक तुम ताबोर में बांज के विशाल पेड़ तक पहुँच
नहीं जाते। वहाँ तुमसे तीन व्यक्ति मिलेंगे। वे तीनों
व्यक्ति बेतेल में परमेश्वर की उपासना के लिये यात्रा
पर होंगे। एक व्यक्ति बकरियों के तीन बच्चों को लिये
होगा। दूसरा व्यक्ति तीन रोटियाँ लिये हुए होगा और
तीसरा व्यक्ति एक मशक दाखमधु लिये हुए होगा। 4ये
तीनों व्यक्ति कहेंगे, 'आपका स्वागत है।' वे तुम्हें दो
रोटियाँ देंगे। तुम उनसे उन दो रोटियों को स्वीकार
करोगे। 5तब तुम गिबियथ-एलोहिम जाओगे। उस स्थान
पर पलिश्तियों का एक किला है। जब तुम उस नगर में
पहुँचोगे तो कई नबी निकल आयेंगे। ये नबी आराधनास्थल
से नीचे उपासना के लिये आयेंगे। वे भविष्यवाणी करेंगे।
वे वीणा, खंजड़ी, और तम्बूरा बजा रहे होंगे। 6तब
तत्काल तुम पर यहोवा की आत्मा उतरेगी। तुम बदल
जाओगे। तुम एक भिन्न ही पुरुष हो जाओगे। तुम इन
भविष्यवक्ताओं के साथ भविष्यवाणी करने लगोगे। 7इन
बातों के घटित होने के बाद, तुम जो चाहोगे, करोगे।
परमेश्वर तुम्हारे साथहोगा।

8"मुझसे पहले गिलगाल जाओ। मैं तुम्हारे पास उस
स्थान पर आऊँगा। तब मैं होमबलि और मेलबलि
चढ़ाऊँगा। किन्तु तुम्हें सात दिन प्रतीक्षा करनी होगी।
तब मैं आऊँगा और बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है।"

शाऊल का नबी जैसा होना

9जैसे ही शाऊल शमूएल को छोड़ने के लिये मुड़ा,
परमेश्वर ने शाऊल का जीवन बदल दिया। ये सभी
घटनायें उस दिन घटीं। 10शाऊल और उसका सेवक
गिबियथ-एलोहिम गए। उस स्थान पर शाऊल
नबियों के एक समूह से मिला। परमेश्वर की आत्मा
शाऊल पर तीव्रता से उतरी और शाऊल ने नबियों के
साथ भविष्यवाणी की। 11जो लोग शाऊल को पहले से
जानते थे उन्होंने नबियों के साथ उसे भविष्यवाणी
करते देखा। वे लोग आपस में पूछ-ताछ करने लगे,
"कीश के पुत्र को क्या हो गया है? क्या शाऊल नबियों
में से एक है?"

12एक व्यक्ति ने जो गिबियथ-एलोहिम में रहता था,
कहा, "हाँ! और ऐसा लगता है कि यह उनका मुखिया

है।"* यही कारण है कि यह प्रसिद्ध कहावत बनी: "क्या शाऊल नबियों में से कोई एक है?"

शाऊल घर पहुँचता है

13अन्तत: उसने नबियों की तरह बोलना बन्द किया और एक उच्च स्थान पर चला गया।

14बाद में शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से कहा, "तुम कहाँ गए थे?" उसने उत्तर दिया, "हम गधों को देखने गए थे और उनकी खोज में चले ही जा रहे थे, किन्तु वे कहीं नहीं मिले। इसलिए हम लोग शमूएल के पास गए।"

15यह सुनकर शाऊल के चाचा ने कहा, "कृपया तुम लोग मुझे बताओ कि शमूएल ने तुम दोनों से क्या कहा?"
16शाऊल ने अपने चाचा को उत्तर दिया, "उसने पूरी सच्चाई से बताया कि गधे मिल गये हैं।" और उसने राज्य के बारे में जो शमूएल से सुना था उसे नहीं बताया।

शमूएल, शाऊल को राजा घोषित करता है

17शमूएल ने इस्राएल के सभी लोगों से मिस्पा में यहोवा से मिलने के लिये एक साथ इकट्ठा होने को कहा।
18शमूएल ने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैंने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला। मैंने तुम्हें मिस्र की अधीनता से और उन अन्य राष्ट्रों से भी बचाया जो तुम्हें चोट पहुँचाना चाहते थे।'
19किन्तु आज तुमने अपने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया है। तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें तुम्हारे सभी कष्टों और समस्याओं से बचाता है। किन्तु तुमने कहा, 'नहीं हम अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं।' अब आओ और यहोवा के सामने अपने परिवारों और अपने परिवार समूहों में खड़े हो जाओ।"

20शमूएल इस्राएल के सभी परिवार समूहों को निकट लाया। तब शमूएल ने नया राजा चुनना आरम्भ किया। प्रथम बिन्यामीन का परिवार समूह चुना गया।
21शमूएल ने बिन्यामीन के परिवार समूह के हर एक परिवार को एक-एक करके आगे से निकलने को कहा। मत्री का परिवार चुना गया। तब शमूएल ने मत्री के परिवार के हर एक व्यक्ति को एक-एक करके उसके आगे से निकलने को कहा। इस प्रकार कीश का पुत्र शाऊल चुना गया। किन्तु जब लोगों ने शाऊल की खोज की, तो वे उसे पा नहीं सके।
22तब उन्होंने यहोवा से पूछा, "क्या शाऊल अभी तक यहाँ नहीं आया है?"

यहोवा ने कहा, "शाऊल भेंट सामग्री के पीछे छिपा है।"

23लोग दौड़ पड़े और शाऊल को भेंट सामग्री के पीछे से ले आये। शाऊल लोगों के बीच खड़ा हुआ। शाऊल इतना लम्बा था कि सभी लोग बस उस के कंधे तक आ रहे थे।

24शमूएल ने सभी लोगों से कहा, "उस व्यक्ति को देखो जिसे यहोवा ने चुना है। लोगों में कोई व्यक्ति शाऊल के समान नहीं है।" तब लोगों ने नारा लगाया, "राजा दीर्घायु हो!"

25शमूएल ने राज्य के नियमों को लोगों को समझाया। उसने उन नियमों को एक पुस्तक में लिखा। उसने पुस्तक को यहोवा के सामने रखा। तब शमूएल ने लोगों को अपने-अपने घर जाने के लिये कहा।

26शाऊल भी गिबा में अपने घर चला गया। परमेश्वर ने वीर पुरुषों के हृदय का स्पर्श किया और ये वीर व्यक्ति शाऊल का अनुसरण करने लगे।
27 किन्तु कुछ उत्पातियों ने कहा, "यह व्यक्ति हम लोगों की रक्षा कैसे कर सकता है?" उन्होनें शाऊल की निन्दा की और उसे उपहार देने से इन्कार किया। किन्तु शाऊल ने कुछ नहीं कहा।

अम्मोनियों का राजा नाहाश

अम्मोनियों का राजा नाहाश गिलाद और याबेश के परिवार समूह को कष्ट दे रहा था। नाहाश ने उनके हर एक पुरुष की दायीं आँख निकलवा डाली थी। नाहाश किसी को उनकी सहायता नहीं करने देता था। अम्मोनियों के राजा नाहाश ने यरदन नदी के पूर्व रहने वाले हर एक इस्राएली पुरूष की दायीं आँख निकलवा ली थी। किन्तु सत्तर हजार इस्राएली पुरुष अम्मोनियों के यहाँ से भाग निकले और याबेश गिलाद में आ गये।

11 लगभग एक महीने बाद अम्मोनी नाहाश और उसकी सेना ने याबेश गिलाद को घेर लिया। याबेश के सभी लोगों ने नाहाश से कहा, "यदि तुम हमारे साथ सन्धि करोगे तो हम तुम्हारी प्रजा बनेंगे।"

2किन्तु अम्मोनी नाहाश ने उत्तर दिया, "मैं तुम लोगों के साथ तब सन्धि करूँगा जब मैं हर एक व्यक्ति की दायीं आँख निकाल लूँगा। तब सारे इस्राएली लज्जित होंगे!"

3याबेश के प्रमुखों ने नाहाश से कहा, "हम लोग सात दिन का समय लेंगे। हम पूरे इस्राएल में दूत भेजेंगे। यदि कोई सहायता के लिये नहीं आएगा, तो हम लोग तुम्हारे पास आएंगे और अपने को समर्पित कर देंगे।"

शाऊल याबेश गिलाद की रक्षा करता है:

4सो वे दूत गिबा में आये जहाँ शाऊल रहता था। उन्होंने लोगों को समाचार दिया। लोग जोर से रो पड़े।
5शाऊल अपनी बैलों के साथ खेतों में गया हुआ था।

हाँ ... मुखिया है "और जो उनका पिता है" प्राय: वह व्यक्ति जो अन्य नबियों को शिक्षा देता और मार्गदर्शन करता था "पिता" कहा जाता था।

शाऊल खेत से लौटा और उसने लोगों का रोना सुना।
शाऊल ने पूछा, “लोगों को क्या कष्ट है? वे रो क्यों रहे
हैं?” तब लोगों ने याबेश के दूतों ने जो कहा था शाऊल
को बताया। 6शाऊल ने उनकी बातें सुनी। तब परमेश्वर
का आत्मा शाऊल पर जल्दी से उतरा। शाऊल अत्यन्त
क्रोधित हुआ। 7शाऊल ने बैलों की जोड़ी ली और
उसके टुकड़े कर डाले। तब उसने उन बैलों के टुकड़ों
को उन दूतों को दिया। उसने दूतों को आदेश दिया कि
वे इस्राएल के पूरे देश में उन टुकड़ों को ले जाये। उसने
उनसे इस्राएल के लोगों को यह सन्देश देने को कहा,
“आओ शाऊल और शमूएल का अनुसरण करो। यदि
कोई व्यक्ति नहीं आता और उसकी सहायता नहीं करता
तो उसके बैलों के साथ यही होगा।” यहोवा की ओर से
लोगों में बड़ा भय छा गया। वे एक इकाई के रूप में
एक साथ इकट्ठे हो गए। 8शाऊल ने सभी पुरुषों को
बेजेक में एक साथ इकट्ठा किया। वहाँ इस्राएल के
तीन लाख पुरुष और यहूदा के तीस हजार पुरुष थे।

9शाऊल और उसकी सेना ने याबेश के दूतों से कहा,
“गिलाद में याबेश के लोगों से कहो कि कल दोपहर
तक तुम लोगों की रक्षा हो जायेगी।” दूतों ने शाऊल का
सन्देश याबेश के लोगों को दिया। याबेश के लोग बड़े
प्रसन्न हुए। 10तब याबेश के लोगों ने अम्मोनी नाहाश से
कहा, “हम लोग कल तुम्हारे पास आएंगे। तब तुम हम
लोगों के साथ जो चाहो कर सकते हो।”

11अगली सुबह शाऊल ने अपनी सेना को तीन टुकड़ियों
में बाँटा। सूरज निकलते ही शाऊल और उसके सैनिक
अम्मोनियों के डेरे में जा घुसे। जब वे उस सुबह रक्षकों
को बदल रहे थे, शाऊल ने आक्रमण किया। शाऊल
और उसके सैनिकों ने अम्मोनियों को दो पहर से पहले
पराजित कर दिया। सभी अम्मोनी सैनिक विभिन्न
दिशाओं में भागे –दो सैनिक भी एक साथ नहीं रहें।
12तब लोगों ने शमूएल से कहा, “वे लोग कहाँ हैं जो
कहते थे कि हम शाऊल को राजा के रूप में शासन
करने देना नहीं चाहते? उन लोगों को लाओ! हम उन्हें
मार डालेंगे! 13किन्तु शाऊल ने कहा, “नहीं! आज किसी
को मत मारो! आज यहोवा ने इस्राएल की रक्षा की!”

14तब शमूएल ने लोगों से कहा, “आओ हम लोग
गिलगाल चलें। गिलगाल में हम शाऊल को फिर राजा
बनायेंगे।”

15सो सभी लोग गिलगाल चले गये। वहाँ यहोवा के
सामने लोगों ने शाऊल को राजा बनाया। उन्होंने यहोवा
को मेलबलि दी। शाऊल और सभी इस्राएलियों ने खुशियाँ
मनायी।

शमूएल का इस्राएलियों से बात करना

12 शमूएल ने सारे इस्राएलियों से कहा: “मैंने वह
सब कुछ कर दिया है जो तुम लोग मुझ से
चाहते थे। मैंने तुम लोगों के ऊपर एक राजा रखा है।
2अब तुम्हारे मार्गदर्शन के लिये एक राजा है। मैं श्वेतकेशी
बूढ़ा हूँ। मेरे पुत्र तुम्हारे साथ हैं। जब मैं एक छोटा
बालक था तब से मैं तुम्हारा मार्ग दर्शक रहा हूँ। 3मैं
यहाँ हूँ। यदि मैंने कोई बुरा काम किया है तो तुम्हें
उसके बारे में यहोवा से और उनके चुने हुए राजा से
कहना चाहिये। क्या मैंने कभी किसी का बैल या गधा
चुराया है? क्या मैंने किसी को कभी धोखा दिया है या
हानि पहुँचाई है? क्या मैंने किसी का कुछ बुरा करने
के लिये कभी किसी से धन या एक जोड़ा जूता भी
लिया है? यदि मैंने इनमें से कोई बुरा काम किया है तो
मैं उसको ठीक करूँगा।”

4इस्राएलियों ने उत्तर दिया, “नहीं! तुमने हम लोगों के
लिये कभी बुरा नहीं किया। तुमने न हम लोगों को
ठगा, न ही तुमने हम लोगों से कभी कुछ लिया।”

5शमूएल ने इस्राएलियों से कहा, “जो तुमने कहा,
यहोवा उसका गवाह है। यहोवा का चुना राजा भी आज
गवाह है। वे दोनों गवाह हैं कि तुमने मुझमें कोई दोष
नहीं पाया।” लोगों ने कहा, “हाँ! यहोवा गवाह है।”

6तब शमूएल ने लोगों से कहा, “यहोवा गवाह है।
उसने मूसा और हारून को चुना। वह तुम्हारे पूर्वजों को
मिस्र से बाहर ले आया। 7अब चुपचाप खड़े रहो अब मैं
तुम्हें उन अच्छें कामों को बताऊँगा जो यहोवा ने तुम्हारे
पूर्वजों और तुम्हारे लिये किये थे। 8याकूब मिस्र गया।
बाद में, मिस्रियों ने उसके वंशजों का जीवन कष्टमय
बना दिया। इसलिए वे सहायता के लिये यहोवा के
सामने रोये। यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा। मूसा
और हारून तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर निकाल ले
आए और इस स्थान में रहने के लिये उनका मार्ग
दर्शन किया।

9“किन्तु तुम्हारे पूर्वज, अपने परमेश्वर यहोवा को
भूल गये। इसलिए यहोवा ने उन्हें सीसरा का दास होने
दिया। सीसरा, हासोर की सेना का सेनापति था। तब
यहोवा ने उन्हें पलिश्तियों और मोआब के राजा का
दास बनाया। वे सभी तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध लड़े।
10किन्तु तुम्हारे पूर्वज सहायता के लिये यहोवा के सामने
गिड़गिड़ाए। उन्होंने कहा, ‘हम लोगों ने पाप किया है।
हम लोगों ने यहोवा को छोड़ा है और झूठे देवताओं बाल
और अश्तोरेत की सेवा की है। किन्तु अब आप हमें
हमारे शत्रुओं से बचायें, हम आपकी सेवा करेंगे।’

11“इसलिए यहोवा ने यरुब्बाल (गिदोन), बदान, बरक,
यिप्तह और शमूएल को वहाँ भेजा। यहोवा ने तुम्हारे
चारों ओर के शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा की और तुम
सुरक्षित रहे। 12किन्तु तब तुमने अम्मोनियों के राजा
नाहाश को अपने विरुद्ध लड़ने के लिये आते देखा।
तुमने कहा, ‘नहीं! हम अपने ऊपर शासन करने के
लिये एक राजा चाहते हैं।’ तुमने यही कहा, यद्यपि

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा राजा पहले से ही था। 13अब,
तुम्हारा चुना राजा यहाँ है। यहोवा ने इस राजा को
तुम्हारे ऊपर नियुक्त किया है। 14परमेश्वर यहोवा तुम्हारी
रक्षा करता रहेगा। किन्तु परमेश्वर तुम्हारी रक्षा तभी
करेगा जब तुम ये करोगे तुम्हें यहोवा का सम्मान और
उसकी सेवा करनी चाहिए। तुम्हें उसके आदेशों के
विरुद्ध लड़ना नहीं चाहिए और तुम्हें तथा तुम्हारे ऊपर
शासन करने वाले राजा को, अपने परमेश्वर यहोवा
का अनुसरण करना चाहिये। यदि तुम इन्हें करते
रहोगे तो परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा। 15किन्तु यदि
तुम यहोवा की आज्ञा पालन नहीं करते हो और उसके
आदेशों के विरुद्ध लड़ते हो, तो वह तुम्हारे विरुद्ध होगा।
यहोवा तुम्हें और तुम्हारे राजा को नष्ट कर देगा!
16अब चुपचाप खड़े रहो और उस अद्भुत काम को
देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करेगा।
17यह गेहूँ की फसल कटने का समय है। मैं यहोवा से
प्रार्थना करूँगा। मैं उन से बिजली की कड़क और वर्षा
की याचना करूँगा। तब तुम समझोगे कि तुमने उस
समय यहोवा के विरुद्ध बुरा किया था जब तुमने एक
राजा की माँग की थी।”

18अत: शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। उसी दिन
यहोवा ने बिजली की कड़क और वर्षा भेजी। इससे
लोग यहोवा तथा शमूएल से बहुत डर गये। 19सभी लोगों
ने शमूएल से कहा, “अपने परमेश्वर यहोवा से तुम
अपने सेवक, हम लोगों के लिये प्रार्थना करो। हम
लोगों को मरने मत दो! हम लोगों ने बहुत पाप किये हैं
और अब एक राजा के लिए माँग करके हम लोगों ने
उन पापों को और बढ़ाया है।”

20शमूएल ने उत्तर दिया, “डरो नहीं। यह सत्य है!
तुमने वे सब बुरे काम किये। किन्तु यहोवा का अनुसरण
करना बन्द मत करो। अपने सच्चे हृदय से यहोवा की
सेवा करो। 21देवमूर्तियाँ मात्र मूर्तियाँ हैं, वे तुम्हारी सहायता
नहीं करेंगी। इसलिए उनकी पूजा मत करो। देवमूर्तियाँ
न तुम्हारी सहायता कर सकती है, न ही रक्षा कर
सकती हैं। वे कुछ भी नहीं हैं!

22“किन्तु यहोवा अपने लोगों को छोड़ेगा नहीं। यहोवा
तुम्हें अपने लोग बनाकर प्रसन्न हुआ था। अत:, अपने
अच्छे नाम की रक्षा के लिए वह तुमको छोड़ेगा नहीं।
23यदि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बन्द कर देता हूँ तो
यह मेरे लिए अपमानजनक होगा। यदि मैं तुम्हारे लिये
प्रार्थना करना बन्द करता हूँ तो यह यहोवा के विरुद्ध
पाप करना होगा। मैं तुम्हें वह शिक्षा दूँगा जो तुम्हारे
लिये अच्छी व उचित है। 24किन्तु तुम्हें भी यहोवा का
सम्मान करते रहना चाहिये। तुम्हें पूरे हृदय से यहोवा
की सेवा सच्चाई के साथ करनी चाहिये। उन अद्भुत
कामों को याद रखो जिन्हें उसने तुम्हारे लिये किये।
25किन्तु यदि तुम हठी हो, और बुरा करते हो तो
परमेश्वर तुम्हें और तुम्हारे राजा को ऐसे झाड़ फेकेंगा
जैसे झाडू से कूड़े को फेंका जाता है।”

शाऊल अपनी पहली गलती करता है

13 अब तक, शाऊल एक वर्ष तक राज्य कर
चुका था और फिर जब शाऊल इस्राएल पर दो
वर्ष शासन कर चुका, 2उसने इस्राएल से तीन हजार
व्यक्ति चुने। उनमें दो हजार वे व्यक्ति थे जो बेतेल के
पहाड़ी प्रदेश के मिकमाश में उसके साथ ठहरे थे और
एक हजार वे व्यक्ति थे जो बिन्यामीन के अंतर्गत गिबा
में योनातान के साथ ठहरे थे। शाऊल ने सेना के अन्य
सैनिकों को उनके अपने घर भेज दिया।

3योनातान ने गिबा में जाकर पलिश्तियों को उनके
डेरे में हराया। पलिश्तियों ने इसके बारे में सुना।
उन्होनें कहा, “हिब्रुओं ने विद्रोह किया है।” शाऊल ने
कहा, “जो कुछ हुआ है उसे हिब्रू लोगों को सुनाओ।”
अत: शाऊल ने लोगों से कहा कि वे पूरे इस्राएल देश में
तुरही बजायें। 4सभी इस्राएलियों ने वह समाचार सुना।
उन्होंने कहा, “शाऊल ने पलिश्ती सेना प्रमुख को मार
डाला है। अब पलिश्ती सचमुच इस्राएलियों से घृणा करते
हैं!”

इस्राएली लोगों को शाऊल से जुड़ने के लिये गिलगाल
में बुलाया गया। 5पलिश्ती इस्राएल से लड़ने के लिए
इकट्ठे हुए। पलिश्तियों के पास छ: हजार रथ और
तीन हजार* घुड़सवार थे। वहाँ इतने अधिक पलिश्ती
सैनिक थे जितने सागर तट पर बालू के कण। पलिश्तियों
ने मिकमाश में डेरा डाला। (मिकमाश बेतावेन के पूर्व
है।)

6इस्राएलियों ने देखा कि वे मुसीबत में हैं। उन्होंने
अपने को जाल में फँसा अनुभव किया। वे गुफाओं
और चट्टानों के अन्तरालों में छिपने के लिए भाग गये।
वे चट्टानों, कुँओं और जमीन के अन्य गढ्ढों में छिप
गये। 7कुछ हिब्रू यरदन नदी पार कर गाद और गिलाद
प्रदेश में भी भाग गए। शाऊल तब तक गिलगाल में
था। उसकी सेना के सभी सैनिक भय से काँप रहे थे।

8शमूएल ने कहा कि वह शाऊल से गिलगाल में
मिलेगा। शाऊल ने वहाँ सात दिन तक प्रतीक्षा की।
किन्तु शमूएल तब भी गिलगाल नहीं पहुँचा था और
सैनिक शाऊल को छोड़ने लगे। 9इसलिए शाऊल ने
कहा, “मेरे लिए होमबलि और मेलबलि लाओ।” तब
शाऊल ने होमबलि चढ़ायी। 10ज्योंही शाऊल ने बलि–भेंट
चढ़ानी समाप्त की, शमूएल आ गया। शाऊल उससे
मिलने गया।

11शमूएल ने पूछा, “यह तुमने क्या कर दिया?” शाऊल
ने उत्तर दिया, “मैंने सैनिकों को अपने को छोड़ते देखा

तीन हजार हिब्रू पाठ में तीस हजार है।

और तुम तब तक यहाँ नहीं थे, और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठा हो रहे थे।" 12मैंने अपने मन में सोचा, "पलिश्ती यहाँ गिलगाल में आकर मुझ पर आक्रमण करेंगे और मैंने अब तक यहोवा से हमारी सहायता करने के लिये याचना नहीं की है। अत: मैंने अपने को विवश किया और मैंने होमबलि चढ़ाई।"

13शमूएल ने कहा, "तुमने मूर्खता का काम किया! तुमने अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। यदि तुमने परमेश्वर के आदेश का पालन किया होता तो परमेश्वर ने तुम्हारे परिवार को सदा के लिये इस्राएल पर शासन करने दिया होता। 14किन्तु अब तुम्हारा राज्य आगे नहीं चलेगा। यहोवा ऐसे व्यक्ति की खोज में था जो उसकी आज्ञा का पालन करना चाहता हो। यहोवा ने उस व्यक्ति को पा लिया है और यहोवा उसे अपने लोगों का नया प्रमुख होने के लिये चुनेगा। तुमने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया इसलिए यहोवा नया प्रमुख चुनेगा।" 15तब शमूएल उठा और उसने गिलगाल को छोड़ दिया।

मिकमाश का युद्ध

शाऊल और उसकी बची सेना ने गिलगाल को छोड़ दिया। वे बिन्यामीन में गिबा को गये। शाऊल ने उन व्यक्तियों को गिना जो अब तक उसके साथ थे। वहाँ लगभग छ: सौ पुरुष थे। 16 शाऊल, उसका पुत्र योनातान और सैनिक बिन्यामीन में गिबा को गए। पलिश्तियों ने मिकमाश में डेरा डाला था। 17पलिश्तियों ने उस क्षेत्र में रहने वाले इस्राएलियों को दण्ड देने का निश्चय किया। अत: उनकी शक्तिशाली सेना ने आक्रमण करने के लिए अपना स्थान छोड़ दिया। पलिश्ती सेना तीन टुकड़ियों में बँटी थी। एक टुकड़ी उत्तर को ओप्रा को जाने वाली सड़क से शुआल के क्षेत्र में गई। 18दूसरी टुकड़ी दक्षिण–पूर्व बेथोरोन को जाने वाली सड़क पर गई और तीसरी टुकड़ी पूर्व में सीमा तक जाने वाली सड़क से गई। यह सड़क सबोईम की घाटी में मरुभूमि की ओर खुलतीथी।

19इस्राएली लोगों में से कोई भी लोहे की चीजें नहीं बना सकता था। उन दिनों इस्राएल में लोहार नहीं थे। पलिश्ती इस्राएलियों को लोहे की चीज़ें बनाना नहीं सिखाते थे क्योंकि पलिश्ती डरते थे कि इस्राएली कहीं लोहे की तलवारें और भाले न बनाने लग जायें। 20केवल पलिश्ती ही लोहे के औजारों पर धार चढ़ा सकते थे। अत: यदि इस्राएली अपने हल की फली, कुदाली, कुल्हाड़ी या दँराती पर धार चढ़ाना चाहते तो उन्हें पलिश्तियों के पास जाना पड़ता था। 21पलिश्ती लोहार एक तिहाई औंस चाँदी हल की फली और कुदाली पर धार चढ़ाने के लिये लेते थे और एक छटाई औंस चाँदी फावड़ी, कुल्हाड़ी और बैलों को चलाने की साँटी के लोहे के सिरे पर धार चढ़ाने के लिये लेते थे। 22इसलिए युद्ध के दिन शाऊल के इस्राएली सैनिकों में से किसी के पास लोहे की तलवार या भाले नहीं थे। केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास लोहे के शस्त्र थे।

23पलिश्ती सैनिकों की एक टुकड़ी मिकमाश के दर्रे की रक्षा कर रही थी।

योनातान पलिश्तियों पर आक्रमण करता है

14 उस दिन, शाऊल का पुत्र योनातान उस युवक से बात कर रहा था, जो उसके शस्त्रों को ले कर चलता था। योनातान ने कहा, "हम लोग घाटी की दूसरी ओर पलिश्तियों के डेरे पर चलें।" किन्तु योनातान ने अपने पिता को नहीं बताया।

2शाऊल एक अनार के पेड़ के नीचे पहाड़ी के सिरे* पर मिग्रोन में बैठा था। यह उस स्थान पर खलिहान के निकट था। शाऊल के साथ उस समय लगभग छ: सौ योद्धा थे। एक व्यक्ति का नाम अहिय्याह था। 3एली शीलो में यहोवा का याजक रह चुका था। अब वह अहिय्याह याजक था। अहिय्याह अब एपोद पहनता था। अहिय्याह ईकाबोद के भाई अहीतूब का पुत्र था। ईकाबोद पीनहास का पुत्र था। पीनहास एली का पुत्र था।

4दर्रे के दोनों ओर एक विशाल चट्टान थी। योनातान ने पलिश्ती डेरे में उस दर्रे से जाने की योजना बनाई। विशाल चट्टान के एक तरफ बोसेस था और उस विशाल चट्टान के दूसरी तरफ सेने था। 5एक विशाल चट्टान उत्तर की मिकमाश को देखती सी खड़ी थी। दूसरी विशाल चट्टान दक्षिण की तरफ गिबा की ओर देखती सी खड़ी थी।

6योनातान ने अपने उस युवक सहायक से कहा जो उस के शस्त्र को ले चलता था, "आओ, हम उन विदेशियों के डेरे में चले। संभव है यहोवा हम लोगों का उपयोग इन लोगों को पराजित करने में करे। यहोवा को कोई नहीं रोक सकता इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि हमारे पास बहुत से सैनिक हैं या थोड़े से सैनिक।"

7योनातान के शस्त्र वाहक युवक ने उससे कहा, "जैसा तुम सर्वोत्तम समझो करो। मैं सब तरह से तुम्हारे साथ हूँ।"

8योनातान ने कहा, "हम चलें! हम लोग घाटी को पार करेंगे और उन पलिश्ती रक्षकों तक जायेंगे। हम लोग उन्हें अपने को देखने देंगे। 9यदि वे हमसे कहते हैं 'तुम वहीं रुको जब तक हम तुम्हारे पास आते हैं,' तो हम लोग वहीं ठहरेंगे, जहाँ हम होंगे। हम उनके पास नहीं जायेंगे। 10किन्तु यदि पलिश्ती लोग यह कहते हैं,

पहाड़ी का सिरा या "गिबा" का सिरा।"

'हमारे पास आओ' तो हम उनके पास तक चढ़ जायेंगे। क्यों? क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से एक संकेत होगा। उसका अर्थ यह होगा कि यहोवा हम लोगों को उन्हें हराने देगा।"

11इसलिये योनातान और उसके सहायक ने अपने को पलिश्ती द्वारा देखने दिया। पलिश्ती रक्षकों ने कहा, "देखो! हिब्रू उन गड्ढों से निकल कर आ रहे हैं जिनमें वे छिपे थे।" **12**किले के पलिश्ती योनातान और उसके सहायक के लिये चिल्लाये "हमारे पास आओ। हम तुम्हें अभी पाठ पढ़ाते हैं!" योनातान ने अपने सहायक से कहा, "पहाड़ी के ऊपर तक मेरा अनुसरण करो। यहोवा ने इस्राएल के लिये पलिश्तियों को दे दिया है!"

13-14इसलिये योनातान ने अपने हाथ और पैरों का उपयोग पहाड़ी पर चढ़ने के लिये किया। उसका सहायक ठीक उसके पीछे चढ़ा। योनातान और उसके सहायक ने उन पलिश्तियों को पराजित किया। पहले आक्रमण में उन्होंने लगभग आधे एकड़ क्षेत्र में बीस पलिश्तियों को मारा। योनातान उन लोगों से लड़ा जो सामने से आक्रमण कर रहे थे और योनातान का सहायक उसके पीछे से आया और उन व्यक्तियों को मारता चला गया जो अभी केवल घायल थे।

15सभी पलिश्ती सैनिक, रणक्षेत्र के सैनिक, डेरे के सैनिक और किले के सैनिक आतंकित हो गये। यहाँ तक की सर्वाधिक वीर योद्धा भी आतंकित हो गये। धरती हिलने लगी और पलिश्ती सैनिक भयानक ढंग से डर गये!

16शाऊल के रक्षकों ने बिन्यामीन देश में गिबा के पलिश्ती सैनिकों को विभिन्न दिशाओं में भागते देखा। **17**शाऊल ने अपने साथ की सेना से कहा, "सैनिकों को गिनो। मैं यह जानना चाहता हूँ कि डेरे को किसने छोड़ा।" उन्होंने सैनिकों को गिना। योनातान और उसका सहायक चले गये थे।

18शाऊल ने अहिय्याह से कहा, "परमेश्वर की पवित्र सन्दूक लाओ!" (उस समय परमेश्वर का पवित्र सन्दूक इस्राएलियों के साथ था।) **19**शाऊल याजक अहिय्याह से बातें कर रहा था। शाऊल परमेश्वर के मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु पलिश्ती डेरे में शोर और अव्यवस्था लगातार बढ़ती जा रही थी। शाऊल धैर्य खो रहा था। अन्त में शाऊल ने याजक अहिय्याह से कहा, "काफी हो चुका! अपने हाथ को नीचे करो और प्रार्थना करना बन्द करो!"

20शाऊल ने अपनी सेना इकट्ठी की और युद्ध में चला गया। पलिश्ती सैनिक सचमुच घबरा रहे थे! वे अपनी तलवारों से आपस में ही एक दूसरे से युद्ध कर रहे थे।

21वहाँ हिब्रू भी थे जो इसके पूर्व पलिश्तियों की सेवा में थे और जो पलिश्ती डेरे में रुके थे। किन्तु अब उन हिब्रुओं ने शाऊल और योनातान के साथ के इस्राएलों का साथ दिया। **22**उन इस्राएलियों ने जो एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में छिपे थे, पलिश्ती सैनिकों के भागने की बात सुनी। सो इन इस्राएलियों ने भी युद्ध में साथ दिया और पलिश्तियों का पीछा करना आरम्भ किया। **23**इस प्रकार यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों की रक्षा की। युद्ध बेतावेन के परे पहुँच गया। सारी सेना शाऊल के साथ थी, उसके पास लगभग दस हजार पुरुष थे। एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के हर नगर में युद्ध का विस्तार हो गया था।

शाऊल दूसरी गलती करता है

24किन्तु शाऊल ने उस दिन एक बड़ी गलती की। इस्राएली भूखे और थके थे। यह इसलिए हुआ कि शाऊल ने लोगों को यह प्रतिज्ञा करने को विवश किया: शाऊल ने कहा, "यदि कोई व्यक्ति सन्ध्या होने से पहले भोजन करता है अथवा मेरे द्वारा शत्रु को पराजित करने के पहले भोजन करता है तो वह व्यक्ति दण्डित किया जाएगा!" इसलिए किसी भी इस्राएली सैनिक ने भोजन नहीं किया।

25-26 युद्ध के कारण लोग जंगलों में चले गए। उन्होंने वहाँ भूमि पर पड़ा एक शहद का छत्ता देखा। इस्राएली उस स्थान पर आए जहाँ शहद का छत्ता था। लोग भूखे थे, किन्तु उन्होंने तनिक भी शहद नहीं पिया। वे उस प्रतिज्ञा को तोड़ने से भयभीत थे। **27**किन्तु योनातान उस प्रतिज्ञा के बारे में नहीं जानता था। योनातान ने यह नहीं सुना था कि उसके पिता ने उस प्रतिज्ञा को करने के लिये लोगों को विवश किया है। योनातान के हाथ में एक छड़ी थी। उसने शहद के छत्ते में उसके सिरे को धंसाया। उसने कुछ शहद निकाला और उसे चाटा और उसने अपने को स्वस्थ अनुभव किया।

28सैनिकों में से एक ने योनातान से कहा, "तुम्हारे पिता ने एक विशेष प्रतिज्ञा करने के लिये सैनिकों को विवश किया है। तुम्हारे पिता ने कहा है कि जो कोई आज खायेगा, दण्डित होगा। यही कारण है कि पुरूषों ने कुछ भी खाया नहीं। यही कारण है कि पुरुष कमजोर हैं।"

29योनातान ने कहा, "मेरे पिता ने लोगों के लिये परेशानी उत्पन्न की है! देखो इस जरा से शहद को चाटने से मैं कितना स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ! **30**बहुत अच्छा होता कि लोग वह भोजन करते जो उन्होनें आज शत्रुओं से लिया था। हम बहुत अधिक पलिश्तियों को मार सकते थे!"

31उस दिन इस्राएलियों ने पलिश्तियों को हराया। वे उनसे मिकमाश से अय्यालोन तक के पूरे मार्ग पर लड़े। क्योंकि लोग बहुत भूखे और थके हुए थे। **32**उन्होंने पलिश्तियों से भेड़ें, गायें और बछड़े लिये थे। उस समय इस्राएल के लोग इतने भूखे थे कि उन्होनें उन जानवरों

को जमीन पर ही मारा और उन्हें खाया। जानवरों में
तब तक खून था!
33एक व्यक्ति ने शाऊल से कहा, "देखो! लोग यहोवा
के विरुद्ध पाप कर रहे हैं। वे ऐसा माँस खा रहे हैं
जिसमें खून है!"
शाऊल ने कहा, "तुम लोगों ने पाप किया है! यहाँ
एक विशाल पत्थर लुढ़काकर लाओ।" 34तब शाऊल
ने कहा, "लोगों के पास जाओ और कहो कि हर एक
व्यक्ति अपना बैल और भेड़ें मेरे पास यहाँ लाये। तब
लोगों को अपने बैल और भेड़ें यहाँ मारनी चाहिये।
यहोवा के विरुद्ध पाप मत करो। वह माँस न खाओ
जिसमें खून हो।" उस रात हर एक व्यक्ति अपने जानवरों
को लाया और उन्हें वहाँ मारा। 35तब शाऊल ने यहोवा
के लिये एक वेदी बनाई। शाऊल ने यहोवा के लिये
स्वयं वह वेदी बनानी आरम्भ की!
36शाऊल ने कहा, "हम लोग आज रात को पलिश्तियों
का पीछा करें। हम लोग हर वस्तु ले लेंगे। हम उन
सभी को मार डालेंगे।" सेना ने उत्तर दिया, "वैसे ही
करो जैसे तुम ठीक समझते हो।" किन्तु याजक ने
कहा, "हमें परमेश्वर से पूछने दो।"
37अत: शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, "क्या मुझे
पलिश्तियों का पीछा करने जाना चाहिए? क्या तू हमें
पलिश्तियों को हराने देगा?" किन्तु परमेश्वर ने शाऊल
को उस दिन उत्तर नहीं दिया।
38इसलिए शाऊल ने कहा, "मेरे पास सभी प्रमुखों
को लाओ। हम लोग मालूम करें कि आज किसने पाप
किया है। 39मैं इस्राएल की रक्षा करने वाले यहोवा की
शपथ खा कर यह प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि मेरे अपने पुत्र
योनातान ने भी पाप किया हो तो वह अवश्य मरेगा।"
सेना में किसी ने भी कुछ नहीं कहा।
40तब शाऊल ने सभी इस्राएलियों से कहा, "तुम लोग
इस ओर खड़े हो। मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर
खड़े होगें।" सैनिकों ने उत्तर दिया, "महाराज! आप जैसा
चाहें।"
41तब शाऊल ने प्रार्थना की, "इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा, मैं तेरा सेवक हूँ आज तू मुझे उत्तर क्यों नहीं दे
रहा है? यदि मैंने या मेरे पुत्र योनातान ने पाप किया है
तो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा तू उरीम दे और यदि
तेरे लोग इस्राएलियों ने पाप किया है तो तुम्मिम दें।
शाऊल और योनातान धर लिए गए और लोग छूट
गए। 42शाऊल ने कहा, "उन्हें फिर से फेंको कि कौन
पाप करनेवाला है मैं या मेरा पुत्र योनातान।" योनातान
चुन लिया गया।
43शाऊल ने योनातान से कहा, "मुझे बताओ कि
तुमने क्या किया है?" योनातान ने शाऊल से कहा,
"मैंने अपनी छड़ी के सिरे से केवल थोड़ा सा शहद चाटा
था। क्या मुझे वह करने के कारण मरना चाहिये?"
44शाऊल ने कहा, "यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरा नहीं
करता हूँ तो परमेश्वर मेरे लिये बहुत बुरा करे। योनातान
को मरना चाहिये!"
45किन्तु सैनिकों ने शाऊल से कहा, "योनातान ने
आज इस्राएल को बड़ी विजय तक पहुँचाया। क्या
योनातान को मरना ही चाहिए? कभी नहीं! हम लोग
परमेश्वर की शपथ खाकर वचन देते हैं कि योनातान
का एक बाल भी बाँका नहीं होगा। परमेश्वर ने आज
पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने में योनातान की सहायता
की है!" इस प्रकार लोगों ने योनातान को बचाया। उसे
मृत्युदण्ड नहीं दिया गया।
46शाऊल ने पलिश्तियों का पीछा नहीं किया। पलिश्ती
अपने स्थान को लौट गये।

शाऊल का इस्राएल के शत्रुओं से युद्ध

47शाऊल ने इस्राएल पर पूरा अधिकार जमा लिया
और दिखा दिया कि वह राजा है। शाऊल इस्राएल के
चारों ओर रहने वाले शत्रुओं से लड़ा। शाऊल, अम्मोनी,
मोआबी, सोबा के राजा एदोम, और पलिश्तियों से लड़ा।
जहाँ कहीं शाऊल गया, उसने इस्राएल के शत्रुओं को
पराजित किया। 48शाऊल बहुत वीर था। उसने
अमालेकियों को हराया। शाऊल ने इस्राएल को
उसके उन शत्रुओं से बचाया जो इस्राएल के लोगों से
उनकी सम्पत्ति छीन लेना चाहते थे। 49शाऊल के पुत्र
थे योनातान, यिशवी और मलकीश। शाऊल की बड़ी
पुत्री का नाम मेरब था। शाऊल की छोटी पुत्री का नाम
मीकल था। 50शाऊल की पत्नी का नाम अहीनोअम
था। अहीनोअम अहीमास की पुत्री थी।
शाऊल की सेना के सेनापति का नाम अब्नेर था,
जो नेर का पुत्र था। नेर शाऊल का चाचा था। 51शाऊल
का पिता कीश और अब्नेर का पिता नेर,अबीएल के
पुत्र थे।
52शाऊल अपने जीवन भर वीर रहा और पलिश्तियों
के विरुद्ध दृढ़ता से लड़ा। शाऊल जब भी कभी किसी
व्यक्ति को ऐसा वीर देखता जो शक्तिशाली होता तो वह
उसे ले लेता और उसे उन सैनिकों की टुकड़ी में रखता
जो उसके समीप रहते और उसकी रक्षा करते थे।

शाऊल का अमालेकियों को नष्ट करना

15 शमूएल ने शाऊल से कहा, "यहोवा ने मुझे
अपने इस्राएली लोगों पर राजा के रूप में तुम्हारा
अभिषेक करने के लिये भेजा था। अब यहोवा का
सन्देश सुनो। 2सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: 'जब इस्राएली
मिस्र से बाहर आये तब अमालेकियों ने उन्हें कनान
पहुँचाने से रोकने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि
अमालेकियों ने उन्हें क्या किया। 3अब जाओ और
अमालेकियों से युद्ध करो। तुम्हें अमालेकियों और उनकी

सभी चीज़ों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिये। कुछ भी जीवित न रहने दो, तुम्हें सभी पुरुषों और स्त्रियों को मार डालना चाहिये। तुम्हें सभी बच्चों और शिशुओं को मार डालना चाहिए। तुम्हें उनकी सभी गायों, भेड़ों, ऊँटों और गधों को मार डालना चाहिये।'"

4शाऊल ने तलाईम में सेना एकत्रित की। उसमें दो लाख पैदल सैनिक और दस हजार अन्य सैन्य पुरुष थे। इनमें यहूदा के लोग भी सम्मिलित थे। 5तब शाऊल अमालेक नगर को गया और वहाँ उसने घाटी में उनकी प्रतीक्षा की। 6शाऊल ने केनियों से कहा, "चले जाओ, अमालेकियों को छोड़ दो। तब मैं तुम लोगों को अमालेकियों के साथ नष्ट नहीं करूँगा। तुम लोगों ने इस्राएलियों के प्रति दया दिखाई थी जब वे मिस्र से आये थे।" इसलिए केनी लोगों ने अमालेकियों को छोड़ दिया।

7शाऊल ने अमालेकियों को हराया। उसने उनसे हवीला से मिस्र की सीमा शूर तक निरन्तर युद्ध किया। 8शाऊल ने अगाग को जीवित पकड़ लिया। अगाग अमालेकियों का राजा था। अगाग की सेना के सभी व्यक्तियों को शाऊल ने मार डाला। 9किन्तु शाऊल और इस्राएल के सैनिकों ने अगाग को जीवित रहने दिया। उन्होंने सर्वोत्तम भेड़ों, मोटी तगड़ी गायों और मेमनों को भी रख लिया। उन्होंने रखने योग्य सभी चीज़ों को रख लिया और उन्होंने उन सभी चीज़ों को नष्ट कर दिया जो किसी काम की न थी।

शमूएल का शाऊल को उसके पाप के बारे में बताना

10शमूएल को यहोवा का सन्देश आया। 11यहोवा ने कहा, "शाऊल ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया है। इसलिए मुझे इसका अफसोस है कि मैंने उसे राजा बनाया। वह उन कामों को नहीं कर रहा है जिन्हें करने का आदेश मैं उसे देता हूँ।" शमूएल भड़क उठा और फिर उसने रात भर यहोवा की प्रार्थना की। 12शमूएल अगले सवेरे उठा और शाऊल से मिलने गया। किन्तु लोगों ने बताया, "शाऊल यहूदा में कर्मेल नामक नगर को गया है। शाऊल वहाँ अपने सम्मान में एक पत्थर की यादगार बनाने गया था। तब शाऊल ने कई स्थानों की यात्रा की और अन्त में गिलगाल को चला गया।"

इसलिये शमूएल वहाँ गया जहाँ शाऊल था। शाऊल ने अमालेकियों से ली गई चीज़ों का पहला भाग ही भेंट में चढ़ाया था। शाऊल उन्हें होम बलि के रूप में यहोवा को भेंट चढ़ा रहा था। 13शमूएल शाऊल के पास पहुँचा। शाऊल ने कहा, स्वागत, "यहोवा आपको आशीर्वाद दे! मैंने यहोवा के आदेशों का पालन किया है।" 14किन्तु शमूएल ने कहा, "तो मैं ये आवाजें क्या सुन रहा हूँ? मैं भेड़ और पशुओं की आवाज क्यों सुन रहा हूँ?"

15शाऊल ने उत्तर दिया, "सैनिकों ने उन्हें अमालेकियों से लिया। सैनिकों ने सर्वोत्तम भेड़ों और पशुओं को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि के रूप में जलाने के लिए बचा लिया है। किन्तु हम लोगों ने अन्य सभी चीज़ों को नष्ट कर दिया है।"

16शमूएल ने शाऊल से कहा, "रुको! मुझे तुमसे वही कहने दो जिसे पिछली रात यहोवा ने मुझसे कहा है।" शाऊल ने उत्तर दिया, "मुझे बताओ।"

17शमूएल ने कहा, "बीते समय में, तुमने यही सोचा था कि तुम महत्वपूर्ण नहीं हो। किन्तु तब भी तुम इस्राएल के परिवार समूहों के प्रमुख बन गए। यहोवा ने तुम्हें इस्राएल का राजा चुना। 18यहोवा ने तुम्हें एक विशेष सेवाकार्य के लिये भेजा। यहोवा ने कहा, 'जाओ और उन सभी बुरे अमालेकियों को नष्ट करो! उनसे तब तक लड़ते रहो जब तक वे नष्ट न हो जायें!' 19किन्तु तुमने यहोवा की नहीं सुनी। तुम उन चीजों को रखना चाहते थे। इसलिये तुमने वह किया जिसे यहोवा ने बुरा कहा!"

20शाऊल ने कहा, "किन्तु मैंने तो यहोवा की आज्ञा का पालन किया। मैं वहाँ गया जहाँ यहोवा ने मुझे भेजा। मैंने सभी अमालेकियों को नष्ट किया। मैं केवल उनके राजा अगाग को वापस लाया। 21सैनिकों ने सर्वोत्तम भेड़ें और पशु गिलगाल में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि देने के लिये चुने।"

22किन्तु शमूएल ने उत्तर दिया, "यहोवा को इन दो में से कौन अधिक प्रसन्न करता है: होमबलियाँ और बलियाँ या यहोवा की आज्ञा का पालन करना? यह अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया जाय इसकी अपेक्षा कि उसे बलि-भेंट की जाये। यह अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की बातें सुनी जाये इसकी अपेक्षा कि मेढों से चर्बी-भेंट की जाय। 23आज्ञा के पालन से इन्कार करना जादूगरी करने के पाप जैसा है। हठी होना और मनमानी करना मूर्तियों की पूजा करने जैसा पाप है। तुमने यहोवा की आज्ञा मानने से इन्कार किया। इसी कारण यहोवा अब तुम्हें राजा के रूप में स्वीकार करने से इन्कार करता है।"

24तब शाऊल ने शमूएल से कहा, "मैंने पाप किया है। मैंने यहोवा के आदेशों को नहीं माना है और मैंने वह नहीं किया है जो तुमने करने को कहा। मैं लोगों से डरता था इसलिए मैंने वह किया जो उन्होंने कहा। 25अब मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे पाप को क्षमा करो। मेरे साथ लौटो जिससे मैं यहोवा की उपासना कर सकूँ।"

26किन्तु शमूएल ने शाऊल से कहा, "मैं तुम्हारे साथ नहीं लौटूँगा। तुमने यहोवा के आदेश को नकारा है और अब यहोवा तुम्हें इस्राएल के राजा के रूप में नकार रहा है।"

27जब शमूएल उसे छोड़ने के लिये मुड़ा, शाऊल ने
शमूएल के लबादे को पकड़ लिया। लबादा फट गया।
28शमूएल ने शाऊल से कहा, "तुमने मेरे लबादे को
फाड़ दिया। इसी प्रकार यहोवा ने आज इस्राएल के राज्य
को तुमसे फाड़ दिया है। यहोवा ने राज्य तुम्हारे मित्रों में
से एक को दे दिया है। वह व्यक्ति तुमसे अच्छा है।
29यहोवा इस्राएल का परमेश्वर है। यहोवा शाश्वत है।
यहोवा न तो झूठ बोलता है, न ही अपना मन बदलता
है। यहोवा मनुष्य की तरह नहीं है जो अपने इरादे
बदलते हैं।"

30शाऊल ने उत्तर दिया, "ठीक है, मैंने पाप किया!
किन्तु कृपया मेरे साथ लौटो। इस्राएल के लोगों और
प्रमुखों के सामने मुझे कुछ सम्मान दो। मेरे साथ लौटो
जिससे मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की उपासना कर
सकूँ।" 31शमूएल शाऊल के साथ लौट गया और शाऊल
ने यहोवा की उपासना की।

32शमूएल ने कहा, "अमालेकियों के राजा अगाग,
को मेरे पास लाओ।" अगाग शमूएल के सामने आया।
अगाग जंजीरों में बंधा था। अगाग ने सोचा, "निश्चय ही
यह मुझे मारेगा नहीं।"

33किन्तु शमूएल ने अगाग से कहा, "तुम्हारी तलवारों
ने बच्चों को उनकी माताओं से छीना। अत: अब तुम्हारी
माँ का कोई बच्चा नहीं रहेगा।" और शमूएल ने गिलगाल
में यहोवा के सामने अगाग के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।
34तब शमूएल वहाँ से चला और रामा पहुँचा और
शाऊल अपने घर गिबा को गया। 35उसके बाद शमूएल
ने अपने पूरे जीवन में शाऊल को नहीं देखा। शमूएल
शाऊल के लिये बहुत दु:खी रहा और यहोवा को बड़ा
दु:ख था कि उसने शाऊल को इस्राएल का राजा बनाया।

शमूएल का बेतलेहेम को जाना

16 यहोवा ने शमूएल से कहा, "तुम शाऊल के
लिये कब तक दु:खी रहोगे? मैंने शाऊल को
इस्राएल का राजा होना अस्वीकार कर दिया है! अपनी
सींग तेल से भरो और चल पड़ो। मैं तुम्हें यिशै नाम के
एक व्यक्ति के पास भेज रहा हूँ। यिशै बेतलेहेम में रहता
है। मैंने उसके पुत्रों में से एक को नया राजा चुना है।"

2किन्तु शमूएल ने कहा, "यदि मैं जाऊँ, तो शाऊल
इस समाचार को सुनेगा। तब वह मुझे मार डालने का
प्रयत्न करेगा।"

यहोवा ने कहा, "बेतलेहेम जाओ। एक बछड़ा अपने
साथ ले जाओ। यह कहो, 'मैं यहोवा को बलि चढ़ाने
आया हूँ।' 3यिशै को बलि के समय आमंत्रित करो। तब
मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है। तुम्हें उस
व्यक्ति का अभिषेक करना चाहिये जिसे मैं दिखाऊँ।"

4शमूएल ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को
कहा था। शमूएल बेतलेहेम गया। बेतलेहेम के बुजुर्ग
भय से काँप उठे। वे शमूएल से मिले और उन्होंने उससे
पूछा, "क्या आप शान्तिपूर्वक आए हैं?"

5शमूएल ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं शान्तिपूर्वक आया हूँ।
मैं यहोवा को बलि-भेंट करने आया हूँ। अपने को
तैयार करो और मेरे साथ बलि-भेंट में आओ।" शमूएल
ने यिशै और उसके पुत्रों को तैयार किया। तब शमूएल
ने उन्हें आने और बलि-भेंट में भाग लेने के लिये
आमन्त्रित किया। 6जब यिशै और उसके पुत्र आए, तो
शमूएल ने एलीआब को देखा। शमूएल ने सोचा, "निश्चय
ही यही वह व्यक्ति है जिसे यहोवा ने चुना है। 7किन्तु
यहोवा ने शमूएल से कहा, "एलीआब लम्बा और सुन्दर
है किन्तु उसके बारे में मत सोचो। एलीआब लम्बा है
किन्तु उसके बारे में मत सोचो। परमेश्वर उस चीज़ को
नहीं देखता जिसे साधारण व्यक्ति देखते हैं। लोग व्यक्ति
के बाहरी रूप को देखते हैं, किन्तु यहोवा व्यक्ति के
हृदय को देखता है। एलीआब उचित व्यक्ति नहीं है।"

8तब यिशै ने अपने दूसरे पुत्र अबीनादाब को बुलाया।
अबीनादाब शमूएल के पास से गुजरा। किन्तु शमूएल ने
कहा, "नहीं, यह भी वह व्यक्ति नहीं है कि जिसे यहोवा
ने चुना है।"

9तब यिशै ने शम्मा को शमूएल के पास से गुजरने
को कहा। किन्तु शमूएल ने कहा, "नहीं, यहोवा ने इस
व्यक्ति को भी नहीं चुना है।"

10यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल को दिखाया।
किन्तु शमूएल ने यिशै को कहा, "यहोवा ने इन व्यक्तियों
में से किसी को भी नहीं चुना है।"

11तब शमूएल ने यिशै से पूछा, "क्या तुम्हारे सभी पुत्र
ये ही हैं?" यिशै ने उत्तर दिया,"नहीं, मेरा सबसे छोटा
एक और पुत्र है, किन्तु वह भेड़ों की रखवाली कर रहा
है।" शमूएल ने कहा, "उसे बुलाओ। उसे यहाँ लाओ।
हम लोग तब तक खाने नहीं बैठेंगे जब तक वह आ
नहीं जाता।"

12यिशै ने किसी को अपने सबसे छोटे पुत्र को लाने
के लिये भेजा। यह पुत्र सुन्दर और सुनहरे बालों वाला*
युवक था। यह बहुत सुन्दर था। यहोवा ने शमूएल से
कहा, "उठो, इसका अभिषेक करो। यही है वह।"

13शमूएल ने तेल से भरा सींग उठाया और उस
विशेष तेल को यिशै के सबसे छोटे पुत्र के सिर पर
उसके भाईयों के सामने डाल दिया। उस दिन से यहोवा
की आत्मा दाऊद पर तीव्रता से आती रही। तब शमूएल
रामा को लौट गया।

दुष्टात्मा का शाऊल को परेशान करना

14यहोवा की आत्मा ने शाऊल को त्याग दिया। तब
यहोवा ने शाऊल पर एक दुष्टात्मा भेजी। उसने उसे

सुनहरेबालों वाला अथवा "पीत-रक्त रंग का" हिब्रू शब्द का अर्थ "लाल" है।

बहुत परेशान किया।15सेवकों ने शाऊल से कहा, "परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा तुमको परेशान कर रही है। 16हम लोगों को आदेश दो कि हम लोग किसी की खोज करे जो वीणा बजायेगा। यदि दुष्टात्मा यहोवा के यहाँ से तुम्हारे ऊपर आई है तो जब वह व्यक्ति वीणा बजायेगा तब वह दुष्टआत्मा तुमको अकेला छोड़ देगी और तुम स्वस्थ अनुभव करोगे।"

17अत: शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, "ऐसे व्यक्ति की खोज करो जो वीणा अच्छी बजाता है और उसे मेरे पास लाओ।"

18सेवकों में से एक ने कहा, "बेतलेहेम में रहने वाला यिशै नाम का एक व्यक्ति है। मैंने यिशै के पुत्र को देखा है। वह जानता है कि वीणा कैसे बजाई जाती है। वह एक वीर व्यक्ति भी है और अच्छी प्रकार लड़ता है। वह जागरूक है। वह सुन्दर है और यहोवा उसके साथ है।"

19इसलिये शाऊल ने यिशै के पास दूत भेजा। उन्होंने यिशै से वह कहा जो शाऊल ने कहा था। "तुम्हारा पुत्र दाऊद नाम का है। वह तुम्हारी भेड़ों की रखवाली करता है। उसे मेरे पास भेजो।"

20फिर यिशै ने शाऊल को भेंट करने के लिये कुछ चीज़ें तैयार की। यिशै ने एक गधा, कुछ रोटियाँ और एक मशक दाखमधु और एक बकरी का बच्चा लिया। यिशै ने वे चीज़ें दाऊद को दी, और उसे शाऊल के पास भेज दिया। 21इस प्रकार दाऊद शाऊल के पास गया और उसके सामने खड़ा हुआ। शाऊल ने दाऊद से बहुत स्नेह किया। फिर दाऊद ने शाऊल को अपना शस्त्रवाहक बना लिया। 22शाऊल ने यिशै के पास सूचना भेजी, "दाऊद को मेरे पास रहने और मेरी सेवा करने दो। वह मुझे बहुत पसन्द करता है।"

23जब कभी परमेश्वर की ओर से आत्मा शाऊल पर आती, तो दाऊद अपनी वीणा उठाता और उसे बजाने लगता। दुष्ट आत्मा शाऊल को छोड़ देती और वह स्वस्थ अनुभव करने लगता।

गोलियत का इस्राएल को चुनौती देना

17 पलिश्तियों ने अपनी सेना युद्ध के लिये इकट्ठी की। वे यहूदा स्थित सोको में युद्ध के लिए एकत्र हुए। उनका डेरा सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मीम नामक नगर में था।

2शाऊल और इस्राएली सैनिक भी वहाँ एक साथ एकत्रित हुए। उनका डेरा एला की घाटी में था। शाऊल के सैनिक मोर्चा लगाये पलिश्तियों से युद्ध करने के लिये तैयार थे। 3पलिश्ती एक पहाड़ी पर थे और इस्राएली दूसरी पर। घाटी इन दोनों पहाड़ियों के बीच में थी।

4पलिश्तियों में एक गोलियत नाम का अजेय योद्धा था। गोलियत गत का था। गोलियत लगभग नौ फीट ऊँचा था। गोलियत पलिश्ती डेरे से बाहर आया। 5उसके सिर पर काँसे का टोप था। उसने पट्टीदार कवच का कोट पहन रखा था। यह कवच काँसे का बना था और इसका तौल लगभग एक सौ पच्चीस पौंड* था। 6गोलियत ने अपने पैरों में काँसे के रक्षा कवच पहने थे। उसके पास काँसे का भाला था जो उसकी पीठ पर बंधा था। 7गोलियत के भाले का फल जुलाहे की छड़ की तरह था। भाले की फल की तोल पन्द्रह पौंड थी। गोलियत का सहायक गोलियत की ढाल को लिये हुए उसके आगे-आगे चल रहा था।

8गोलियत बाहर निकला और उसने इस्राएली सैनिकों को जोर से पुकार कर कहा, "तुम्हारे सभी सैनिक युद्ध के लिये मोर्चा क्यों लगाये हुए हैं? तुम शाऊल के सेवक हो। मैं एक पलिश्ती हूँ। इसलिये किसी एक व्यक्ति को चुनों और उसे मुझसे लड़ने को भेजो। 9यदि वह व्यक्ति मुझे मार डालता है तो हम पलिश्ती तुम्हारे दास हो जाएंगे। किन्तु यदि मैं उसे जीत लूँ और तुम्हारे व्यक्ति को मार डालूँ तो तुम हमारे दास हो जाना। तब तुम हमारी सेवा करोगे!"

10पलिश्ती ने यह भी कहा, "आज मैं खड़ा हूँ और इस्राएल की सेना का मजाक उड़ा रहा हूँ! मुझे अपने में से एक के साथ लड़ने दो!"

11शाऊल और इस्राएली सैनिकों ने जो गोलियत कहा था, उसे सुना और वे बहुत भयभीत हो उठे।

दाऊद का युद्ध क्षेत्र को जाना

12दाऊद यिशै का पुत्र था। यिशै एप्राती परिवार के यहूदा बेतलेहेम से था। यिशै के आठ पुत्र थे। शाऊल के समय में यिशै एक बूढ़ा आदमी था। 13यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के साथ युद्ध में गये थे। प्रथम पुत्र एलीआब था। दूसरा पुत्र अबीनादाब था और तीसरा पुत्र शम्मा था। 14दाऊद सबसे छोटा पुत्र था। तीनों पुत्र शाऊल की सेना में थे। 15किन्तु दाऊद कभी-कभी बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़ों की रखवाली के लिये शाऊल के पास से चला जाता था।

16पलिश्ती गोलियत हर एक प्रात: एवं सन्ध्या को बाहर आता था और इस्राएल की सेना के सामने खड़ा हो जाता था। गोलियत ने चालीस दिन तक इस प्रकार इस्राएल का मजाक उड़ाया।

17एक दिन यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, "पके अन्न की टोकरी और इन दस रोटियों को डेरे में अपने भाईयों के पास ले जाओ। 18पनीर की इन दस पिंडियों को भी एक हजार सैनिकों वाली अपने भाई की टुकड़ी के संचालक अधिकारी के लिये ले जाओ। देखो कि तुम्हारे भाई कैसे हैं। कुछ ऐसा लाओ जिससे मुझे पता चले कि तुम्हारे भाई ठीक-ठाक हैं। 19तुम्हारे भाई

एक सौ पच्चीस पौंड शाब्दिक "पाँच हजार शेकेल।"

शाऊल के साथ हैं और इस्राएल के सारे सैनिक एला
घाटी में हैं। वे पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं।"
20सवेरे तड़के ही दाऊद, ने भेड़ों की रखवाली दूसरे
गड़रिये को सौंपी। दाऊद ने भोजन लिया और वहाँ के
लिए चल पड़ा जहाँ के लिये यिशै ने कहा था। दाऊद
अपनी गाड़ी को डेरे में ले गया। उस समय सैनिक
लड़ाई में अपने मोर्चे संभालने जा रहे थे जब दाऊद वहाँ
पहुँचा। सैनिक अपना युद्ध उद्घोष करने लगे। 21इस्राएली
और पलिश्ती अपने पुरुषों को युद्ध में एक-दूसरे से
भिड़ने के लिये इकट्ठा कर रहे थे।
22दाऊद ने भोजन और चीजों को उस व्यक्ति के पास
छोड़ा जो सामग्री का वितरण करता था। दाऊद दौड़
कर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ इस्राएली सैनिक थे।
दाऊद ने अपने भाईयों के विषय में पूछा। 23दाऊद ने
अपने भाईयों के साथ बात करनी आरम्भ की। उसी
समय वह पलिश्ती वीर योद्धा जिसका नाम गोलियत था
और जो गत का निवासी था, पलिश्ती सेना से बाहर
आया। पहले की तरह गोलियत ने इस्राएल के विरुद्ध
वही बातें चिल्लाकर कहीं। 24इस्राएली सैनिकों ने गोलियत
को देखा और वे भाग खड़े हुए। वे सभी उससे भयभीत
थे।
25इस्राएली व्यक्तियों में से एक ने कहा, "अरे लोगों,
तुममें से किसी ने उसे देखा है! उसे देखो! वह गोलियत
आ रहा है जो बार-बार इस्राएल का मजाक उड़ाता है।
जो कोई उस व्यक्ति को मार देगा, धनी हो जायेगा! राजा
शाऊल उसे बहुत धन देगा। शाऊल अपनी पुत्री का
विवाह भी उस व्यक्ति से कर देगा, जो गोलियत को
मारेगा और शाऊल उस व्यक्ति के परिवार को इस्राएल
में स्वतन्त्र कर देगा।"
26दाऊद ने समीप खड़े आदमी से पूछा, "उसने क्या
कहा? इस पलिश्ती को मारने और इस्राएल के इस
अपमान को दूर करने का पुरस्कार क्या है? अन्तत:
यह गोलियत है ही क्या? यह बस एक विदेशी मात्र है।
गोलियत एक पलिश्ती से अधिक कुछ नहीं। वह क्यों
सोचता है कि वह साक्षात् परमेश्वर की सेना के विरुद्ध
बोल सकता है?"
27इसलिए इस्राएलियों ने गोलियत को मारने के लिये
पुरस्कार के बारे में बताया। 28दाऊद के बड़े भाई
एलीआब ने दाऊद को सैनिकों से बातें करते सुना।
एलीआब दाऊद पर क्रोधित हुआ। एलीआब ने दाऊद से
पूछा, "तुम यहाँ क्यों आये? मरुभूमि में उन थोड़ी सी
भेड़ों को किस के पास छोड़कर आये हो? मैं जानता हूँ
कि तुम यहाँ क्यों आये हो! तुम वह करना नहीं चाहते
जो तुमसे करने को कहा गया था। तुम केवल यहाँ युद्ध
देखने के लिये आना चाहते थे!"
29दाऊद ने कहा, "ऐसा मैंने क्या किया है? मैंने कोई
गलती नहीं की! मैं केवल बातें कर रहा था।" 30दाऊद
दूसरे लोगों की तरफ मुड़ा और उनसे वे ही प्रश्न किये।
उन्होंने दाऊद को वे ही पहले जैसे उत्तर दिये।
31कुछ व्यक्तियों ने दाऊद को बातें करते सुना। उन्होंने
दाऊद के बारे में शाऊल से कहा। शाऊल ने आदेश
दिया कि वे दाऊद को उसके पास लाएं। 32दाऊद ने
शाऊल से कहा, "किसी व्यक्ति को उसके कारण
हतोत्साहित मत होने दो। मैं आपका सेवक हूँ। मैं इस
पलिश्ती से लड़ने जाऊँगा।"
33शाऊल ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जा सकते और
इस पलिश्ती गोलियत से नहीं लड़ सकते। तुम सैनिक
भी नहीं हो!* तुम अभी बच्चे हो और गोलियत जब
बच्चा था, तभी से युद्धों में लड़ रहा है।"
34किन्तु दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं आपका सेवक
हूँ और मैं अपने पिता की भेड़ों की रखवाली भी करता
रहा हूँ। यदि कोई शेर या रीछ आता और झुंड से किसी
भेड़ को उठा ले जाता। 35तो मैं उसका पीछा करता था।
मैं उस जंगली जानवर पर आक्रमण करता था और
उसके मुँह से भेड़ को बचा लेता था और उससे युद्ध
करता था तथा उसे मार डालता था। 36मैंने एक शेर
और एक रीछ को मार डाला है! मैं उस विदेशी गोलियत
को वैसे ही मार डालूँगा। गोलियत मरेगा, क्योंकि उसने
साक्षात परमेश्वर की सेना का मजाक उड़ाया है। 37यहोवा
ने मुझे शेर और रीछ से बचाया है। यहोवा इस पलिश्ती
गोलियत से भी मेरी रक्षा करेगा।"
शाऊल ने दाऊद से कहा, "जाओ यहोवा तुम्हारे साथ
हो।" 38शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहनाये। शाऊल
ने एक काँसे का टोप दाऊद के सिर पर रखा और
उसके शरीर पर कवच पहनाया। 39दाऊद ने तलवार
ली और चारों ओर चलने का प्रयत्न किया। इस प्रकार
दाऊद ने शाऊल की वर्दी को पहनने का प्रयत्न किया।
किन्तु दाऊद को उन भारी चीज़ों को पहनने का अभ्यास
नहीं था। दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं इन चीज़ों के
साथ नहीं लड़ सकता। मेरा अभ्यास इनके लिये नहीं
है।" इसलिये दाऊद ने उन सब को उतार दिया। 40दाऊद
ने अपनी छड़ी अपने हाथों में ली। घाटी से दाऊद ने
पाँच चिकने पत्थर चुने। उसने पाँचों पत्थरों को अपने
गड़रिये वाले थैले में रखा। उसने अपना गोफन (गुलेल)
अपने हाथों में लिया और वह पलिश्ती (गोलियत) से
मिलने चल पड़ा।

दाऊद, गोलियत को मार डालता है

41पलिश्ती (गोलियत) धीरे-धीरे दाऊद के समीप
और समीपतर होता गया। गोलियत का सहायक उसकी
ढाल लेकर उसके आगे चल रहा था। 42गोलियत ने

तुम सैनिक ... हो या "तुम केवल लड़के हो।" हिब्रू में प्राय: "लड़का" शब्द का अर्थ "सेवक" है या सैनिक का "शस्त्रवाहक" है।

दाऊद को देखा और हँसा। गोलियत ने देखा कि दाऊद
सैनिक नहीं है। वह तो केवल सुनहरे बालों वाला युवक
है। 43गोलियत ने दाऊद से कहा, "यह छड़ी किस लिये
है? क्या तुम कुत्ते की तरह मेरा पीछा करके मुझे
भगाने आये हो?" तब गोलियत ने अपने देवताओं का
नाम लेकर दाऊद के विरुद्ध अपशब्द कहे। 44गोलियत
ने दाऊद से कहा, "यहाँ आओ, मैं तुम्हारे शरीर को
पक्षियों और पशुओं को खिला दूँगा!"

45दाऊद ने पलिश्ती (गोलियत) से कहा, "तुम मेरे
पास तलवार, बर्छा और भाला चलाने आये हो। किन्तु मैं
तुम्हारे पास इस्राएल की सेना के परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा के नाम पर आया हूँ। तुमने उसके विरुद्ध बुरी
बातें कहीं हैं। 46आज यहोवा तुमको मेरे द्वारा पराजित
कराएगा। मैं तुमको मार डालूँगा। आज मैं तुम्हारा सिर
काट डालूँगा और तुम्हारे शरीर को पक्षियों और जंगली
जानवरों को खिला दूँगा। हम लोग अन्य पलिश्तियों के
साथ भी यही करेंगे। तब सारा संसार जानेगा कि
इस्राएल में परमेश्वर है! 47यहाँ इकट्ठे सभी लोग जानेंगे
कि लोगों की रक्षा के लिये यहोवा को तलवार और
भाले की आवश्यकता नहीं। युद्ध यहोवा का है और
यहोवा तुम सभी पलिश्तियों को हराने में हमारी सहायता
करेगा।"

48पलिश्ती (गोलियत) दाऊद पर आक्रमण करने
उसके पास आया। दाऊद गोलियत से भिड़ने के लिये
तेजी से दौड़ा 49दाऊद ने एक पत्थर अपने थैले से
निकाला। उसने उसे अपने गोफन (गुलेल) पर चढ़ाया
और उसे चला दिया। पत्थर गुलेल से उड़ा और उसने
गोलियत के माथे पर चोट की। पत्थर उसके सिर में
गहरा घुस गया और गोलियत मुँह के बल गिर पड़ा।

50इस प्रकार दाऊद ने एक गोफन और एक पत्थर
से पलिश्ती को हरा दिया। उसने पलिश्ती पर चोट की
और उसे मार डाला। दाऊद के पास कोई तलवार नहीं
थी। 51इसलिए दाऊद दौड़ा और पलिश्ती की बगल में
खड़ा हो गया। दाऊद ने गोलियत की तलवार उसकी
म्यान से निकाली और उससे गोलियत का सिर काट
डाला और इस तरह दाऊद ने पलिश्ती को मार डाला।

जब अन्य पलिश्तियों ने देखा कि उनका वीर मारा
गया तो वे मुड़े और भाग गए। 52इस्राएल और यहूदा के
सैनिकों ने जयघोष किया और पलिश्तियों का पीछा
करने लगे। इस्राएलियों ने लगातार गत की सीमा और
एक्रोन के द्वार तक पलिश्तियों का पीछा किया। उन्होंने
अनेकों पलिश्ती मार गिराए। उनके शव शारैंम सड़क
पर गत और एक्रोन तक लगातर बिछ गए। 53पलिश्तियों
का पीछा करने के बाद इस्राएली पलिश्तियों के डेरे में
लौटे। इस्राएली उस डेरे से बहुत सी चीज़ें ले गये। 54दाऊद
पलिश्ती का सिर यरूशलेम ले गया। दाऊद ने पलिश्तियों
के शस्त्रों को अपने पास अपने डेरे मेंरखा।

शाऊल दाऊद से डरने लगता है।

55शाऊल ने दाऊद को गोलियत से लड़ने के लिये
जाते देखा था। शाऊल ने सेनापति अब्नेर से बातें की,
"अब्नेर, उस युवक का पिता कौन है?" अब्नेर ने
उत्तर दिया, "महाराज, मैं शपथ खाकर कहता हूँ–मैं
नहीं जानता।"

56राजा शाऊल ने कहा, "पता लगाओ कि उस युवक
का पिता कौन है?"

57जब दाऊद गोलियत को मारने के बाद लौटा तो
अब्नेर उसे शाऊल के पास लाया। दाऊद तब भी
पलिश्ती का सिर हाथ में पकड़ा हुआ था।

58शाऊल ने पूछा, "युवक तुम्हारा पिता कौन है?"

दाऊद ने उत्तर दिया, "मैं आपके सेवक बेतलेहेम के
यिशै का पुत्र हूँ।"

दाऊद और योनातान की घनिष्ट मित्रता

18 दाऊद ने जब शाऊल से बात पूरी कर ली तब
योनातान दाऊद का बहुत अभिन्न मित्र बन
गया। योनातान दाऊद से उतना ही प्रेम करने लगा
जितना अपने से।

2शाऊल ने उस दिन के बाद से दाऊद को अपने पास
रखा। शाऊल ने दाऊद को उसके घर पिता के पास
नहीं जाने दिया।

3योनातान दाऊद से बहुत प्रेम करता था। योनातान
ने दाऊद से एक सन्धि की। 4योनातान ने जो अंगरखा
पहना हुआ था उसे उतारा और दाऊद को दे दिया।
योनातान ने अपनी सारी वर्दी भी दाऊद को दे दी।
योनातान ने अपना धनुष, अपनी तलवार और अपनी
पेटी भी दाऊद को दी।

शाऊल का दाऊद की सफलता पर ध्यान देना

5शाऊल ने दाऊद को विभिन्न युद्धों में लड़ने भेजा।
दाऊद बहुत सफल रहा। तब शाऊल ने उसे सैनिकों
के ऊपर रख दिया। इससे सभी प्रसन्न हुये, यहाँ तक
कि शाऊल के सभी अधिकारी भी इससे प्रसन्न हुए।
6दाऊद पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने जाया करता था।
युद्ध के बाद वह घर लौटता था। इस्राएल के सभी नगरों
में स्त्रियाँ दाऊद के स्वागत में उससे मिलने आती थी।
वे हँसती नाचतीं और ढोलक एवं सितार बजाती थीं।
वे शाऊल के सामने ही ऐसा किया करती थीं! 7स्त्रियाँ
गाती थीं,

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा।
दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

8स्त्रियों के इस गीत ने शाऊल को खिन्न कर दिया,
वह बहुत क्रोधित हो गया। शाऊल ने सोचा, "स्त्रियाँ
कहती हैं कि दाऊद ने दसियों हजार शत्रु मारे हैं और

वे कहती हैं कि मैंने केवल हजार शत्रु ही मारे।”
9इसलिये उस समय से आगे शाऊल दाऊद पर निगाह
रखने लगा।

शाऊल दाऊद से भयभीत हुआ

10अगले दिन, परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा
शाऊल पर बलपूर्वक हावी हो गई। शाऊल अपने घर
में वहशी* हो गया। दाऊद ने पहले की तरह वीणा
बजाई। 11किन्तु शाऊल के हाथ में भाला था। शाऊल
ने सोचा, “मैं दाऊद को दीवार में टाँक दूँगा।” शाऊल ने
दो बार भाला चलाया, किन्तु दाऊद बच गया।

12यहोवा दाऊद के साथ था और यहोवा ने शाऊल
को त्याग दिया था। इसलिए शाऊल दाऊद से भयभीत
था।13शाऊल ने दाऊद को अपने से दूर भेज दिया।
शाऊल ने दाऊद को एक हजार सैनिकों का सेनापति
बना दिया। दाऊद ने युद्ध में सैनिकों का नेतृत्व किया।
14यहोवा दाऊद के साथ था। अत: दाऊद सर्वत्र सफल
रहता था। 15शाऊल ने देखा कि दाऊद को बहुत अधिक
सफलता मिल रही है तो शाऊल दाऊद से और भी
अधिक भयभीत रहने लगा। 16किन्तु इस्राएल और यहूदा
के सभी लोग दाऊद से प्रेम करते थे। वे उससे प्रेम
इसलिये करते थे क्योंकि वह युद्ध में उनका संचालन
करता था और उनके लिये लड़ता था।

शाऊल की अपनी बेटी से दाऊद के विवाह की योजना

17शाऊल दाऊद को मार डालना चाहता था। शाऊल
ने दाऊद को धोखा देने का एक उपाय सोचा। शाऊल
ने दाऊद से कहा, “यह मेरी सबसे बड़ी पुत्री मेरब है। मैं
तुम्हें इससे विवाह करने दूँगा। तब तुम शक्तिशाली
योद्धा हो जाओगे। तुम हमारे पुत्र के समान होओगे। तब
तुम जाना और यहोवा के युद्धों को लड़ना।” यह एक
चाल थी। शाऊल सचमुच अब यह सोच रहा था, “इस
प्रकार दाऊद को मुझे मारना नहीं पड़ेगा। मैं पलिश्तियों
से उसे अपने लिए मरवा दूँगा!”

18किन्तु दाऊद ने कहा, “मैं किसी महत्वपूर्ण परिवार
से नहीं हूँ और मेरी हस्ती ही क्या है? मैं एक राजा की
पुत्री के साथ विवाह नहीं कर सकता हूँ!”

19फिर जब शाऊल की पुत्री मेरब का दाऊद के
साथ विवाह का समय आया तब शाऊल ने महोलाई
अद्रीएल से उसका विवाह कर दिया।

20शाऊल की दूसरी पुत्री मीकल दाऊद से प्रेम करती
थी। लोगों ने शाऊल से कहा कि मीकल दाऊद से प्रेम
करती है। इससे शाऊल को प्रसन्नता हुई। 21शाऊल ने
सोचा, “मैं मीकल का उपयोग दाऊद को फँसाने के
लिये करूँगा। मैं मीकल को दाऊद से विवाह करने दूँगा
और तब मैं पलिश्तियों को इसे मार डालने दूँगा।” अत:
शाऊल ने दाऊद से दूसरी बार कहा, “आज तुम मेरी
पुत्री से विवाह कर सकते हो।”

22शाऊल ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया।
उसने उनसे कहा, “दाऊद से अकेले में बातें करो।
कहो, ‘देखो, राजा तुमको पसन्द करता है। उसके
अधिकारी तुमको पसन्द करते हैं। तुम्हें उसकी पुत्री से
विवाह कर लेना चाहिये।’”

23शाऊल के अधिकारियों ने वे बात दाऊद से कही।
किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, “क्या तुम लोग समझते हो
कि राजा का दामाद बनना सरल है? मेरे पास इतना
धन नहीं कि राजा की पुत्री के लिये दे सकूँ। मैं तो एक
साधारण गरीब व्यक्ति हूँ।”

24शाऊल के अधिकारियों ने शाऊल को वह सब
बताया जो दाऊद ने कहा था। 25 शाऊल ने उनसे कहा,
“दाऊद से यह कहो, ‘दाऊद, राजा यह नहीं चाहता कि
तुम उसकी पुत्री के लिये धन दो!* शाऊल अपने
शत्रुओं से बदला लेना चाहता है। इसलिए विवाह करने
के लिये कीमत के रूप में केवल सौ पलिश्तियों की
खलडियाँ है।’” यह शाऊल की गुप्त योजना थी।
शाऊल ने सोचा कि पलिश्ती इस प्रकार दाऊद को
मार डालेंगे।

26शाऊल के अधिकारियों ने दाऊद से ये बातें कहीं।
दाऊद राजा का दामाद बनना चाहता था, इसलिए उसने
तुरन्त ही कुछ कर दिखाया। 27दाऊद और उसके व्यक्ति
पलिश्तियों से लड़ने गये। उन्होंने दो सौ* पलिश्ती मार
डाले। दाऊद ने इनके खलड़ियों को लिया और शाऊल
को दे दिये। दाऊद ने यह इसलिये किया क्योंकि वह
राजा का दामाद बनना चाहता था। शाऊल ने दाऊद
को अपनी पुत्री मीकल से विवाह करने दिया। 28शाऊल
ने देखा कि यहोवा दाऊद के साथ था। किन्तु शाऊल
ने यह भी ध्यान में रखा कि उसकी पुत्री मीकल दाऊद
को प्यार करती है। 29इसलिये शाऊल दाऊद से और
भी अधिक भयभीत हुआ। शाऊल उस पूरे समय दाऊद
के विरुद्ध रहा।

30इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ने के लिये पलिश्ती
सेनापति बाहर निकलते रहे। किन्तु हर बार दाऊद ने
उनको हराया। दाऊद शाऊल के सभी अधिकारियों
में सबसे अधिक सफल था सो दाऊद प्रसिद्ध हो
गया।

वहशी या “शाऊल ने भविष्यवाणी की” हिब्रू शब्द का अर्थ है कि उस व्यक्ति का नियन्त्रण अपने कहे और किये पर न रहा। प्राय: इसका अर्थ यह होता है कि परमेश्वर अन्य लोगों को विशेष संदेश देने के लिये उस व्यक्ति का उपयोग कर रहे है।

उसकी पुत्री के लिये धन बाइबल के समय में जब कोई व्यक्ति विवाह करता था तो वधू के पिता को कुछ अवश्य देता था।

दो सौ प्राचीन ग्रीक अनुवाद में सौ है।

योनातान का दाऊद की सहायता करना

19 शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने
अधिकारियों से दाऊद को मार डालने के लिये
कहा। किन्तु योनातान दाऊद को बहुत चाहता था।
2-3योनातान ने दाऊद को सावधान किया, "सावधान
रहो! शाऊल तुमको मार डालने के अवसर की तलाश
में है। सवेरे मैदान में जाकर छिप जाओ। मैं अपने पिता
के साथ मैदान में जाऊँगा। हम मैदान में वहाँ खड़े रहेंगे
जहाँ तुम छिपे होगे। मैं तुम्हारे बारे में अपने पिता स बातें
करूँगा। तब जो मुझे ज्ञात होगा मैं तुमको बताऊँगा।"

4योनातान ने अपने पिता शाऊल से बातें कीं। योनातान
ने दाऊद के बारे में अच्छी बातें कहीं। योनातान ने
कहा, "आप राजा हैं। दाऊद आपका सेवक है। दाऊद
ने आपको कोई हानि नहीं पहुँचाई है। इसलिए उसके
साथ कुछ बुरा न करें। दाऊद सदा आपके प्रति अच्छा
रहा है। 5दाऊद अपने जीवन पर खेला था जब उसने
पलिश्ती (गोलियत) को मारा था। यहोवा ने सारे इस्राएल
के लिये एक बड़ी विजय प्राप्त की थी। आपने उसे देखा
और आप उस पर बड़े प्रसन्न थे। आप दाऊद को हानि
क्यों पहुँचाना चाहते हैं? वह निरपराध है। उसे मार
डालने का कोई कारण नहीं है!"

6शाऊल ने योनातान की बात सुनी। शाऊल ने प्रतिज्ञा
की। शाऊल ने कहा, "यहोवा के अस्तित्व के अटल
सत्य की तरह, दाऊद भी मारा नहीं जाएगा।"

7अत: योनातान ने दाऊद को बुलाया। तब उसने
दाऊद से वह सब कहा जो कहा गया था। तब योनातान,
दाऊद को शाऊल के पास लाया। इस प्रकार शाऊल
के साथ दाऊद पहले की तरह हो गया।

शाऊल, दाऊद को मारने का फिर प्रयत्न करता है

8युद्ध फिर आरम्भ हुआ और दाऊद पलिश्तियों से
युद्ध करने गया। उसने पलिश्तियों को हराया और वे
उसके आगे भाग खड़े हुए। 9किन्तु यहोवा द्वारा शाऊल
पर भेजी दुष्टात्मा उतरी। शाऊल अपने घर में बैठा
था। शाऊल के हाथ में उसका भाला था। दाऊद वीणा
बजा रहा था। 10शाऊल ने अपने भाले को दाऊद के
शरीर पर चला कर उसे दीवार पर टाँक देने का प्रयत्न
किया। दाऊद भाले के रास्ते से कूद कर बच निकला
और भाला दीवार से टकरा कर रह गया। अत: उसी
रात दाऊद वहाँ से भाग निकला।

11शाऊल ने लोगों को दाऊद के घर भेजा। लोगों ने
दाऊद के घर पर निगरानी रखी। वे रात भर वहीं
ठहरे। वे सवेरे दाऊद को मार डालने की प्रतीक्षा कर
रहे थे। किन्तु उसकी पत्नी मीकल ने उसे सावधान
कर दिया। उसने कहा, "तुम्हें आज की रात भाग
निकलना चाहिये और अपने जीवन की रक्षा करनी
चाहिए। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो कल मार दिये
जाओगे।"

12तब मीकल ने एक खिड़की से उसे नीचे उतार
दिया। दाऊद बच गया और वहाँ से भाग निकला।
13मीकल ने अपने पारिवारिक देवता की मूर्ति को
लिया और उसे बिस्तर पर लिटा दिया। मीकल ने उस
मूर्ति पर कपड़े डाल दिये। उसने उसके सिर पर बकरी
के बाल भी लगा दिये।

14शाऊल ने दाऊद को बन्दी बनाने के लिये दूत
भेजे। किन्तु मीकल ने कहा, "दाऊद बीमार है।"

15सो वे लोग वहाँ से चले गये और उन्होंने शाऊल से
जाकर यह बता दिया, किन्तु उसने दूतों को दाऊद को
देखने के लिये वापस भेजा। शाऊल ने इन लोगों से
कहा, "दाऊद को मेरे पास लाओ। यदि आवश्यकता
पड़े तो उसे अपने बिस्तर पर लेटे हुये ही उठा लाओ। मैं
उसे मार डालूँगा।"

16सो दूत फिर दाऊद के घर गये। वे दाऊद को
पकड़ने भीतर गये, किन्तु वहाँ उन्होंने देखा कि बिस्तर
पर केवल एक मूर्ति थी। उन्होंने देखा कि उसके बाल
तो बस बकरी के बाल थे।

17शाऊल ने मीकल से कहा, "तुमने मुझे इस प्रकार
धोखा क्यों दिया? तुमने मेरे शत्रु को भाग जाने दिया।
दाऊद भाग गया है! मीकल ने शाऊल को उत्तर दिया,
"दाऊद ने मुझसे कहा था कि वह मुझे मार डालेगा यदि
मैं भाग जाने में उसकी सहायता नहीं करूँगी।"

दाऊद का रामा के डेरों में जाना

18दाऊद बच निकला। दाऊद शमूएल के पास रामा
में भागकर पहुँचा। दाऊद ने शमूएल से वह सब बताया
जो शाऊल ने उसके साथ किया था। तब दाऊद और
शमूएल उन डेरों में गये जहाँ भविष्यवक्ता रहते थे।
दाऊद वहीं रुका। 19शाऊल को पता चला कि दाऊद
रामा के निकट डेरों में था। 20शाऊल ने दाऊद को
बन्दी बनाने के लिये लोगों को भेजा। किन्तु जब वे डेरों
में आए तो उस समय नबियों का एक समूह भविष्यवाणी
कर रहा था। शमूएल समूह का मार्ग दर्शन करता हुआ
वहाँ खड़ा था। परमेश्वर की आत्मा शाऊल के दूतों पर
उतरी और वे भविष्यवाणी करने लगे।

21शाऊल ने इस बारे में सुना, अत: उसने वहाँ अन्य
दूत भेजे। किन्तु वे भी भविष्यवाणी करने लगे। इसलिये
शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे और वे भी भविष्यवाणी
करने लगे। 22अन्तत:, शाऊल स्वयं रामा पहुँचा। शाऊल
सेकू में खलिहान के समीप एक बड़े कुँए के पास
आया। शाऊल ने पूछा, "शमूएल और दाऊद कहाँ है?"
लोगों ने उत्तर दिया, "रामा के निकट डेरे में।"

23तब शाऊल रामा के निकट डेरे में गया। परमेश्वर
की आत्मा शाऊल पर भी उतरी और शाऊल ने

भविष्यवाणी करनी आरम्भ की। शाऊल रामा के डेरे
तक अधिकाधिक भविष्यवाणीयाँ लगातार करता गया।
24तब शाऊल ने अपने वस्त्र उतारे। इस प्रकार शाऊल
भी शमूएल के सामने भविष्यवाणी कर रहा था। शाऊल
वहाँ सारे दिन और सारी रात नंगा लेटा रहा।

यही कारण है कि लोग कहते हैं, "क्या शाऊल
नबियों में से कोई एक है?"

दाऊद और योनातान एक सन्धि करते हैं

20 दाऊद रामा के निकट के डेरे से भाग गया।
दाऊद योनातान के पास पहुँचा और उससे
पूछा, "मैंने कौन सी गलती की है? मेरा अपराध क्या
है? तुम्हारा पिता मुझे मारने का प्रयत्न क्यों कर रहा
है?"

2योनातान ने उत्तर दिया, "मेरे पिता तुमको मारने का
प्रयत्न नहीं कर रहे हैं! मेरे पिता मुझसे पहले कहे बिना
कुछ नहीं करते। यह महत्वपूर्ण नहीं कि वह बात बहुत
महत्वपूर्ण हो या तुच्छ, मेरे पिता सदा मुझे बताते हैं। मेरे
पिता मुझसे यह बताने से क्यों इन्कार करेंगे कि वे
तुमको मार डालना चाहते हैं? नहीं, यह सत्य नहीं है!"

3किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, "तुम्हारे पिता अच्छी
तरह जानते हैं कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ। तुम्हारे पिता ने
अपने मन में यह सोचा है, 'योनातान को इस विषय में
जानकारी नहीं होनी चाहिये। यदि वह जानेगा तो दाऊद
से कह देगा।' किन्तु जैसे यहोवा का होना सत्य है और
तुम जीवित हो, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि मैं मृत्यु
के बहुत निकट हूँ!"

4योनातान ने दाऊद से कहा, "मैं वह सब कुछ करूँगा
जो तुम मुझसे करवाना चाहो।"

5तब दाऊद ने कहा, "देखो, कल नया चाँद का
महोत्सव है और मुझे राजा के साथ भोजन करना है।
किन्तु मुझे सन्ध्या तक मैदान में छिपे रहने दो। 6यदि
तुम्हारे पिता को यह दिखाई दे कि मैं चला गया हूँ, तो
उनसे कहो कि, 'दाऊद अपने घर बेतलेहेम जाना चाहता
था। उसका परिवार इस मासिक बलि के लिए स्वयं ही
दावत कर रहा है। दाऊद ने मुझसे पूछा कि मैं उसे
बेतलेहेम जाने और उसके परिवार से उसे मिलने दूँ'
7यदि तुम्हारे पिता कहते हैं, 'बहुत अच्छा हुआ,' तो मैं
सुरक्षित हूँ। किन्तु यदि तुम्हारे पिता क्रोधित होते हैं तो
समझो कि मेरा बुरा करना चाहते हैं। 8योनातान मुझ
पर दया करो। मैं तुम्हारा सेवक हूँ। तुमने यहोवा के
सामने मेरे साथ सन्धि की है। यदि मैं अपराधी हूँ तो तुम
स्वयं मुझे मार सकते हो! किन्तु मुझे अपने पिता के
पास मत ले जाओ।"

9योनातान ने उत्तर दिया, "नहीं, कभी नहीं! यदि मैं
जान जाऊँगा कि मेरे पिता तुम्हारा बुरा करना चाहते हैं
तो तुम्हें सावधान कर दूँगा।"

10दाऊद ने कहा, "यदि तुम्हारे पिता तुम्हें कठोरता
से उत्तर देते हैं तो उसके बारे में मुझे कौन
बताएगा?"

11तब योनातान ने कहा, "आओ, हम लोग मैदान में
चलें।" सो योनातान और दाऊद एक साथ मैदान में चले
गए।

12योनातान ने दाऊद से कहा, "मैं इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा के सामने यह प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं
प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं पता लगाऊँगा कि मेरे पिता
तुम्हारे प्रति कैसा भाव रखते हैं। मैं पता लगाऊँगा कि
वे तुम्हारे बारे में अच्छा भाव रखते हैं या नहीं। तब तीन
दिन में, मैं तुम्हें मैदान में सूचना भेजूँगा। 13यदि मेरे पिता
तुम पर चोट करना चाहते हैं तो मैं तुम्हें जानकारी
दूँगा। मैं तुमको यहाँ से सुरक्षित जाने दूँगा। यहोवा मुझे
दण्ड दे यदि मैं ऐसा न करुँ । यहोवा तुम्हारे साथ रहे
जैसे वह मेरे पिता के साथ रहा है। 14जब तक मैं जीवित
रहूँ मेरे ऊपर दया रखना और जब मैं मर जाऊँ तो
15मेरे परिवार पर दया करना बन्द न करना। यहोवा
तुम्हारे सभी शत्रुओं को पृथ्वी पर से नष्ट कर देगा।
16यदि उस समय योनातान का परिवार दाऊद के परिवार
से पृथक किया जाना ही हो, तो उसे हो जाने देना।
दाऊद के शत्रुओं को यहोवा दण्ड दे।"

17तब योनातान ने दाऊद से कहा कि वह उसके प्रति
प्रेम की प्रतिज्ञा को दुहराये। योनातान ने यह इसलिए
किया क्योंकि वह दाऊद से उतना ही प्रेम करता था
जितना अपने आप से।

18योनातान ने दाऊद से कहा, "कल नया चाँद का
उत्सव है। तुम्हारा आसन खाली रहेगा। इसलिए मेरे
पिता समझ जाएंगे कि तुम चले गये हो। 19तीसरे दिन
उसी स्थान पर जाओ जहाँ तुम इस परेशानी के प्रारम्भ
होने के समय छिपे थे। उस पहाड़ी की बगल में प्रतीक्षा
करो। 20तीसरे दिन, मैं उस पहाड़ी पर ऐसे जाऊँगा जैसे
मैं किसी लक्ष्य को बेध रहा हूँ। मैं कुछ बाणों को
छोड़ूँगा। 21तब मैं, बाणों का पता लगाने के लिये, अपने
शस्त्रवाहक लड़के से जाने के लिये कहूँगा। यदि सब
कुछ ठीक होगा तो मैं लड़के से कहूँगा, 'तुम बहुत दूर
निकल गए हो! बाण मेरे करीब ही हैं। लौटो और उन्हें
उठा लाओ।' यदि मैं ऐसा कहूँ तो तुम छिपने के स्थान
से बाहर आ सकते हो। मैं वचन देता हूँ कि जैसे यहोवा
शाश्वत है वैसे ही तुम सुरक्षित हो। कोई भी खतरा नहीं
है।

22किन्तु यदि खतरा होगा तो मैं लड़के से कहूँगा।
'बाण बहुत दूर है, जाओ और उन्हें लाओ।' यदि मैं ऐसा
कहूँ तो तुम्हें चले जाना चाहिये। यहोवा तुम्हें दूर भेज
रहा है। 23तुम्हारे और मेरे बीच की इस सन्धि को याद
रखो। यहोवा सदैव के लिये हमारा साक्षी है!"

24 तब दाऊद मैदान में जा छिपा।

उत्सव में शाऊल के इरादे

नया चाँद के उत्सव का समय आया और राजा
भोजन करने बैठा। 25राजा दीवार के निकट वहीं बैठा
जहाँ वह प्राय: बैठा करता था। योनातान शाऊल के
दूसरी ओर सामने बैठा। अब्नेर शाऊल के बाद बैठा।
किन्तु दाऊद का स्थान खाली था। 26उस दिन शाऊल
ने कुछ नहीं कहा। उसने सोचा, "सम्भव है दाऊद को
कुछ हुआ हो और वह शुद्ध न हो।"

27अगले दिन, महीने के दूसरे दिन, दाऊद का स्थान
फिर खाली था। तब शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से
पूछा, "यिशै का पुत्र नया चाँद के उत्सव में कल या
आज क्यों नहीं आया?"

28योनातान ने उत्तर दिया, "दाऊद ने मुझसे बेतलेहेम
जाने देने के लिये कहा था। 29उसने कहा था, 'मुझे
जाने दो। मेरा परिवार बेतलेहेम में एक बलि–भेंट कर
रहा है। मेरे भाई ने वहाँ रहने का आदेश दिया है। अब
यदि मैं तुम्हारा मित्र हूँ तो मुझे जाने दो और भाईयों से
मिलने दो।' यही कारण है कि दाऊद राजा की मेज पर
नहीं आया है।"

30शाऊल योनातान पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने
योनातान से कहा, "तुम उस एक दासी के पुत्र हो, जो
आज्ञा पालन करने से इन्कार करती है और तुम ठीक
उसी तरह के हो। मैं जानता हूँ कि तुम दाऊद के पक्ष में
हो। तुम अपनी माँ और अपने लिये लज्जा का कारण
हो। 31जब तक यिशै का पुत्र जीवित रहेगा तब तक तुम
कभी राजा नहीं बनोगे, न तुम्हारा राज्य होगा। अब
दाऊद को हमारे पास लाओ। वह एक मरा व्यक्ति है!"

32योनातान ने अपने पिता से पूछा, "दाऊद को क्यों
मार डाला जाना चाहिये? उसने क्या अपराध किया है?"

33किन्तु शाऊल ने अपना भाला योनातान पर चलाया
और उसे मार डालने का प्रयन्त किया। अत: योनातान
ने समझ लिया कि मेरा पिता दाऊद को निश्चित रूप से
मार डालने का इच्छुक है। 34योनातान क्रोधित हुआ
और उसने मेज छोड़ दी। योनातान इतना घबरा गया
और अपने पिता पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने
दावत के दूसरे दिन कुछ भी भोजन करना अस्वीकार
कर दिया। योनातान इसलिये क्रोधित हुआ क्योंकि शाऊल
ने उसे अपमानित किया था और शाऊल दाऊद को
मार डालना चाहता था।

दाऊद और योनातान का विदा लेना

35अगली सुबह योनातान मैदान में गया। वह दाऊद
से मिलने गया, जैसा उन्होंने तय किया था। योनातान
एक शस्त्रवाहक लड़के को अपने साथ लाया। 36योनातान
ने लड़के से कहा, "दौड़ो, और जो बाण मैं चलाता हूँ,
उन्हें लाओ।" लड़के ने दौड़ना आरम्भ किया और
योनातान ने उसके सिर के ऊपर से बाण चलाए। 37लड़का
उस स्थान को दौड़ा, जहाँ बाण गिरा था। किन्तु योनातान
ने पुकारा, "बाण बहुत दूर है!" 38तब योनातान जोर से
चिल्लाया "जल्दी करो! उन्हें लाओ! वहीं पर खड़े न
रहो!" लड़के ने बाणों को उठाया और अपने स्वामी के
पास वापस लाया। 39लड़के को कुछ पता न चला कि
हुआ क्या। केवल योनातान और दाऊद जान सके।
40योनातान ने अपना धनुष बाण लड़के को दिया। तब
योनातान ने लड़के से कहा, "नगर को लौट जाओ।"

41लड़का चल पड़ा, और दाऊद अपने उस छिपने के
स्थान से बाहर आया जो पहाड़ी के दूसरी ओर था।
दाऊद ने भूमि तक अपने सिर को झुकाकर योनातान
के सामने प्रणाम किया। दाऊद तीन बार झुका। तब
दाऊद और योनातान ने एक दूसरे का चुम्बन लिया। वे
दोनों एक साथ रोये, किन्तु दाऊद योनातान से अधिक
रोया।

42योनातान ने दाऊद से कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।
हम लोगों ने यहोवा का नाम लेकर मित्र होने की
प्रतिज्ञा की थी। हम लोगों ने कहा था कि यहोवा हम
लोगों और हमारे वंशजों के बीच सदा साक्षी रहेगा।"

दाऊद का याजक अहीमेलेक से मिलने जाना

21 तब दाऊद चला गया और योनातान नगर को
लौट गया। 2दाऊद नोब नामक नगर में याजक
अहीमेलेक से मिलने गया। अहीमेलेक दाऊद से मिलने
बाहर गया। अहीमेलेक भय से काँप रहा था। अहीमेलेक
ने दाऊद से पूछा, "तुम अकेले क्यों हो? तुम्हारे साथ
कोई व्यक्ति क्यों नहीं है?"

3दाऊद ने अहीमेलेक को उत्तर दिया, "राजा ने मुझको
विशेष आदेश दिया है। उसने मुझसे कहा है, 'इस उद्देश्य
को किसी को न जानने दो। कोई भी व्यक्ति उसे न जाने
जिसे मैंने तुम्हें करने को कहा है।' मैंने अपने व्यक्तियों
से कह दिया है कि वे कहाँ मिलें। 4अब यह बताओ कि
तुम्हारे पास भोजन के लिये क्या है? मुझे पाँच रोटियाँ
या जो कुछ खाने को है, दो।"

5याजक ने दाऊद से कहा, "मेरे पास यहाँ सामान्य
रोटियाँ नहीं हैं। किन्तु मेरे पास कुछ पवित्र रोटी तो है।
तुम्हारे अधिकारी उसे खा सकते हैं, यदि उन्होंने किसी
स्त्री के साथ इन दिनों शारीरिक सम्बन्ध न किया
हो।"*

6दाऊद ने याजक को उत्तर दिया, "हम लोग इन
दिनों किसी स्त्री के साथ नहीं रहे हैं। हमारे व्यक्ति
अपने शरीर को पवित्र रखते हैं जब कभी हम युद्ध
करने जाते हैं, यहाँ तक कि सामान्य उद्देश्य के लिये

किसी स्त्री ... हो यह व्यक्ति को अशुद्ध करने वाला था और ऐसा व्यक्ति परमेश्वर को भेंट में चढ़ाकर पवित्र बनाई गई किसी सामग्री को नहीं खा सकता था। देखें लैव्य. 7:21; 15:1–33

जाने पर भी* और आज के लिए तो यह विशेष रूप से
सच है क्योंकि हमारा काम अति विशिष्ट है।"
7वहाँ पवित्र रोटी के अतिरिक्त कोई रोटी नहीं थी।
अत: याजक ने दाऊद को वही रोटी दी। यह वह रोटी
थी जिसे याजक यहोवा के सामने पवित्र मेज पर रखते
थे। वे हर एक दिन इस रोटी को हटा लेते थे और
उसकी जगह ताजी रोटी रखते थे।
8उस दिन शाऊल के अधिकारियों में से एक वहाँ
था। वह एदोमी दोएग था। दोएग को वहाँ यहोवा के
सामने रखा गया था।* दोएग शाऊल के गड़ेरियों का
मुखिया था।
9दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, "क्या तुम्हारे पास यहाँ
कोई भाला या तलवार है? राजा का कार्य बहुत जरूरी
है। मुझे शीघ्रता से जाना है और मैं अपनी तलवार या
अन्य कोई शस्त्र नहीं ला सका हूँ।"
10याजक ने उत्तर दिया, "एक मात्र तलवार जो यहाँ है
वह पलिश्ती (गोलियत) की है। यह वही तलवार है
जिसे तुमने उससे तब लिया था जब तुमने उसे एला की
घाटी में मारा था। वह तलवार एक कपड़े में लिपटी हुई
एपोद के पीछे रखी है। यदि तुम चाहो तो उसे ले सकते
हो।"
दाऊद ने कहा, "इसे मुझे दो। गोलियत की तलवार
के समान कोई तलवार नहीं है।"

दाऊद का गत को जाना

11उस दिन दाऊद शाऊल के यहाँ से भाग गया।
दाऊद गत के राजा आकीश के पास गया। 12आकीश
के अधिकारियों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने
कहा, "यह इस्राएल प्रदेश का राजा दाऊद है। यही वह
व्यक्ति है जिसका गीत इस्राएली गाते हैं। वे नाचते हैं और
यह गीत गाते है:

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा
दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

13दाऊद को ये बातें याद थीं। दाऊद गत के राजा
आकीश से बहुत भयभीत था। 14इसलिए दाऊद ने आकीश
और उसके अधिकारियों के सामने अपने को विक्षिप्त
दिखाने का बहाना किया। जब तक दाऊद उनके साथ
रहा उसने विक्षिप्तों जैसा व्यवहार किया। वह द्वार के
दरवाजों पर थूक देता था। वह अपने थूक को अपनी
दाढ़ी पर गिरने देता था।
15आकीश ने अपने अधिकारियों से कहा, "इस व्यक्ति
को देखो। यह तो विक्षिप्त है! तुम लोग इसे मेरे पास
क्यों लाए हो?" 16मेरे पास तो वैसे ही बहुत से विक्षिप्त
हैं। मैं तुम लोगों से यह नहीं चाहता कि तुम इस व्यक्ति
को मेरे घर पर विक्षिप्त जैसा काम करने को लाओ।
इस व्यक्ति को मेरे घर में फिर न आने देना।"

दाऊद का विभिन्न स्थानों पर जाना

22 दाऊद ने गत को छोड़ दिया। दाऊद अदुल्लाम
की गुफा में भाग गया। दाऊद के भाईयों और
सम्बन्धियों ने सुना कि दाऊद अदुल्लाम में था। वे
दाऊद को देखने वहाँ गए। 2बहुत से लोग दाऊद के
साथ हो लिये। वे सभी लोग, जो किसी विपत्ति में थे या
कर्ज में थे या असंतुष्ट थे, दाऊद के साथ हो लिए।
दाऊद उनका मुखिया बन गया। दाऊद के पास लगभग
चार सौ पुरुष थे।
3दाऊद ने अदुल्लाम को छोड़ दिया और वह मोआब
मे स्थित मिस्पा को चला गया। दाऊद ने मोआब के
राजा से कहा, "कृपया मेरे माता-पिता को आने दें और
अपने पास तब तक रहने दें जब तक मैं यह न समझ
सकूँ कि परमेश्वर मेरे साथ क्या करने जा रहा है।"
4दाऊद ने अपने माता-पिता को मोआब के राजा के
पास छोड़ा। दाऊद के माता-पिता मोआब के राजा के
पास तब तक ठहरे जब तक दाऊद किले में रहा।
5किन्तु नबी गाद ने दाऊद से कहा, "गढ़ी में मत
ठहरो। यहूदा प्रदेश में जाओ।" इसलिये दाऊद वहाँ से
चल पड़ा और हेरेत के जंगल में गया।

शाऊल का अहीमेलेक के परिवार को नष्ट करना

6शाऊल ने सुना कि लोग दाऊद और उसके लोगों
के बारे में जान गए हैं। शाऊल गिबा में पहाड़ी पर एक
पेड़ के नीचे बैठा था। शाऊल के हाथ में उसका भाला
था। शाऊल के सभी अधिकारी उसके चारों ओर खड़े
थे। 7शाऊल ने अपने उन अधिकारियों से कहा, जो
उसके चारों ओर खड़े थे, "बिन्यामीन के लोगों सुनो!
क्या तुम लोग समझते हो कि यिशै का पुत्र (दाऊद)
तुम्हें खेत और अंगूरों के बाग देगा? क्या तुम समझते
हो कि वह तुमको उन्नति देगा और तुम्हें एक हजार
व्यक्तियों और एक सौ व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी
बनाएगा। 8तुम लोग मेरे विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हो।
तुमने गुप्त योजनायें बनाई हैं। तुम में से किसी ने भी
मेरे पुत्र योनातान के बारे में नहीं बताया है। तुममें से
किसी ने भी यह नहीं बताया है कि उसने यिशै के पुत्र
के साथ क्या सन्धि की है। तुममें से कोई भी मेरी
परवाह नहीं करता। तुममें से किसी ने यह नहीं बताया
कि मेरे पुत्र योनातान ने दाऊद को उकसाया है। योनातान
ने मेरे सेवक दाऊद से कहा कि वह छिप जाए और

हमारे व्यक्ति ... पर भी देखें 2शमू. 11:11 और व्यवस्था. 23:9-14 के नियम।

दोएग ... गया था इसका अर्थ यह हो सकता है कि दोएग परमेश्वर के लिये विशेष प्रतिज्ञा के एक भाग के रूप में वहाँ था या किसी अन्य धार्मिक कारण से वहाँ था। या इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह वहाँ इसलिये रोका गया था कि उसने कोई अपराध किया था जैसे संयोगवश किसी को मार डालना।

मुझ पर आक्रमण करे और यह वही है जो दाऊद अब
कर रहा है।"
9एदोमी दोएग शाऊल के अधिकारियों के साथ खड़ा
था। दोएग ने कहा, "मैंने यिशै के पुत्र दाऊद को नोब
में देखा है। दाऊद अहितूब के पुत्र अहीमेलेक से मिलने
आया। 10अहीमेलेक ने यहोवा से दाऊद के लिये प्रार्थना
की। अहीमेलेक ने दाऊद को भोजन भी दिया और
अहीमेलेक ने दाऊद को पलिश्ती (गोलियत) की तलवार
भी दी।"
11तब राजा शाऊल ने कुछ लोगों को आज्ञा दी कि वे
याजक को उसके पास लेकर आएं। शाऊल ने उनसे
अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक और उसके सभी सम्बन्धियों
को लाने को कहा। अहीमेलेक के सम्बन्धी नोब में
याजक थे। वे सभी राजा के पास आए। 12शाऊल ने
अहीमेलेक से कहा, "अहीतूब के पुत्र, अब सुन लो।"
अहीमेलेक ने उत्तर दिया, "हाँ, महाराज।"
13शाऊल ने अहीमेलेक से कहा, "तुमने और यिशै
के पुत्र (दाऊद) ने मेरे विरुद्ध गुप्त योजना क्यों बनाई?
तुमने दाऊद को रोटी और तलवार दी! तुमने परमेश्वर
से उसके लिये प्रार्थना की और अब सीधे, दाऊद मुझ
पर आक्रमण करने की प्रतीक्षा कर रहा है!"
14अहीमेलेक ने उत्तर दिया, "दाऊद तुम्हारा बड़ा
विश्वास पात्र है। तुम्हारे अधिकारियों में कोई उतना
विश्वस्त नहीं है जितना दाऊद है। दाऊद तुम्हारा अपना
दामाद है और दाऊद तुम्हारे अंगरक्षकों का नायक है।
तुम्हारा अपना परिवार दाऊद का सम्मान करता है।
15वह पहली बार नहीं था, कि मैंने दाऊद के लिये
परमेश्वर से प्रार्थना की। ऐसी बात बिल्कुल नहीं है।
मुझे या मेरे किसी सम्बन्धी को दोष मत लगाओ। हम
तुम्हारे सेवक हैं। मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं है कि यह सब
हो क्या रहा है?"
16किन्तु राजा ने कहा, "अहीमेलेक, तुम्हें और तुम्हारे
सभी सम्बन्धियों को मरना है।" 17तब राजा ने अपने
बगल में खड़े रक्षकों से कहा, "जाओ और यहोवा के
याजकों को मार डालो। यह इसलिए करो क्योंकि वे भी
दाऊद के पक्ष में हैं। वे जानते थे कि दाऊद भागा है,
किन्तु उन्होंने मुझे बताया नहीं।" किन्तु राजा के
अधिकारियों ने यहोवा के याजकों को मारने से इन्कार
कर दिया।
18अत: राजा ने दोएग को आदेश दिया। शाऊल ने
कहा, "दोएग, तुम जाओ और याजकों को मार डालो।"
इसलिए एदोमी दोएग गया और उसने याजकों को मार
डाला। उस दिन दोएग ने पचासी, सन के एपोद धारण
करने वालों को मार डाला।
19नोब याजकों का नगर था। दोएग ने नोब के सभी
लोगों को मार डाला। दोएग ने अपनी तलवार का
उपयोग किया और उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों
और छोटे शिशुओं को भी मार डाला। दोएग ने उनकी
गायों, खच्चरों और भेड़ों तक को मार डाला।
20किन्तु एब्यातार वहाँ से बच निकला। एब्यातार
अहीमेलेक का पुत्र था। अहीमेलेक अहीतूब का पुत्र
था। एब्यातार बच निकला और दाऊद से मिल गया।
21एब्यातार ने दाऊद से कहा कि शाऊल ने यहोवा के
याजकों को मार डाला है। 22तब दाऊद ने एब्यातार से
कहा, "मैंने एदोमी दोएग को उस दिन नोब में देखा था
और मैं जानता था कि वह शाऊल से कहेगा। मैं तुम्हारे
पिता के परिवार की मृत्यु के लिये उत्तरदायी हूँ। 23जो
व्यक्ति (शाऊल) तुमको मारना चाहता है वह मुझको
भी मारना चाहता है। मेरे साथ ठहरो। डरो नहीं। तुम
मेरे साथ सुरक्षित रहोगे।"

दाऊद कीला में

23 लोगों ने दाऊद से कहा, "देखो, पलिश्ती कीला
के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। वे खलिहानों
से अन्न लूट रहे हैं।"
2दाऊद ने यहोवा से पूछा, "क्या मैं जाऊँ और इन
पलिश्तियों से लड़ूँ?" यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया,
"जाओ और पलिश्तियों पर आक्रमण करो। कीला को
बचाओ।"
3किन्तु दाऊद के लोगों ने उससे कहा, "देखो, हम
यहाँ यहूदा में हैं और हम भयभीत हैं। तनिक सोचो तो
सही कि हम तब कितने भयभीत होंगे जब वहाँ जाएंगे
जहाँ पलिश्ती सेना है।"
4दाऊद ने फिर यहोवा से पूछा। यहोवा ने दाऊद को
उत्तर दिया, "कीला को जाओ। मैं तुम्हारी सहायता
पलिश्तियों को हराने में करूँगा।" 5इसलिये दाऊद और
उसके लोग कीला को गये। दाऊद के लोग पलिश्तियों
से लड़े। दाऊद के लोगों ने पलिश्तियों को हराया और
उनकी गायें ले लीं। इस प्रकार दाऊद ने कीला के लोगों
को बचाया। 6(जब एब्यातार दाऊद के पास भाग कर
गया था तब एब्यातार अपने साथ एक एपोद ले गया
था।)
7लोगों ने शाऊल से कहा कि अब दाऊद कीला में
है। शाऊल ने कहा, "परमेश्वर ने दाऊद को मुझे दे
दिया है। दाऊद स्वयं जाल में फँस गया है। वह ऐसे नगर
में गया है जिसके द्वार को बन्द करने के लिये दरवाजे
और छड़ें हैं।" 8शाऊल ने युद्ध के लिये अपनी सारी
सेना को एक साथ बुलाया। उन्होंने अपनी तैयारी कीला
जाने और दाऊद तथा उसके लोगों पर आक्रमण के
लिये की। 9दाऊद को पता लगा कि शाऊल उसके
विरुद्ध योजना बना रहा है। दाऊद ने तब याजक एब्यातार
से कहा, "एपोद लाओ।"
10दाऊद ने प्रार्थना की, "यहोवा इस्राएल के परमेश्वर,
मैंने सुना है कि शाऊल कीला में आने और मेरे कारण

इसे नष्ट करने की योजना बना रहा है। 11क्या शाऊल
कीला में आएगा? क्या कीला के लोग मुझे शाऊल को
दे देंगे? यहोवा इस्राएल के परमेश्वर, मैं तेरा सेवक हूँ!
कृपया मुझे बता!" यहोवा ने उत्तर दिया, "शाऊल आएगा।"
12दाऊद ने फिर पूछा, "क्या कीला के लोग मुझे
और मेरे लोगों को शाऊल को दे देंगे।"
यहोवा ने उत्तर दिया, "वे ऐसा करेंगे।"
13इसलिये दाऊद और उसके लोगों ने कीला को छोड़
दिया। वहाँ लगभग छ: सौ पुरुष थे जो दाऊद के साथ
गए। दाऊद और उसके लोग एक स्थान से दूसरे स्थान
घूमते रहे। शाऊल को पता लग गया कि दाऊद कीला
से बच निकला। इसलिए शाऊल उस नगर को नहीं
गया।

शाऊल दाऊद का पीछा करता है

14दाऊद मरुभूमि में चला गया और वहाँ किलों* में
ठहर गया। दाऊद जीप की मरुभूमि के पहाड़ी देश में
भी गया। शाऊल प्रतिदिन दाऊद की खोज करता था,
किन्तु यहोवा शाऊल को दाऊद को पकड़ने नहीं देता
था।
15दाऊद जीप की मरुभूमि में होरेश में था। वह
भयभीत था क्योंकि शाऊल उसे मारने आ रहा था।
16किन्तु शाऊल का पुत्र योनातान होरेश में दाऊद से
मिलने गया। योनातान ने परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास
रखने में दाऊद की सहायता की। 17 योनातान ने दाऊद
से कहा, "डरो नहीं। मेरे पिता शाऊल तुम्हें चोट नहीं
पहुँचा सकते। तुम इस्राएल के राजा बनोगे। मैं तुम्हारे
बाद दूसरे स्थान पर रहूँगा। मेरे पिता भी यह जानते हैं।"
18योनातान और दाऊद दोनों ने यहोवा के सामने
सन्धि की। तब योनातान घर चला गया और दाऊद
होरेश में टिका रहा।

जीप के लोग शाऊल को दाऊद के बारे में बताते हैं

19जीप के लोग गिबा में शाऊल के पास आए। उन्होंने
शाऊल से कहा, "दाऊद हम लोगों के क्षेत्र में छिपा है।
वह होरेश के किले में है। वह हकीला पहाड़ी पर
यशीमोन के दक्षिण में है। 20महाराज आप जब चाहें
आएं। यह हम लोगों का कर्तव्य है कि हम आपको
दाऊद को दें।"
21शाऊल ने उत्तर दिया, "यहोवा आप लोगों को मेरी
सहायता के लिये आशीर्वाद दे। 22जाओ और उसके बारे
में और अधिक पता लगाओ। पता लगाओ कि दाऊद
कहाँ ठहरा है। पता लगाओ कि दाऊद को वहाँ किसने
देखा है। शाऊल ने सोचा, 'दाऊद चतुर है। वह मुझे

किला कोई भवन या नगर जिसकी दीवारें सुरक्षा के लिये ऊँची और मजबूत हों।

धोखा देने की कोशिश कर रहा है।' 23छिपने के जिन
स्थानों का उपयोग दाऊद कर रहा है, उन सभी को
पता लगाओ और मेरे पास वापस लौटो तथा मुझे सब
कुछ बताओ। तब मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। यदि दाऊद
उस क्षेत्र में होगा तो मैं उसका पता लगाऊँगा। मैं उसका
पता तब भी लगा लूँगा यदि मुझे यहूदा के सभी परिवारों
की तलाशी लेनी पड़े।"
24तब जीपी निवासी जीप को लौट गए। शाऊल वहाँ
बाद में गया। दाऊद और उसके लोग माओन की मरुभूमि
में थे। वे यशीमोन के दक्षिण में मरुभूमि क्षेत्र में थे।
25शाऊल और उसके लोग दाऊद की खोज करने गये।
किन्तु लोगों ने दाऊद को सावधान कर दिया। उन्होंने
बताया कि शाऊल उसकी तलाश कर रहा है। दाऊद
तब माओन की मरुभूमि में नीचे की ओर चट्टान पर
गया। शाऊल ने सुना कि दाऊद माओन की मरुभूमि में
गया है। इसलिये शाऊल उस स्थान पर दाऊद को
पकड़ने गया।
26शाऊल पर्वत की एक ओर था। दाऊद और उसके
लोग उसी पर्वत की दूसरी ओर थे। दाऊद शाऊल से
दूर निकल जाने के लिये शीघ्रता कर रहा था। शाऊल
और उसके सैनिक पर्वत के चारों ओर दाऊद और
उसके लोगों को पकड़ने जा रहे थे। 27तभी शाऊल के
पास एक दूत आया। दूत ने कहा, "शीघ्रता करो!
पलिश्ती हम पर आक्रमण कर रहें हैं!"
28इसलिये शाऊल ने दाऊद का पीछा करना छोड़
दिया और पलिश्तियों से लड़ने निकल गया। यही
कारण है कि लोग उस स्थान को "फिसलनी चट्टान'*'
कहते हैं। 29दाऊद ने माओन की मरुभूमि को छोड़ा
और एनगदी के समीप के किले में गया।

दाऊद शाऊल को लज्जित करता है

24 जब शाऊल ने पलिश्तियों को पीछा करके
भगा दिया तब लोगों ने शाऊल से कहा, "दाऊद
एनगदी के पास के मरुभूमि क्षेत्र में है। "
2इसलिये शाऊल ने पूरे इस्राएल में से तीन हजार
लोगों को चुना। शाऊल ने इन व्यक्तियों को साथ लिया
और दाऊद तथा उसके लोगों की खोज आरम्भ की।
उन्होंने "जंगली बकरियों की चट्टान" के समीप खोजा।
3शाऊल सड़क के किनारे भेड़ों के बाड़े के समीप
आया। वहाँ समीप ही एक गुफा थी। शाऊल स्वयं गुफा
में शौच करने गया। दाऊद और उसके लोग बहुत पीछे
उस गुफा में छिपे थे। 4लोगों ने दाऊद से कहा, "आज
वह दिन है जिसके विषय में यहोवा ने बातें की थीं।
यहोवा ने तुमसे कहा था, 'मैं तुम्हारे शत्रु को तुम्हें दूँगा,
तब तुम जो चाहो अपने शत्रु के साथ कर सकोगे।'"

फिसलनी चट्टान या "सेला-हम्महलकोत।"

तब दाऊद रेंगकर शाऊल के पास आया। दाऊद ने
शाऊल के लबादे का एक कोना काट लिया। शाऊल
ने दाऊद को नहीं देखा। 5बाद में, दाऊद को शाऊल के
लबादे के एक कोने के काटने का अफसोस हुआ।
6दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "यहोवा मुझे अपने
स्वामी के साथ कुछ भी ऐसा करने से रोके। शाऊल
यहोवा का चुना हुआ राजा है। मुझे शाऊल के विरुद्ध
कुछ नहीं करना चाहिए वह यहोवा का चुना हुआ राजा
है।" 7दाऊद ने ये बातें अपने लोगों को रोकने के लिये
कहीं। दाऊद ने अपने लोगों को शाऊल पर आक्रमण
करने नहीं दिया।

शाऊल ने गुफा छोड़ी और अपने मार्ग पर चल पड़ा।
8दाऊद गुफा से निकला। दाऊद ने शाऊल को जोर से
पुकारा, "मेरे प्रभु महाराज!"

शाऊल ने पीछे मुड़ कर देखा। दाऊद ने अपना सिर
भूमि पर रखकर प्रणाम किया। 9दाऊद ने शाऊल से
कहा, "आप क्यों सुनते हैं जब लोग यह कहते हैं,
'दाऊद आप पर चोट करने की योजना बना रहा है?'
10मैं आपको चोट पहुँचाना नहीं चाहता! आप इसे अपनी
आँखों से देख सकते हैं! यहोवा ने आज आपको गुफा में
मेरे हाथों में दे दिया था। किन्तु मैंने आपको मार डालने
से इन्कार किया। मैंने आप पर दया की। मैंने कहा, 'मैं
अपने स्वामी को चोट नहीं पहुँचाऊँगा। शाऊल यहोवा
का चुना हुआ राजा है!' 11मेरे हाथ में इस कपड़े के
टुकड़े को देखें। मैंने आपके लबादे का टुकड़ा काट
लिया। मैं आपको मार सकता था, किन्तु मैंने यह नहीं
किया। अब मैं चाहता हूँ कि आप इसे समझें। मैं चाहता
हूँ कि आप यह समझें कि मैं आपके विरुद्ध कोई
योजना नहीं बना रहा हूँ। मैंने आपका कोई बुरा नहीं
किया। किन्तु आप मेरा पीछा कर रहे हैं और मुझे
मार डालना चाहते हैं। 12यहोवा को न्याय करने दो।
यहोवा आपको उस अन्याय के लिये दण्ड देगा जो
आपने मेरे साथ किया। किन्तु मैं अपने आप आपसे
युद्ध नहीं करूँगा। 13पुरानी कहावत है: 'बुरी चीजें बुरे
लोगों से आती हैं।'

"मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है! मैं बुरा व्यक्ति नहीं
हूँ। अत: मैं आप पर चोट नहीं करूँगा। 14आप किसका
पीछा कर रहे हैं? इस्राएल का राजा किसके विरुद्ध
लड़ने आ रहा है? आप ऐसे किसी का पीछा नहीं कर
रहे हैं जो आपको चोट पहुँचाएगा। यह ऐसा ही है जैसे
आप एक मृत कुत्ते या मच्छर का पीछा कर रहे हैं।
15यहोवा को न्याय करने दो। उसको मेरे और अपने
बीच निर्णय देने दो। यहोवा मेरा समर्थन करेगा और
दिखायेगा कि मैं सच्चाई पर हूँ। यहोवा आपसे मेरी रक्षा
करेगा।"

16दाऊद ने अपना यह कथन समाप्त किया और
शाऊल ने पूछा, "मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी
आवाज है?" तब शाऊल रोने लगा। शाऊल बहुत रोया।
17शाऊल ने कहा, "तुम सही हो और मैं गलती पर हूँ।
तुम हमारे प्रति अच्छे रहे। किन्तु मैं तुम्हारे प्रति बुरा
रहा। 18तुमने उन अच्छी बातों को बताया जिन्हें तुमने
मेरे प्रति किया। यहोवा मुझे तुम्हारे पास लाया, किन्तु
तुमने मुझे नहीं मार डाला। 19यदि कोई अपने शत्रु को
पकड़ता है तो वह उसे बच निकलने नहीं देता। वह
अपने शत्रु के लिये अच्छे काम नहीं करता। यहोवा
तुमको इसका पुरस्कार दे क्योंकि तुम आज मेरे प्रति
अच्छे रहे। 20मैं जानता हूँ कि तुम नये राजा होगे। तुम
इस्राएल के राज्य पर शासन करोगे। 21अब मुझसे एक
प्रतिज्ञा करो। यहोवा का नाम लेकर यह प्रतिज्ञा करो
कि तुम मेरे वंशजों को मारोगे नहीं। प्रतिज्ञा करो कि
तुम मेरे पिता के परिवार से मेरा नाम मिटाओगे नहीं।"

22इसलिये दाऊद ने शाऊल से प्रतिज्ञा की। दाऊद ने
प्रतिज्ञा की कि वह शाऊल के परिवार को नहीं मारेगा।
तब शाऊल लौट गया। दाऊद और उसके लोग किले
में चले गये।

दाऊद और नाबाल

25 शमूएल मर गया। इस्राएल के सभी लोग इकट्ठे
हुए और उन्होंने शमूएल की मृत्यु पर शोक
प्रकट किया। उन्होंने शमूएल को उसके घर रामा में
दफनाया। तब दाऊद पारान की मरुभूमि में चला गया।
2एक व्यक्ति था जो माओन में रहता था। वह व्यक्ति
बहुत सम्पन्न था। उसके पास तीन हजार भेड़ें और एक
हजार बकरियाँ थीं। वह कर्मेल में अपने धंधे की
देखभाल करता था। वह कर्मेल में अपनी भेड़ों की ऊन
काटता था। 3उस व्यक्ति का नाम नाबाल था। उसकी
पत्नी का नाम अबीगैल था। अबीगैल बुद्धिमती और
सुन्दर स्त्री थी। किन्तु नाबाल क्रूर और नीच था।
नाबाल कालेब के परिवार से था।

4दाऊद मरुभूमि में था और उसने सुना कि नाबाल
अपनी भेड़ों की ऊन काट रहा है। 5इसलिये दाऊद ने
दस युवकों को नाबाल से बातें करने के लिये भेजा।
दाऊद ने कहा, "कर्मेल जाओ। नाबाल से मिलो और
उसको मेरी ओर से 'नमस्ते' कहो।' 6दाऊद ने उन्हें
नाबाल के लिये यह सन्देश दिया, "मुझे आशा है कि
तुम और तुम्हारा परिवार सुखी है। मैं आशा करता हूँ
कि जो कुछ तुम्हारा है, ठीक-ठाक है। 7मैंने सुना है
कि तुम अपनी भेड़ों से ऊन काट रहे हो। तुम्हारे
गड़रिये कुछ समय तक हम लोगों के साथ रहे थे और
हम लोगों ने उन्हें कोई कष्ट नहीं दिया। जब तक
तुम्हारे गड़रिये कर्मेल में रहे हमने उनसे कुछ भी नहीं
लिया। 8अपने सेवकों से पूछो और वे बता देंगे कि यह
सब सच है। कृपया मेरे युवकों पर दया करो। इस
प्रसन्नता के अवसर पर हम तुम्हारे पास पहुँच रहे हैं।

कृपया इन युवकों को तुम जो कुछ चाहो, दो। कृपया
यह मेरे लिये, अपने मित्र* दाऊद के लिये करो।”
9दाऊद के व्यक्ति नाबाल के पास गए। उन्होंने दाऊद
का सन्देश नाबाल को दिया। 10किन्तु नाबाल उनके
प्रति नीचता से पेश आया। नाबाल ने कहा, “दाऊद है
कौन? यह यिशै का पुत्र कौन होता है? इन दिनों बहुत
से दास हैं जो अपने स्वामियों के यहाँ से भाग गये हैं!
11मेरे पास रोटी और पानी है और मेरे पास वह माँस भी
है जिसे मैंने भेड़ों से ऊन काटने वाले सेवकों के लिये
मारा है। किन्तु मैं उसे उन व्यक्तियों को नहीं दे सकता
जिन्हें मैं जानता भी नहीं!”
12दाऊद के व्यक्ति लौट गये और नाबाल ने जो कुछ
कहा था दाऊद को बता दिया। 13तब दाऊद ने अपने
लोगों से कहा, “अपनी तलवार उठाओ!” अत: दाऊद
और उसके लोगों ने तलवारें कस ली। लगभग चार सौ
व्यक्ति दाऊद के साथ गये और दो सौ व्यक्ति साज़ो
सामान के साथ रुके रहे।

अबीगैल आपत्ति को टालती है

14नाबाल के सेवकों में से एक ने नाबाल की पत्नी
अबीगैल से बातें कीं। सेवक ने कहा, “दाऊद ने मरुभूमि
से अपने दूतों को हमारे स्वामी (नाबाल) के पास भेजा।
किन्तु नाबाल दाऊद के दूतों के साथ नीचता से पेश
आया। 15ये लोग हम लोगों के प्रति बहुत अच्छे थे। हम
लोग भेड़ों के साथ मैदानों में जाते थे। दाऊद के लोग
हमारे साथ लगातार रहे और उन्होंने हमारे साथ कुछ
भी बुरा नहीं किया। उन्होंने पूरे समय हमारा कुछ भी
नहीं चुराया। 16 दाऊद के लोगों ने दिन रात हमारी रक्षा
की। वे हम लोगों के लिये रक्षक चहारदीवारी की तरह
थे, उन्होंने हमारी रक्षा तब की जब हम भेड़ों की
रखवाली करते हुए उनके साथ थे। 17अब इस विषय में
सोचो और निर्णय करो कि तुम क्या कर सकती हो।
नाबाल ने जो कुछ कहा वह मूर्खतापूर्ण था। हमारे
स्वामी (नाबाल) और उनके सारे परिवार के लिये
भयंकर आपत्ति आ रही है।”
18अबीगैल ने शीघ्रता की और दो सौ रोटियाँ, दाखमधु
की दो भरी मशकें, पाँच पकी भेड़ें, लगभग एक बुशल
पका अन्न, दो क्वार्ट मुनक्के और दो सौ सूखे अंजीर
की टिकिया लीं। उसने उन्हें गधों पर लादा। 19तब
अबीगैल ने अपने सेवकों से कहा, “आगे चलते रहो मैं
तुम्हारे पीछे आ रही हूँ।” किन्तु उसने अपने पति से
कुछ न कहा।
20अबीगैल अपने गधे पर बैठी और पर्वत की दूसरी
ओर पहुँची। वह दूसरी ओर से आते हुए दाऊद और
उसके आदमियों से मिली।

21अबीगैल से मिलने के पहले दाऊद कह रहा था,
“मैंने नाबाल की सम्पत्ति की रक्षा मरुभूमि में की। मैंने
यह व्यवस्था की कि उसकी कोई भेड़ खोए नहीं। मैंने
यह सब कुछ बिना लिये किया। मैंने उसके लिये अच्छा
किया। किन्तु मेरे प्रति वह बुरा रहा। 22परमेश्वर मुझे
दण्डित करे यदि मैं नाबाल के परिवार के किसी व्यक्ति
को कल सवेरे तक जीवित रहने दूँ।”
23किन्तु जब अबीगैल ने दाऊद को देखा वह शीघ्रता
से अपने गधे पर से उतर पड़ी। वह दाऊद के सामने
प्रणाम करने को झुकी। उसने अपना माथा धरती पर
टिकाया। 24अबीगैल दाऊद के चरणों पर पड़ गई। उसने
कहा, “मान्यवर, कृपा कर मुझे कुछ कहने दें। जो मैं
कहूँ उसे सुनें। जो कुछ हुआ उसके लिये मुझे दोष दें।
25मैंने उन व्यक्तियों को नहीं देखा जिन्हें आपने भेजा।
मान्यवर, उस नालायक आदमी (नाबाल) पर ध्यान न
दें। वह ठीक वही है जैसा उसका नाम है। उसके नाम
का अर्थ ‘मूर्ख’ है और वह सचमुच मूर्ख ही है। 26यहोवा
ने आपको निरपराध व्यक्तियों को मारने से रोका है।
यहोवा शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसकी शपथ
खाकर मैं आशा करती हूँ कि आपके शत्रु और जो
आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं, वे नाबाल की स्थिति
में होंगे। 27अब, मैं आपको यह भेंट लाई हूँ। कृपया इन
चीज़ों को उन लोगों को दें जो आपका अनुसरण करते
हैं।
28अपराध करने के लिये मुझे क्षमा करें। मैं जानती
हूँ कि यहोवा आपके परिवार को शक्तिशाली बनायेगा,
आपके परिवार से अनेक राजा होंगे। यहोवा यह करेगा
क्योंकि आप उसके लिये युद्ध लड़ते हैं। लोग तब आप
में कभी बुराई नहीं पाएंगे जब तक आप जीवित रहेंगे।
29यदि कोई व्यक्ति आपको मार डालने के लिये आपका
पीछा करता है तो यहोवा आपका परमेश्वर आपके
जीवन की रक्षा करेगा। किन्तु यहोवा आपके शत्रुओं
के जीवन को ऐसे दूर फेंकेगा जैसे गुलेल से पत्थर
फेंका जाता है।
30“यहोवा ने आपके लिये बहुत सी अच्छी चीजों को
करने का वचन दिया है और यहोवा अपने सभी वचनों
को पूरा करेगा। परमेश्वर आपको इस्राएल का शासक
बनाएगा। 31और आप इस जाल में नहीं फँसेंगें। आप
बुरा काम करने के अपराधी नहीं होंगे। आप निरपराध
लोगों को मारने का अपराध नहीं करेंगे। कृपया मुझे
उस समय याद रखें जब यहोवा आपको सफलता प्रदान
करे।”
32दाऊद ने अबीगैल को उत्तर दिया, “इस्राएल के
परमेश्वर, यहोवा की स्तुति करो। परमेश्वर ने तुम्हें
मुझसे मिलने भेजा है। 33तुम्हारे अच्छे निर्णय के लिये
परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे। तुमने आज मुझे निरपराध
लोगों को मारने से बचाया। 34निश्चय ही, जैसे इस्राएल

मित्र शाब्दिक “पुत्र।”

का परमेश्वर, यहोवा शाश्वत है, यदि तुम शीघ्रता से
मुझसे मिलने न आई होती तो कल सवेरे तक नाबाल
के परिवार का कोई भी पुरुष जीवित नहीं बच पाता।"
35तब दाऊद ने अबीगैल की भेंट को स्वीकार किया।
दाऊद ने उससे कहा, "शान्ति से घर जाओ। मैंने तुम्हारी
बातें सुनी हैं और मैं वही करूँगा जो तुमने करने को
कहा है।"

नाबाल की मृत्यु

36अबीगैल नाबाल के पास लौटी। नाबाल घर में था।
नाबाल एक राजा की तरह खा रहा था। नाबाल ने छक
कर दाखमधु पी रखी थी और वह प्रसन्न था। इसलिये
अबीगैल ने नाबाल को अगले सवेरे तक कुछ भी नहीं
बताया। 37अगली सुबह नाबाल का नशा उतरा। अत:
उसकी पत्नी ने हर बात बता दी और नाबाल को दिल
का दौरा पड़ गया। वह चट्टान की तरह कड़ा हो गया।
38करीब दस दिन बाद यहोवा ने नाबाल को मर जाने
दिया।
39दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया है। दाऊद ने
कहा, "यहोवा की स्तुति करो! नाबाल ने मेरे विरुद्ध
बुरी बातें कीं, किन्तु यहोवा ने मेरा समर्थन किया।
यहोवा ने मुझे पाप करने से बचाया और यहोवा ने
नाबाल को मर जाने दिया क्योंकि उसने अपराध किया
था।" तब दाऊद ने अबीगैल को एक सन्देश भेजा।
दाऊद ने उसे अपनी पत्नी होने के लिये कहा। 40दाऊद
के सेवक कर्मेल गए और अबीगैल से कहा, "दाऊद ने
हम लोगों को तुम्हें लाने के लिये भेजा है। दाऊद चाहता
है कि तुम उसकी पत्नी बनो।"
41अबीगैल ने धरती तक अपना माथा झुकाया।
उसने कहा, "मैं आपकी दासी हूँ। मैं आपकी सेवा
करने के लिये तैयार हूँ। मैं अपने स्वामी (दाऊद) के
सेवकों के पैरों को धोने को तैयार हूँ।"*
42अबीगैल शीघ्रता से गधे पर बैठी और दाऊद के
दूतों के साथ चल दी। अबीगैल अपने साथ पाँच दासियाँ
ले गई। वह दाऊद की पत्नी बनी।
43दाऊद ने यिज्रेल की अहिनोअम से भी विवाह
किया था। अहिनोअम और अबीगैल दोनों दाऊद की
पत्नियाँ थी। 44शाऊल की पुत्री मीकल भी दाऊद की
पत्नी थी। किन्तु शाऊल ने उसे गल्लीम के निवासी
लैश के पुत्र पलती को दे दिया था।

दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में प्रवेश करते हैं

26 जीप के लोग शाऊल से मिलने गिबा गये।
उन्होंने शाऊल से कहा, "दाऊद हकीला की
पहाड़ी में छिपा है। यह पहाड़ी यशीमोन के उस पार है।"
2शाऊल जीप की मरुभूमि में गया। शाऊल ने पूरे
इस्राएल से अपने द्वारा चुने गए तीन हजार सैनिकों को
लिया। शाऊल और ये लोग जीप की मरुभूमि में दाऊद
को खोज रहे थे। 3शाऊल ने अपना डेरा हकीला की
पहाड़ी पर डाला। डेरा सड़क के किनारे यशीमोन के
पार था। दाऊद मरुभूमि में रह रहा था। दाऊद को
पता लगा कि शाऊल ने उसका वहाँ पीछा किया है।
4तब दाऊद ने अपने जासूसों को भेजा और दाऊद को
पता लगा कि शाऊल हकीला आ गया है। 5तब दाऊद
उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल ने अपना डेरा डाला
था। दाऊद ने देखा कि शाऊल और अब्नेर वहाँ सो
रहे थे। (नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का
सेनापति था।) शाऊल डेरे के बीच सो रहा था। सारी
सेना शाऊल के चारों ओर थी।
6दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक और यरूयाह के पुत्र
अबीशै से बातें की। (अबीशै योआब का भाई था।)
उसने उनसे कहा, "मेरे साथ शाऊल के पास उसके
डेरे में कौन चलेगा?" अबीशै ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे
साथ चलूँगा।"
7रात हुई। दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में गए।
शाऊल डेरे के बीच में सोया हुआ था। उसका भाला
उसके सिर के पास जमीन में गड़ा था। अब्नेर और
दूसरे सैनिक शाऊल के चारों ओर सोए थे। 8अबीशै ने
दाऊद से कहा, "आज परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु को
पराजित करने दिया है। मुझे शाऊल को उसके भाले से
ही जमीन में टाँक देने दो। मैं इसे एक ही बार में कर
दूँगा!"
9किन्तु दाऊद ने अबीशै से कहा, "शाऊल को न
मारो! जो कोई यहोवा के चुने राजा को मारता है वह
अवश्य दण्डित होता है! 10यहोवा शाश्वत है, अत: वह
शाऊल को स्वयं दण्ड देगा। संभव है शाऊल स्वाभाविक
मृत्यु प्राप्त करे या संभव है शाऊल युद्ध में मारा जाये।
11किन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा मुझे अपने चुने
हुए राजा को मुझसे चोट न पहुँचवाये। अब पानी के घड़े
और भाले को उठाओ जो शाऊल के सिर के पास है।
तब हम लोग चलें।"
12इसलिये दाऊद ने भाले और पानी के घड़े को लिया
जो शाऊल के सिर के पास थे। तब दाऊद और अबीशै
ने शाऊल के डेरे को छोड़ दिया। किसी ने यह होते नहीं
देखा। कोई व्यक्ति इसके बारे में न जान सका। कोई भी
व्यक्ति जागा भी नहीं। शाऊल और उसके सैनिक सोते
रहे क्योंकि यहोवा ने उन्हें गहरी नींद में डाल दिया था।

दाऊद शाऊल को फिर लज्जित करता है

13दाऊद दूसरी ओर पार निकल गया। शाऊल के
डेरे से घाटी के पार दाऊद पर्वत की चोटी पर खड़ा था।
दाऊद और शाऊल के डेरे बहुत दूरी पर थे। 14दाऊद

मैं अपने … हूँ यह दिखाता है कि अबीगैल नम्र थी और दासी की तरह रहने की इच्छा रखती थी।

ने सेना को और नेर के पुत्र अब्नेर को जोर से पुकारा,
“अब्नेर मुझे उत्तर दो!” अब्नेर ने पूछा, “तुम कौन
हो? तुम राजा को क्यों बुला रहे हो?”
15दाऊद ने उत्तर दिया, “तुम पुरुष हो। क्यों क्या तुम
नहीं हो? और तुम इस्राएल में किसी भी अन्य व्यक्ति से
बेहतर हो। क्यों यह ठीक है? तब तुमने अपने स्वामी
राजा की रक्षा क्यों नहीं की? एक साधारण व्यक्ति
तुम्हारे डेरे में तुम्हारे स्वामी राजा को मारने आया।
16तुमने भंयकर भूल की। यहोवा शाश्वत है! अत: तुम्हें
और तुम्हारे सैनिकों को मर जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि
तुमने अपने स्वामी यहोवा के चुने राजा की रक्षा नहीं
की। शाऊल के सिर के पास भाले और पानी के घड़े
की खोज करो। वे कहाँ हैं?”
17शाऊल दाऊद की आवाज पहचानता था। शाऊल
ने कहा, “मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी आवाज है?”
दाऊद ने उत्तर दिया, “मेरे स्वामी और राजा, हाँ, यह
मेरी आवाज है।” 18दाऊद ने यह भी पूछा, “महाराज,
आप मेरा पीछा क्यों कर रहे हैं? मैंने कौन सी गलती
की है? मैं क्या करने का अपराधी हूँ ?19मेरे स्वामी
और राजा, मेरी बात सुनें! यदि यहोवा ने आपको मेरे
विरुद्ध क्रोधित किया है तो उन्हें एक भेंट स्वीकार
करने दें। किन्तु यदि लोगों ने मेरे विरुद्ध आपको क्रोधित
किया है तो यहोवा द्वारा उनके लिए कुछ बुरी आपत्ति
आने दें। लोगों ने मुझे इस देश को छोड़ने पर विवश
किया, जिसे यहोवा ने मुझे दिया है। लोगों ने मुझसे
कहा, ‘जाओ विदेशियों के साथ रहो। जाओ अन्य देवताओं
की पूजा करो।’ 20मुझे अब यहोवा की उपस्थिति से दूर
न मरने दो। इस्राएल का राजा एक मच्छर की खोज में
निकला है। आप उस व्यक्ति की तरह हैं जो पहाड़ों में
तीतर का शिकार करने निकलाहो।”*
21तब शाऊल ने कहा, “मैंने पाप किया है। मेरे पुत्र
दाऊद लौट आओ। आज तुमने दिखा दिया कि मेरा
जीवन तुम्हारे लिये महत्व रखता है। इसलिये मैं तुम्हें
चोट पहुँचाने का प्रयत्न नहीं करूँगा। मैंने मूर्खतापूर्ण
काम किया है। मैंने एक भंयकर भूल की है।”
22दाऊद ने उत्तर दिया, “राजा का भाला यह है।
अपने किसी युवक को यहाँ आने दो और वह ले जाए।
23यहोवा मनुष्यों के कर्म का फल देता है,यदि वह
अच्छा करता है तो उसे पुरस्कार देता है, और वह उसे
दण्ड देता है जो बुरा करता है। यहोवा ने आज मुझे
आपको पराजित करने दिया, किन्तु मैं यहोवा के चुने
हुए राजा पर चोट नहीं करूँगा। 24आज मैंने आपको
दिखा दिया कि आपका जीवन मेरे लिये महत्वपूर्ण है।
इसी प्रकार यहोवा दिखायेगा कि मेरा जीवन उसके
लिये महत्वपूर्ण है। यहोवा मेरी रक्षा हर एक आपत्ति से
करेगा।”
25शाऊल ने दाऊद से कहा, “मेरे पुत्र दाऊद, परमेश्वर
तुम्हें आशीर्वाद दे। तुम महान कार्य करोगे और सफल
होओगे।” दाऊद अपनी राह गया, और शाऊल घर लौट
गया।

दाऊद पलिश्तियों के साथ रहता है:

27 किन्तु दाऊद ने अपने मन में सोचा, “शाऊल
मुझे किसी दिन पकड़ लेगा। सर्वोत्तम बात मैं
यही कर सकता हूँ कि पलिश्तियों के देश में बच
निकलूँ। तब शाऊल मेरी खोज इस्राएल में बन्द कर
देगा। इस प्रकार मैं शाऊल से बच निकलूँगा।”
2इसलिए दाऊद और उसके छ: सौ लोगों ने इस्राएल
छोड़ दिया। वे माओक के पुत्र आकीश के पास गए।
आकीश गत का राजा था। 3दाऊद, उसके लोग और
उनके परिवार आकीश के साथ गत में रहने लगे।
दाऊद के साथ उसकी दो पत्नियाँ थीं। वे यिज्रेली की
अहीनोअम और कर्मेल की अबीगैल थी। अबीगैल नाबाल
की विधवा थी। 4लोगों ने शाऊल से कहा कि दाऊद
गत को भाग गया है और शाऊल ने उसकी खोज बन्द
कर दी।
5दाऊद ने आकीश से कहा, “यदि आप मुझ पर
प्रसन्न हैं तो मुझे अपने देश के नगरों में से एक में
स्थान दे दें। मैं आपका केवल सेवक मात्र हूँ। मुझे वहाँ
रहना चाहिये, आपके साथ यहाँ राजधानी नगर में
नहीं।”
6उस दिन आकीश ने दाऊद को सिकलग नगर दिया
और तब से सिकलग सदा यहूदा के राजाओं का रहा है।
7दाऊद पलिश्तियों के साथ एक वर्ष और चार महीने
रहा।

दाऊद का आकीश राजा को बहकाना

8दाऊद और उसके लोग अमालेकी तथा गशूर में
रहने वाले लोगों के साथ युद्ध करने गये। दाऊद के
लोगों ने उनको हराया और उनकी सम्पत्ति ले ली। लोग
उस क्षेत्र में शूर के निकट तेलम से लेकर लगातार
मिस्र तक रहते थे। 9दाऊद उस क्षेत्र में लोगों से लड़ा।
दाऊद ने किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा। दाऊद ने
उनकी सभी भेड़ें, पशु, गधे, ऊँट और कपड़े लिये। तब
वह इसे वापस आकीश के पास लाया।
10दाऊद ने यह कई बार किया। हर बार आकीश
पूछता कि वह कहाँ लड़ा और उन चीज़ों को कहाँ से
लाया। दाऊद ने कहा, “मैं यहूदा के दक्षिणी भाग में
लड़ा।” या “मैं यरहमेलियों के दक्षिणी भाग में लड़ा या

आप ... निकला हो जब लोग तीतर का शिकार पहाड़ों में करते थे तो वे उनका पीछा इतना करते थे कि पक्षी इतने थक जाते थे कि भाग न सकें। तब वे पक्षियों को मारते थे। शाऊल दाऊद का पीछा वैसे ही कर रहा था। यह श्लेष भी है। हिब्रू शब्द तीतर के लिये उस शब्द की तरह है जिसका अर्थ पद 14 में ‘बुलाना’ है।

मैं केनियों के दक्षिणी भाग में लड़ा।"* 11दाऊद गत में कभी जीवित स्त्री या पुरुष नहीं लाया। दाऊद ने सोचा, "यदि हम किसी व्यक्ति को जीवित रहने देते हैं तो वह आकीश से कह सकता है कि वस्तुत: मैंने क्या किया है।" दाऊद ने पूरे समय, जब तक पलिश्तियों के देश में रहा, यही किया। 12आकीश ने दाऊद पर विश्वास करना आरम्भ कर दिया। आकीश ने अपने आप सोचा, "अब दाऊद के अपने लोग ही उससे घृणा करते हैं। इस्राएली दाऊद से बहुत अधिक घृणा करते हैं। अब दाऊद मेरी सेवा करता रहेगा।"

पलिश्ती युद्ध की तैयारी करते हैं:

28 बाद में पलिश्तियों ने अपनी सेना को इस्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिये इकट्ठा किया। आकीश ने दाऊद से कहा, "क्या तुम समझते हो कि तुम्हें और तुम्हारे व्यक्तियों को इस्राएलियों के विरुद्ध मेरे साथ लड़ने जाना चाहिये?"

2दाऊद ने उत्तर दिया, "निश्चय ही! तब आप स्वयं ही देखें कि मैं क्या कर सकता हूँ!"

आकीश ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं तुम्हें अपना अंगरक्षक बनाऊँगा। तुम सदा मेरी रक्षा करोगे।"

शाऊल और स्त्री एन्दोर में

3शमूएल मर गया था। सभी इस्राएलियों ने शमूएल की मृत्यु पर शोक मनाया था। उन्होंने शमूएल के निवास स्थान रामा में उसे दफनाया था। इसके पहले शाऊल ने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इस्राएल छोड़ने को विवश किया था।

4पलिश्तियों ने युद्ध की तैयारी की। वे शूनेम आए और उस स्थान पर उन्होंने अपना डेरा डाला। शाऊल ने सभी इस्राएलियों को इकट्ठा किया और अपना डेरा गिलबो में डाला। 5शाऊल ने पलिश्ती सेना को देखा और वह भयभीत हो गया। उसका हृदय भय से धड़कने लगा। 6शाऊल ने यहोवा से प्रार्थना की, किन्तु यहोवा ने उसे उत्तर नहीं दिया। परमेश्वर ने शाऊल से स्वप्न में बातें नहीं की। परमेश्वर ने उसे उत्तर देने के लिये ऊरीम का उपयोग भी नहीं किया और परमेश्वर ने शाऊल से बात करने के लिये भविष्यवक्ताओं का उपयोग नहीं किया। 7अन्त में शाऊल ने अपने अधिकारियों से कहा, "मेरे लिये ऐसी स्त्री का पता लगाओ जो ओझा हो। तब मैं उससे पूछने जा सकता हूँ कि इस युद्ध में क्या होगा।"

उसके अधिकारियों ने उत्तर दिया, "एन्दोर में एक ओझा है।"

8शाऊल ने भिन्न प्रकार के वस्त्र पहने। शाऊल ने यह इसलिये किया कि कोई व्यक्ति यह न जान सके कि वह कौन है। रात को वह अपने दो व्यक्तियों के साथ उस स्त्री से मिलने गया। शाऊल ने उस स्त्री से कहा, "प्रेत के द्वारा मुझे मेरा भविष्य बताओ। उस व्यक्ति को बुलाओ जिसका मैं नाम लूँ।"

9किन्तु उस स्त्री ने शाऊल से कहा, "तुम जानते ही हो कि शाऊल ने क्या किया है! उसने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इस्राएल देश को छोड़ने को विवश किया है। तुम मुझे जाल में फँसाना और मार डालना चाहते हो।"

10शाऊल ने यहोवा का नाम लिया और उस स्त्री से प्रतिज्ञा की, "निश्चय ही यहोवा शाश्वत है, अत: तुमको यह करने के लिये दण्ड नहीं मिलेगा।"

11स्त्री ने पूछा, "तुम किसे चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहाँ बुलाऊँ?" शाऊल ने उत्तर दिया, "शमूएल को बुलाओ"

12और यह हुआ! स्त्री ने शमूएल को देखा और जोर से चीख उठी। उसने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया! तुम शाऊल हो!"

13राजा ने स्त्री से कहा, "तुम डरो नहीं! तुम क्या देख रही हो?" उस स्त्री ने कहा, "मैं एक आत्मा को जमीन* से निकल कर आती देख रही हूँ।"

14शाऊल ने पूछा, "वह कैसा दिखाई पड़ता है?" स्त्री ने उत्तर दिया, "वह लबादा पहने एक बूढ़े की तरह दिखाई पड़ता है।"

शाऊल ने समझ लिया कि वह शमूएल था। शाऊल ने प्रणाम किया। उसका माथा जमीन से जा लगा। 15शमूएल ने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे क्यों परेशान किया? तुमने मुझे ऊपर क्यों बुलाया?"

शाऊल ने उत्तर दिया, "मैं मुसीबत में हूँ! पलिश्ती मेरे विरुद्ध लड़ने आए हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है। परमेश्वर अब मुझको उत्तर नहीं देगा। वह मुझे उत्तर देने के लिये नबी या स्वप्न का उपयोग नहीं करेगा। यही कारण है कि मैंने तुमको बुलाया। मैं चाहता हूँ कि तुम बताओ कि मैं क्या करूँ!"

16शमूएल ने कहा, "यहोवा ने तुमको छोड़ दिया। अब वह तुम्हारे पड़ोसी (दाऊद) के साथ है। इसलिये तुम मुझको तंग क्यों करते हो? 17यहोवा ने वही किया जो उसने करने को कहा था। उसने मेरा उपयोग तुम्हें इन चीजों को बताने के लिये किया। यहोवा तुम से राज्य छीन रहा है और उसने वह तुम्हारा राज्य तुम्हारे पड़ोसियों को दे रहा है। वह पड़ोसी दाऊद है। 18तुमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने अमालेकियों को नष्ट नहीं किया और उन्हें नहीं दिखाया कि यहोवा

मैं यहूदा … में लड़ा ये सभी स्थान इस्राएल के हैं। दाऊद आकीश को यह विश्वास दिलाता था कि वह अपने ही लोगों इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ रहा है।

जमीन या "मृत्यु का स्थान शेओल।"

उन पर कितना क्रोधित है। यही कारण है कि यहोवा
ने तुम्हारे साथ आज यह किया है। 19यहोवा तुम्हें और
इस्राएल को, पलिश्तियों को देगा। यहोवा इस्राएल की
सेना को पलिश्तियों से पराजित करायेगा और कल तुम
और तुम्हारे पुत्र यहाँ मेरे साथ होंगे!"

20शाऊल तेजी से भूमि पर गिर पड़ा और वहाँ पड़ा
रहा। शाऊल, शमूएल द्वारा कही गई बातों से डरा हुआ
था। शाऊल बहुत कमजोर भी था क्योंकि उसने उस
पूरे दिन रात भोजन नहीं किया था।

21स्त्री शाऊल के पास आई। उसने देखा कि शाऊल
सचमुच भयभीत था। उसने कहा, "देखो, मैं आपकी
दासी हूँ। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। मैंने
अपने जीवन को ख़तरे में डाला और जो आपने कहा,
किया। 22अब कृपया मेरी सुनें। मुझे आपको कुछ भोजन
देने दें। आपको अवश्य खाना चाहिये। तब आप में
इतनी शक्ति आयेगी कि आप अपने रास्ते जा सकें।"

23लेकिन शाऊल ने इन्कार किया। उसने कहा, "मैं
खाऊँगा नहीं।"

शाऊल के अधिकारियों ने उस स्त्री का साथ दिया
और उससे खाने के लिये प्रार्थना की। शाऊल ने
उनकी बात सुनीं। वह भूमि से उठा और बिस्तर पर
बैठ गया। 24उस स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा था।
उसने शीघ्रता से बछड़े को मारा। उसने कुछ आटा
लिया और उसे अपने हाथों से गूँदा। तब उसने बिना
खमीर की कुछ रोटियाँ बनाई। 25स्त्री ने भोजन शाऊल
और उसके अधिकारियों के सामने रखा। शाऊल और
उसके अधिकारियों ने खाया। तब वे उसी रात को उठे
और चल पड़े।

"दाऊद हमारे साथ नहीं आ सकता है!"

29 पलिश्तियों ने अपने सभी सैनिकों को आपे में
इकट्ठा किया। इस्राएलियों ने चश्मे के पास
यिज्रेल में डेरा डाला। 2पलिश्ती शासक अपनी सौ एवं
हजार पुरुषों की टुकड़ियों के साथ कदम बढ़ा रहे थे।
दाऊद और उसके लोग आकीश के साथ कदम बढ़ाते
हुए चल रहे थे।

3पलिश्ती अधिकारियों ने पूछा, "ये हिब्रू यहाँ क्या
कर रहे हैं?"

आकीश ने पलिश्ती अधिकारियों से कहा, "यह दाऊद
है। दाऊद शाऊल के अधिकारियों में से एक था।
दाऊद मेरे पास बहुत समय से है। मैं दाऊद में कोई दोष
तब से नहीं देखता जब से इसने शाऊल को छोड़ा और
मेरे पास आया।"

4किन्तु पलिश्ती अधिकारी आकीश पर क्रोधित हुए।
उन्होंने कहा, "दाऊद को वापस भेजो! दाऊद को उस
नगर में वापस जाना चाहिये जिसे तुमने उसको दिया है।
वह हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता। यदि वह
यहाँ है तो हम अपने डेरे में अपने एक शत्रु को रखे हुए
हैं। वह हमारे अपने आदमियों को मार कर अपने राजा
(शाऊल) को प्रसन्न करेगा। 5दाऊद वही व्यक्ति है
जिसके लिये इस गाने में इस्राएली गाते और नाचते हैं:

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा। किन्तु दाऊद
ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

6इसलिये आकीश ने दाऊद को बुलाया। आकीश ने
कहा, "यहोवा शाश्वत है, तुम हमारे भक्त हो। मैं प्रसन्न
होता कि तुम मेरी सेना में सेवा करते। जिस दिन से तुम
मेरे पास आए हो, मैंने तुममें कोई दोष नहीं पाया है।
पलिश्ती शासक भी समझते हैं कि तुम अच्छे व्यक्ति हो
7शान्ति से लौट जाओ। पलिश्ती शासकों के विरुद्ध कुछ
न करो।"

8दाऊद ने पूछा, "मैंने क्या गलती की है? तुमने मेरे
भीतर जब से मैं तुम्हारे पास आया तब से आज तक
कौन सी बुराई देखी? मेरे प्रभु, राजा के शत्रुओं के
विरुद्ध तुम मुझे क्यों नहीं लड़ने देते?"

9आकीश ने उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हें
पसन्द करता हूँ। तुम परमेश्वर के यहाँ से स्वर्गदूत के
समान हो। किन्तु पलिश्ती अधिकारी अब भी कहते हैं,
'दाऊद हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता।'
10सवेरे भोर होते ही तुम और तुम्हारे लोग वापस जायेंगे।
उस नगर को लौट जाओ जिसे मैंने तुम्हें दिया है। उन
पर ध्यान न दो जो बुरी बातें अधिकारी लोग तुम्हारे बारे
में कहते हैं। अत: ज्योंही सूर्य निकले तुम चल पड़ो।"

11इसलिये दाऊद और उसके लोग सवेरे तड़के उठे।
वे पलिश्तियों के देश में लौट गए और पलिश्ती यिज्रेल
को गये।

अमालेकी सिकलग पर आक्रमण करते हैं

30 तीसरे दिन, दाऊद और उसके लोग सिकलग
पहुँच गए। उन्होंने देखा कि अमालेकियों ने
सिकलग पर आक्रमण कर रखा है। अमालेकियों ने
नेगव क्षेत्र पर आक्रमण कर रखा था। उन्होंने सिकलग
पर आक्रमण किया था और नगर को जला दिया था।
2वे सिकलग की स्त्रियों को बन्दी बना कर ले गये थे।
वे जवान और बूढ़े सभी लोगों को ले गए थे। उन्होंने
किसी व्यक्ति को मारा नहीं। वे केवल उनको लेकर
चले गए थे।

3दाऊद और उसके लोग सिकलग आए और उन्होंने
नगर को जलते पाया। उनकी पत्नियाँ, पुत्र और पुत्रियाँ
जा चुके थे। अमालेकी उन्हें ले गए थे। 4दाऊद और
उसकी सेना के अन्य लोग जोर से तब तक रोते रहे जब
तक वे कमजोरी के कारण रोने के लायक नहीं रह
गये। 5अमालेकी दाऊद की दो पत्नियाँ यिज्रेल की

अहीनोअम तथा कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल
को ले गए थे।
6सेना के सभी लोग दुःखी और क्रोधित थे क्योंकि
उनकी पुत्र–पुत्रियाँ बन्दी बना ली गई थीं। वे पुरुष
दाऊद को पत्थरों से मार डालने की बात कर रहे थे।
इससे दाऊद बहुत घबरा गया। किन्तु दाऊद ने अपने
यहोवा परमेश्वर में शक्ति पाई। 7दाऊद ने याजक एब्यातार
से कहा, “एपोद लाओ।”
8तब दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की, “क्या मुझे उन
लोगों का पीछा करना चाहिये जो हमारे परिवारों को ले
गये हैं? क्या मैं उन्हें पकड़ लूँगा।”
यहोवा ने उत्तर दिया, “उनका पीछा करो। तुम उन्हें
पकड़ लोगे। तुम अपने परिवारों को बचा लोगे।”

दाऊद और उसके व्यक्ति मिस्री दासों को पकड़ते हैं

9दाऊद ने अपने छ: सौ व्यक्तियों को साथ लिया और
बसोर की घाटियों में गया। उनमें से कुछ लोग उसी
स्थान पर ठहर गये। 10लगभग दो सौ व्यक्ति ठहर गये
क्योंकि वे अत्याधिक थके और कमजोर होने से जा
नहीं सकते थे। इसलिये दाऊद और चार सौ व्यक्तियों
ने अमालेकी का पीछा किया।
11दाऊद के व्यक्तियों ने एक मिस्री को खेत में देखा।
वे मिस्री को दाऊद के पास ले गये। उन्होंने पीने के लिये
थोड़ा पानी और खाने के लिये भोजन दिया। 12उन्होंने
मिस्री को अंजीर की टिकिया और सूखे अगूंर के दो
गुच्छे दिये। भोजन के बाद वह कुछ स्वस्थ हुआ। उसने
तीन दिन और तीन रात से न कुछ खाया था, न ही
पानी पीया था।
13दाऊद ने मिस्री से पूछा, “तुम्हारा स्वामी कौन है?
तुम कहाँ से आये हो?” मिस्री ने उत्तर दिया, “मैं मिस्री
हूँ। मैं एक अमालेकी का दास हूँ। तीन दिन पहले मैं
बीमार पड़ गया और मेरे स्वामी ने मुझे छोड़ दिया।
14हम लोगों ने नेगव पर आक्रमण किया जहाँ करेती*
रहते हैं। हम लोगों ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण किया
और नेगव क्षेत्र पर भी जहाँ कालेब लोग रहते हैं। हम
लोगों ने सिकलग को भी जलाया।”
15दाऊद ने मिस्री से पूछा, “क्या तुम उन लोगों के
पास हमें पहुँचाओगे जो हमारे परिवारों को ले गए हैं?”
मिस्री ने उत्तर दिया, “तुम परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा
करो कि तुम मुझे न मारोगे, न ही मुझे मेरे स्वामी को
दोगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं उनको पकड़वाने में
तुम्हारी सहायता करूँगा।”

दाऊद अमालेकी को हराता है

16मिस्री ने दाऊद को अमालेकियों के यहाँ पहुँचाया।
वे चारों ओर जमीन पर मदिरा पीते और भोजन करते
हुए पड़े थे। वे पलिश्तियों और यहूदा के प्रदेश से जो
बहुत सी चीजें लाए थे, उसी से उत्सव मना रहे थे।
17दाऊद ने उन्हें हराया और उनको मार डाला। वे
सूरज निकलने के अगले दिन की शाम तक लड़े।
अमालेकियों में से चार सौ युवकों के अतिरिक्त जो
ऊँटों पर चढ़कर भाग निकले, कोई बच न सका।
18दाऊद को अपनी दोनों पत्नियाँ वापस मिल गई।
दाऊद ने वे सभी चीज़ें वापस पाई जिन्हें अमालेकी ले
आए थे। 19कोई चीज नहीं खोई। उन्होंने सभी बच्चे और
बूढ़ों को पा लिया। उन्होंने अपने सभी पुत्रों और पुत्रियों
को प्राप्त किया। उन्हें अपनी कीमती चीज़ें भी मिल
गई। उन्होंने अपनी हर एक चीज वापस पाई जो अमालेकी
ले गए थे। दाऊद हर चीज़ लौटा लाया। 20दाऊद ने सारी
भेड़ें और पशु ले लिये। दाऊद के व्यक्तियों ने इन
जानवरों को आगे चलाया। दाऊद के लोगो ने कहा, “ये
दाऊद के पुरस्कार हैं।”

सभी लोगों का भाग बराबर होगा

21दाऊद वहाँ आया जहाँ दो सौ व्यक्ति बसोर की
घाटियों में ठहरे थे। ये वे व्यक्ति थे जो अत्याधिक थके
और कमजोर थे। अत: दाऊद के साथ नहीं जा सके
थे। वे लोग दाऊद और उन सैनिकों का स्वागत:
करने बाहर आये जो उसके साथ गये थे। बसोर की
घाटियों में ठहरे व्यक्तियों ने दाऊद और उसकी सेना
को बधाई दी जैसे ही वे निकट आए। 22किन्तु जो
टुकड़ी दाऊद के साथ गई थी उसमें कुछ बुरे और
परेशानी उत्पन्न करने वाले व्यक्ति भी थे। उन परेशानी
उत्पन्न करने वालों ने कहा, “ये दो सौ व्यक्ति हम लोगों
के साथ नहीं गये। इसलिये जो चीजें हम लाये हैं उनमें से
कुछ भी हम इन्हें नहीं देंगे। ये व्यक्ति केवल अपनी
पत्नियाँ और बच्चों को ले सकतेहैं।”
23दाऊद ने उत्तर दिया, “नहीं, मेरे भाईयों ऐसा मत
करो! इस विषय में सोचो कि यहोवा ने हमें क्या दिया
है! यहोवा ने हम लोगों को उस शत्रु को पराजित करने
दिया है जिसने हम पर आक्रमण किया। 24जो तुम
कहते हो उसे कोई नहीं सुनेगा। उन व्यक्तियों का
हिस्सा भी, जो वितरण सामग्री के साथ ठहरे, उतना ही
होगा जितना उनका जो युद्ध में गए। सभी का हिस्सा
एक समान होगा।”
25दाऊद ने इसे इस्राएल के लिये आदेश और नियम
बना दिया। यह नियम अब तक लागू है और चला आ
रहा है।
26दाऊद सिकलग में आया। तब उसने उन चीज़ों में
से, जो अमालेकियों से ली थीं, कुछ को अपने मित्रों
यहूदा नगर के प्रमुखों के लिये भेजा। दाऊद ने कहा,
“ये भेंटे आप लोगों के लिए उन चीज़ों में से है जिन्हें हम
लोगों ने यहोवा के शत्रुओं से प्राप्त कीं।”

करेती या “क्रीट के लोग” ये संभवत: पलिश्ती थे।

27दाऊद ने उन चीजों में से जो अमालेकियों से
प्राप्त हुई थीं। कुछ को बेतेल के प्रमुखों, नेगेव के
रामोत, यत्तीर, 28अरोएर, सिपमोत, एश्तमो, 29राकाल,
यरहमेलियों और केनियों के नगरों, 30होर्मा, बोराशान,
अताक, 31और हेब्रोन को भेजा। दाऊद ने उन चीज़ों में
से कुछ को उन सभी स्थानों के प्रमुखों को भेजा जहाँ
दाऊद और उसके लोग रहे थे।

शाऊल की मृत्यु

31 पलिश्ती इस्राएल के विरुद्ध लड़े, और इस्राएली
पलिश्तियों के सामने से भाग खड़े हुए। बहुत
से इस्राएली गिलबो पर्वत पर मारे गये। 2पलिश्ती शाऊल
और उसके पुत्रों से बड़ी वीरता से लड़े। पलिश्तियों ने
शाऊल के पुत्रों योनातान, अबीनादाब और मल्कीश
को मार डाला।

3युद्ध शाऊल के विरुद्ध बहुत बुरा रहा। धनुर्धारियों
ने शाऊल पर बाण बरसाये और शाऊल बुरी तरह
घायल हो गया। 4शाऊल ने अपने उस नौकर से, जो
कवच ले कर चल रहा था, कहा, "अपनी तलवार
निकालो और मुझे मार डालो। तब वे विदेशी मुझे चोट
पहुँचाने और मेरा मजाक उड़ाने नहीं आएंगे।" किन्तु
शाऊल के कवचवाहक ने ऐसा करना अस्वीकार कर
दिया। शाऊल का सहायक बहुत भयभीत था।

इसलिये शाऊल ने अपनी तलवार ली और अपने को
मार डाला। 5कवचवाहक ने देखा कि शाऊल मर गया।
इसलिये उसने भी अपनी तलवार से अपने को मार
डाला। वह वहीं शाऊल के साथ मर गया। 6इस प्रकार
शाऊल, उसके तीन पुत्र और उसका कवचवाहक सभी
एक साथ उस दिन मरे।

पलिश्ती शाऊल की मृत्यु से प्रसन्न हैं

7इस्राएलियों ने जो घाटी की दूसरी ओर रहते थे,
देखा, कि इस्राएली सेना भाग रही थी। उन्होंने देखा कि
शाऊल और उसके पुत्र मर गए हैं। इसलिये उन
इस्राएलियों ने अपने नगर छोड़े और भाग निकले। तब
पलिश्ती आए और उन्होंने उन नगरों को ले लिया।

8अगले दिन, पलिश्ती शवों से चीज़ें लेने आए। उन्होंने
शाऊल और उसके तीनों पुत्रों को गिलबो पर्वत पर मरा
पाया। 9पलिश्तियों ने शाऊल का सिर काट लिया और
उसका कवच ले लिया। वे इस समाचार को पलिश्ती
लोगों और अपनी देवमूर्तियों के पूजास्थल तक ले गये।
10उन्होंने शाऊल के कवच को आश्तोरेत के पूजास्थल
में रखा। पलिश्तियों ने शाऊल का शव बेतशान की
दीवार पर लटका दिया।

11याबेश गिलाद के लोगों ने उन सभी कारनामों को
सुना जो पलिश्तियों ने शाऊल के साथ किये। 12इसलिये
याबेश के सभी सैनिक बेतशान पहुँचे। वे सारी रात
चलते रहे! तब उन्होंने शाऊल के शव को बेतशान की
दीवार से उतारा। उन्होंने शाऊल के पुत्रों के शवों को
भी उतारा। तब वे इन शवों को याबेश ले आए। वहाँ
याबेश के लोगों ने शाऊल और उसके तीनों पुत्रों के
शवों को जलाया। 13तब इन लोगों ने शाऊल और
उसके पुत्रों की अस्थियाँ लीं और याबेश में पेड़ के नीचे
दफनायीं। तब याबेश के लोगों ने शोक मनाया। याबेश
के लोगों ने सात दिन तक खाना नहीं खाया।